जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: बुध

३६२

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि भवन के स्थान में अपनी राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक माता द्वारा बहुत सुख प्राप्त होता है तथा भूमि, मकान आदि की भी प्राप्ति होती है। ऐसे जातक का विनोद के साधन तथा शारीरिक सौंदर्य का भी लाभ है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से गुरु की मीन राशि दशमभाव को देखता है, अत: पिता के स्थान में कुछ उठानी पड़ती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्रों भी कुछ कमी बनी रहती है।
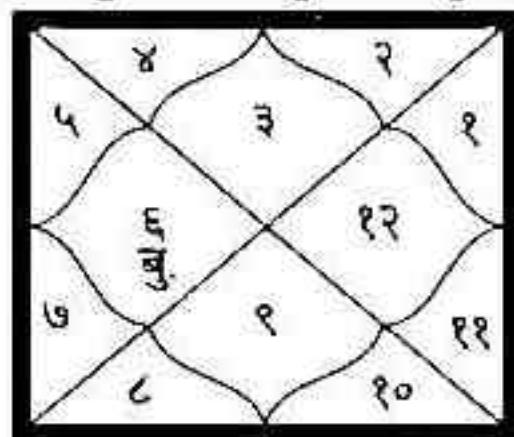
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: बुध

३६३

पांचवे त्रिकोण विद्या, बुद्धि, एवं संतान के भाव में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव जातक को संतान एवं विद्या-बुद्धि का विशेष लाभ प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, गंभीर, चतुर तथा आत्मविश्वासी होता है। सब लोग उसे बहुत योग्य व्यक्ति मानते हैं। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को अपनी शारीरिक एवं बौद्धिक शक्ति द्वारा पर्याप्त लाभ होता है। साथ ही माता, भूमि तथा भवन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक शांतिप्रिय तथा गंभीर स्वभाव का होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: बुध

३६४
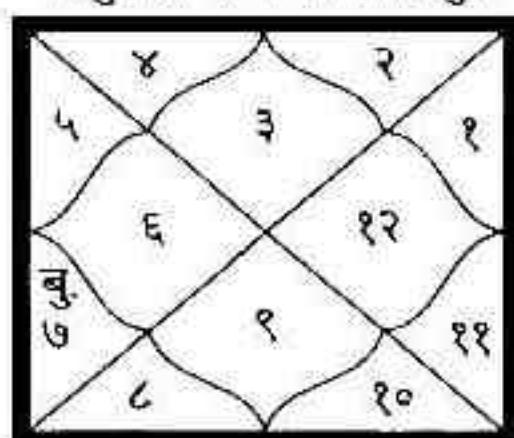
छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में अपनी विवेक-शक्ति द्वारा सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शरीर से खूब परिश्रम करनेवाला होता है। उसे माता के सुख तथा भूमि-भवन आदि के पक्ष में भी कमी रहती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से व्ययभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी संबंध से सुख प्राप्त होता है। उसे मामा से भी सुख मिलता है। झगड़े-झंझटों के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।
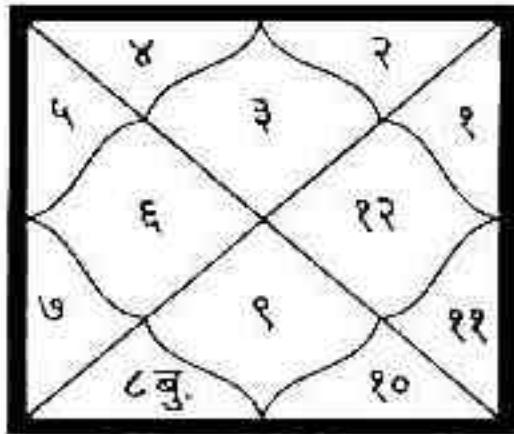
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से श्रेष्ठ सुख एवं स्नेह प्राप्त होता है, तथा दैनिक जीवन में भी सुख शांति एवं सफलता मिलती है। ऐसे जातक को माता के पक्ष में कुछ कमी रहती है, परंतु भूमि, मकान, भोग-विलास आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी ही मिथुन राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: शारीरिक सौंदर्य, मान, चतुराई तथा सुख की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक बड़ा स्वाभिमानी होता है तथा यश भी प्राप्त करता है।

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: बुध

३५५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
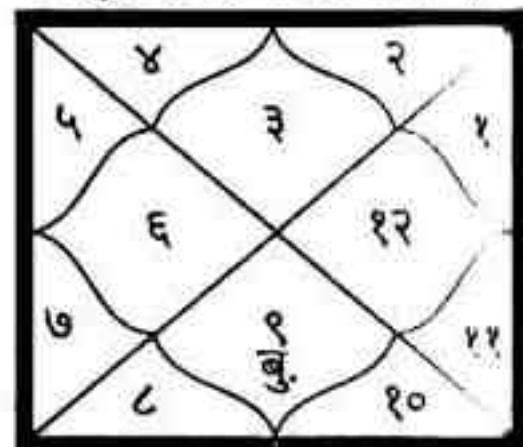
आठवें मृत्यु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि में स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु माता के सुख में कमी होती है। शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि रहती है तथा जातक को अपनी मातृभूमि, मकान से हटकर किसी अन्य स्थान पर रहना पड़ता है। भूमि, मकान आदि के पक्ष में भी हानि उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा कुटुंब से सुख प्राप्त करता है, परंतु शारीरिक सुख एवं शांति में परेशानी उपस्थित होती रहती है।

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: बुध

३५६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम तथा विवेक-शक्ति द्वारा उन्नति करता है तथा धर्म का पालन भी करता है। वह भूमि, मकान, माता के सुख आदि को भी प्राप्त करता है तथा भाग्यशाली बनकर अनेक प्रकार के सुखों का उपभोग करता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा उसे भाई-बहन का श्रेष्ठ सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक भाग्यवान, समझदार, सुखी, धनी, विवेकी, संतुष्ट तथा यशस्वी होता है।

मिथुन लग्न: नवमभाव: बुध

३५७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः दशमभावः बुध

३६८
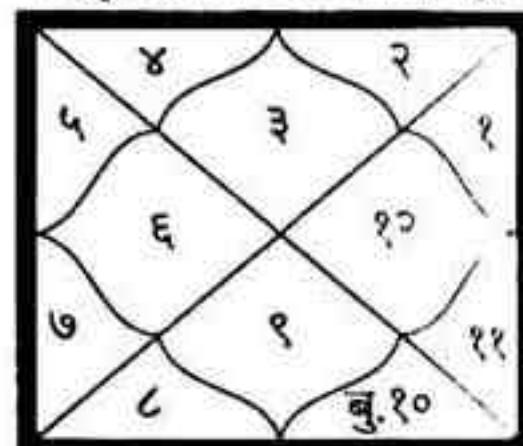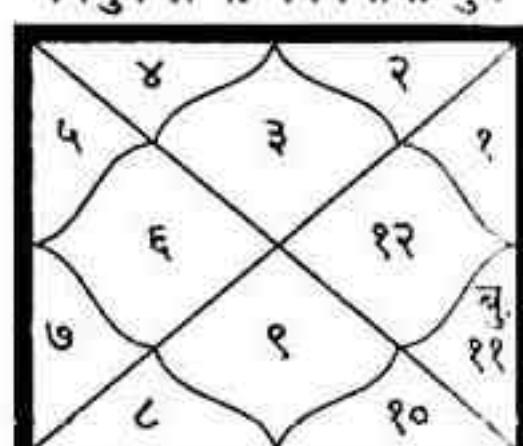
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में मीन राशि पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक कठिन शारीरिक श्रम द्वारा उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहता है। उसे पिता से अल्पसुख प्राप्त होता है तथा राज्य के क्षेत्र में भी विशेष सफलता नहीं मिलती। वह कभी अपमानित और कभी सम्मानित भी होता है। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को बुध की कन्या राशि में देखता है, अतः माता के सुख-साधनों में वृद्धि होती है।
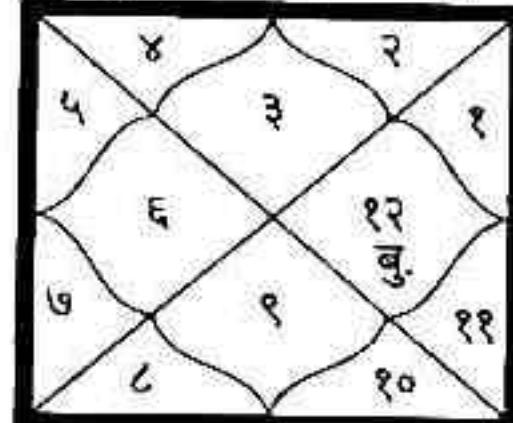
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः एकादशभावः बुध

३६९

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने शारीरिक श्रम एवं विवेक के द्वारा पर्याप्त लाभ उठाता है। साथ ही भूमि, संपत्ति, मकान तथा माता के सुख को भी प्राप्त करता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतानपक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, विवेकी, विद्वान, चतुर तथा मीठी वाणी बोलने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
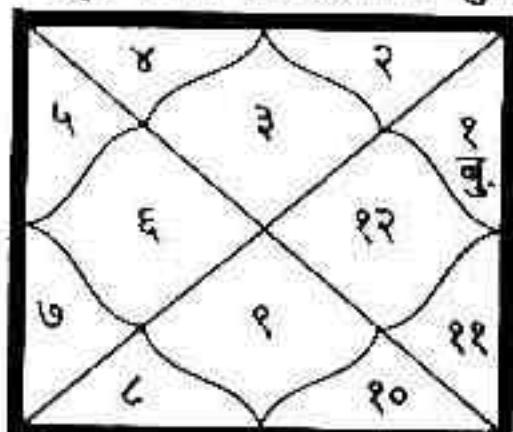
बारहवें व्ययभाव तथा बाहरी संबंधों के भाव में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता रहता है। साथ ही माता, भूमि, मकान के सुख संबंध में कुछ कमी बनी रहती है तथा जातक को अपनी जन्मभूमि से दूर रहकर सुख प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से छठभाव को मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में शांति एवं विवेक के द्वारा सफलता प्राप्त करता है। खर्च की अधिकता के कारण भीतरी रूप से परेशान रहते हुए भी वह अपने प्रभाव तथा सम्मान को बनाए रखता है।
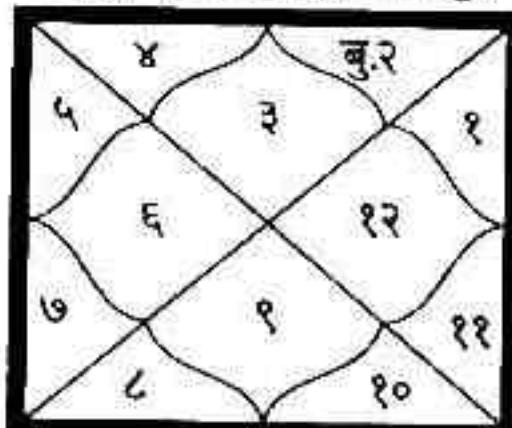
मिथुन लग्नः द्वादशभावः बुध

३७०

'मिथुन लग्न' में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौंदर्य, स्वाभिमान, मनोबल तथा सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता एवं राज्य द्वारा सहयोग, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है। यहां से गुरु सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव को देखता है। अत: स्त्री द्वारा भी सुख मिलता है। पांचवीं शत्रु-दृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतान के पक्ष में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ विशेष सफलता प्राप्त होती है। नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।
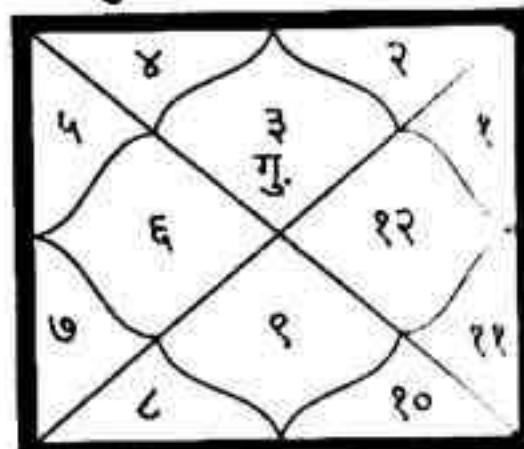
मिथुन लग्न: प्रथमभाव: गुरु

३७१

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से षष्ठ भाव को देखता है। अत: शत्रु पक्ष से प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है तथा मामा के पक्ष से सहयोग मिलता है। सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य के द्वारा सहयोग, सुख एवं सम्मान प्राप्त होता है तथा व्यवसाय द्वारा धन की खूब वृद्धि होती है।

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: गुरु

३७२

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
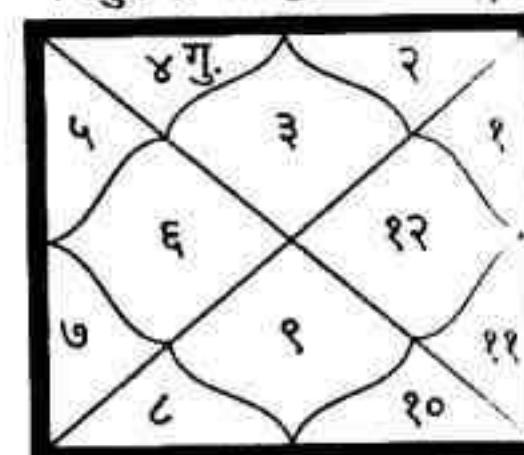
तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख प्राप्त होता हैं। यहां से गुरु पांचवी दृष्टि से आपको धनु राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: सुंदर, सुशिक्षिता एवं सुयोग्य पत्नी द्वारा सुख की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय

मिथुन लग्न: तृतीयभाव: गुरु

३७३
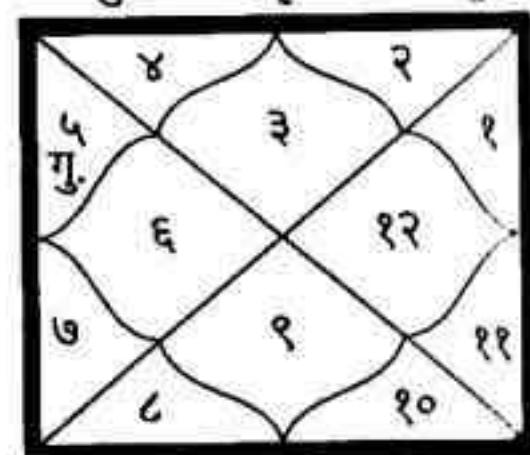
क्षेत्र में बहुत सफलता मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ असंतोष एवं कमी बनी रहती है और परिश्रम द्वारा धन लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
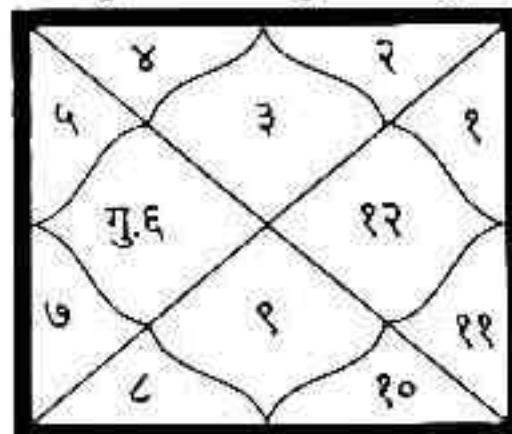
चौथे केंद्र माता तथा भूमि-सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख यथेष्ट मात्रा में प्राप्त होता है तथा सुख की वृद्धि होती है। पांचवीं नीच दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ हानि एवं अशांति का सामना करना पड़ता है। सातवीं दृष्टि से अपनी राशि मीन में दशमभाव को देखने के कारण पिता तथा राज्य द्वारा पर्याप्त सहयोग, सफलता तथा यश की प्राप्ति होती है एवं व्यवसाय की उन्नति होती है। नवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से विशेष संबंध बना रहता है।

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: गुरु

३७४

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण तथा विद्या, संतान के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष में कुछ कमी, परंतु विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है। पांचवीं शत्रु-दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्योन्नति में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से कारण लाभ खूब होता है। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है। संक्षेप मे, ऐसा जातक बड़ा विद्वान्, बुद्धिमान, दूरदर्शी, उन्नतिशील, वाणी की शक्ति का धनी, चतुर, सुखी, तथा सफल होता है।
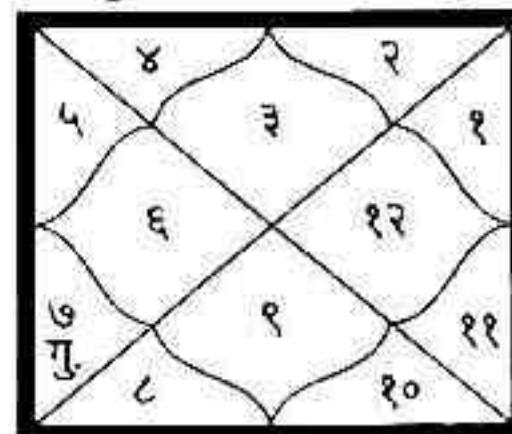
मिथुन लग्न: पंचमभाव: गुरु

३७५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष में विजय प्राप्त होती है। साथ ही स्त्रीपक्ष में कुछ मतभेदों के साथ सफलता मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से अपनी मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अत: उसे राज्य द्वारा सम्मान एवं उन्नति के अवसर मिलते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च खूब रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। नवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण परिश्रम के द्वारा धन की वृद्धि होती है तथा कुटुंब से सहयोग प्राप्त होता है। ऐसा जातक उन्नतिशील होता है।
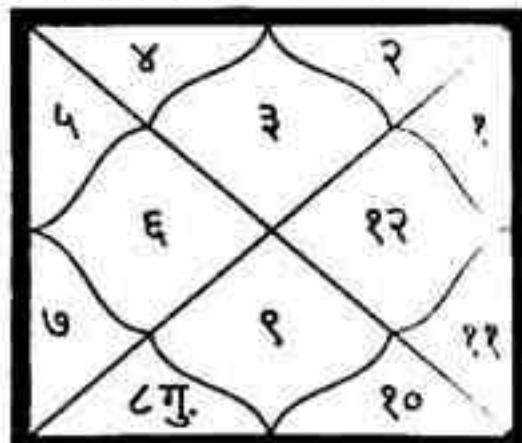
मिथुन लग्न: षष्ठभाव: गुरु

३७६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही धनु राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बड़ी सफलता, सुख एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। साथ ही पिता तथा राज्य पक्ष से भी सहयोग, सम्मान एवं सुख मिलता है। यहां से जातक पांचवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को लाभ खूब होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुंदर, धनी, सुखी, स्वाभिमानी तथा जीवन में सफलताएं पाने वाला होता है।

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: गुरु

३७७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
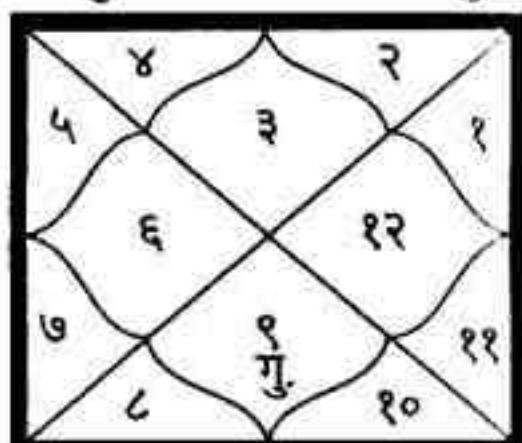
आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा पुरातत्त्व के संबंध में कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। साथ ही स्त्री, पिता तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कष्ट का अनुभव होता है। उसे उदर विकार तथा मूत्रेंन्द्रिय विकारों का भी सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: गुरु

३७८
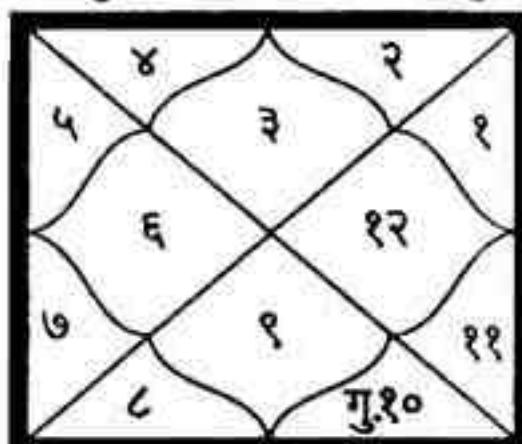
भी गुरु पांचवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के कपटपूर्ण- संबंधों से गृहस्थी का संचालन करता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, मकान, भूमि आदि का सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: गुरु

३७९
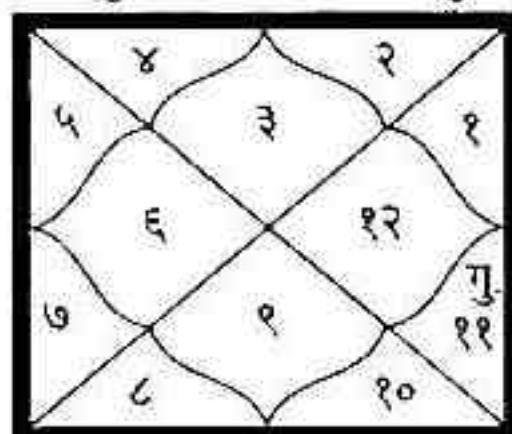
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक कुछ कठिनाइयों के साथ भाग्योन्नति करता है तथा अरुचि सहित धर्म का पालन करता है। साथ ही स्त्री तथा पिता पक्ष में भी असंतोष बना रहता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों का सहयोग भी मिलता है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से कुछ असंतोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुशलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: दशमभाव: गुरु

३८०

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपनी ही मीन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को राज्य एवं पिता द्वारा सुख, सहयोग तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सफलता मिलती है। पांचवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक को धनसंचय की उत्तम शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान, संपत्ति आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण जातक शत्रु पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा मामा द्वारा भी सहायता मिलती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।
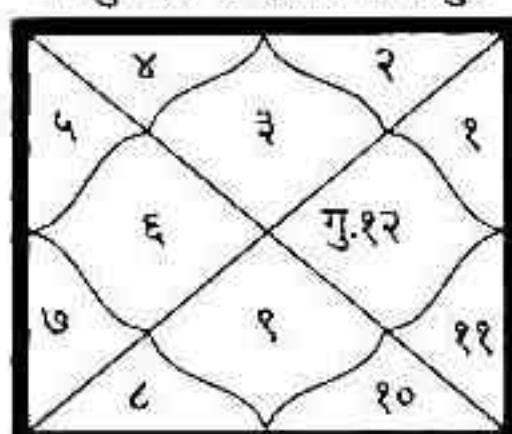
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: एकादशभाव: गु॰
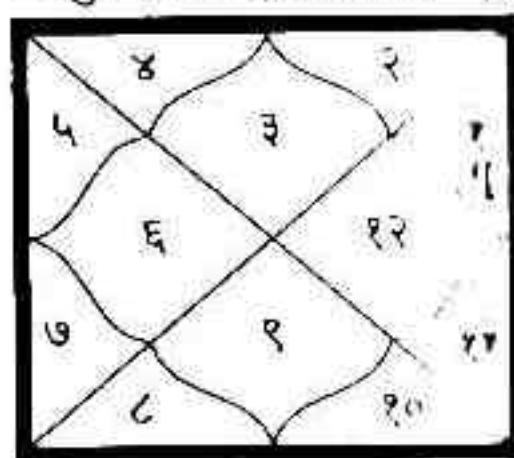
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को व्यवसाय तथा पिता के द्वारा भी पर्याप्त लाभ प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है तथा भाई बहनों का सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतानपक्ष से कुछ असंतोष के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की खूब प्राप्ति होती है। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में विशेष सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा [illegible] प्राप्त करने वाला होता है।
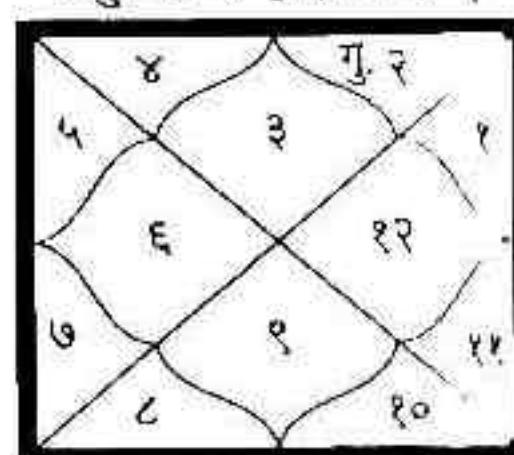
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए,

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: गु॰

बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु शुक्र की वृष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता है। इसके साथ ही जातक को स्त्री तथा पिता के सुख संबंध में भी कुछ कमी रहती है एवं व्यवसाय में भी हानि उठानी पड़ती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता तथा घरेलू सुख, भूमि, मकान आदि की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से शत्रुपक्ष से प्रभाव तथा विजय मिलती है एवं नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के संबंध में कुछ हानि उठानी पड़ती है। ऐसे जातक को आयु के संबंध में खतरों का भी सामना करना पड़ता है।
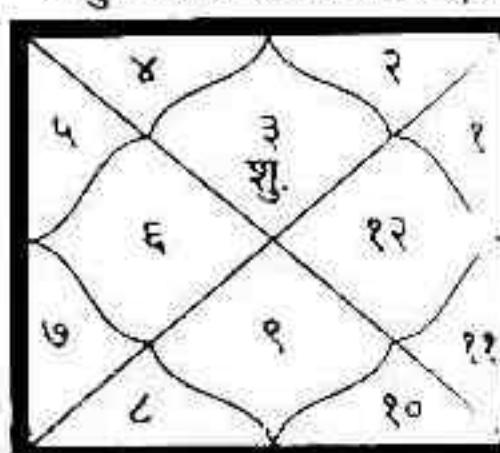
'मिथुन' लग्न में 'शुक्र' का फल

मिथुन लग्न: प्रथमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र, एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है, परंतु विद्या, बुद्धि एवं चातुर्य की पर्याप्त मात्रा में प्राप्ति होती है। ऐसा जातक खूब खर्चीला होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से

एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहां से शुक्र सातवीं शुक्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री से कुछ मतभेद के साथ आसक्ति बनी रहती है तथा बड़ी युक्तियों तथा परिश्रम के साथ दैनिक कार्यों एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। ऐसा जातक बहुत भोगी होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
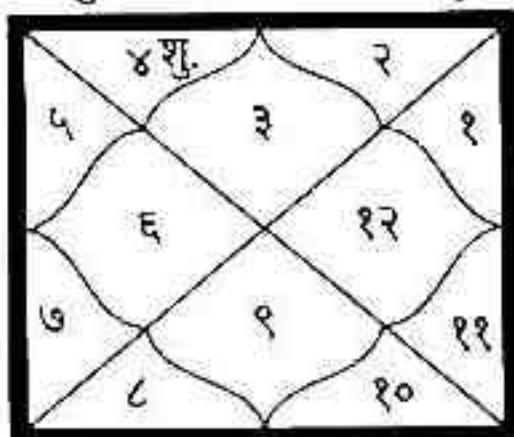
दूसरे धन व कुटुंब के भवन में अपने सामान्य शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि एवं चातुर्य द्वारा धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, परंतु धन का संचय नहीं हो पाता। उसका बाहरी स्थानों से संबंध रहता है तथा संतान सुख में कमी आती है। विद्या का लाभ अच्छा होता है तथा स्वार्थ एवं चतुराई की भावना प्रबल रहती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में हानि-लाभ दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं, परंतु ऐसा जातक अपना जीवन बड़े ठाट एवं शानदार ढंग से व्यतीत करता है।

मिथुन लग्नः द्वितीयभावः शुक्र

३८४

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम तथा भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है। साथ ही वह विद्या तथा संतान के पक्ष में भी कुछ कमजोरी के साथ शक्ति प्राप्त करता है, परंतु विद्या-बुद्धि के कमजोर होते हुए भी चतुराई एवं वार्तालाप द्वारा अपना काम निकालने में प्रवीण होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, जातक भाग्य-वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील रहता है तथा धार्मिक मामलों में भी रुचि लेता है। ऐसा जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने खर्च को चलाता है तथा चतुराई से काम निकालता है।
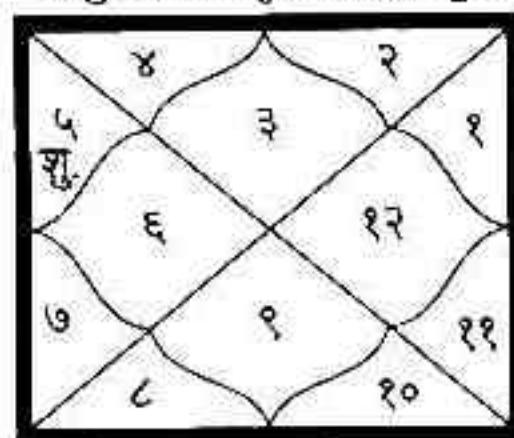
मिथुन लग्नः तृतीयभावः शुक्र

३८५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
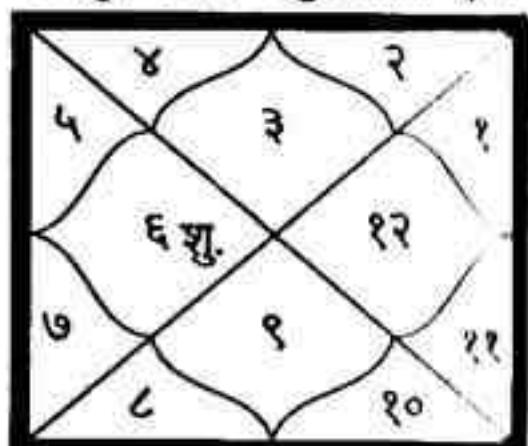
चौथे केंद्र, माता, भूमि, तथा सुख के भवन में कन्या राशि पर स्थित व्ययेश नीच के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन आदि के सुख की कमी बनी रहती है। साथ ही संतान का सुख भी कम मिलता है तथा व्यय के कारण उसकी सुख-शांति में भी बाधा पड़ती है। यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से गुरु की मीन राशि में दशमभाव को देखता है, अत: पिता तथा राज्य के द्वारा उसे सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा गुप्त चतुराई के बल पर मान-प्रतिष्ठा प्राप्त होती है।

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र
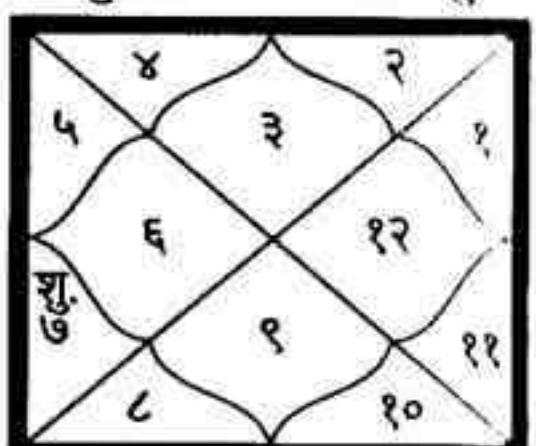
३८६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

पांचवें त्रिकोण, विद्या, तथा बुद्धि के क्षेत्र में अपनी ही तुला राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से जातक को संतान तथा विद्या के क्षेत्र में शक्ति प्राप्त होते हुए भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक बुद्धिमान तथा चतुर होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को बुद्धि द्वारा खूब लाभ होता है, परंतु शुक्र के व्ययेश होने के कारण आमदनी से खर्च अधिक बना रहता है। ऐसा जातक बहुत बातूनी, चतुर व चालाक भी होता है।

मिथुन लग्न: पंचमभाव: शुक्र

३८७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र ' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में अपनी बुद्धिमता, चतुराई एवं खर्च करने की शक्ति से सफलता प्राप्त होती है। झगड़े मुकदमे रोग आदि में उसे विशेष खर्च करना पड़ता है। गुप्त चतुराई से काम निकालने तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाने में जातक कुशल होता है। इसके साथ ही जातक को संतानपक्ष से बाधा उत्पन्न होती है तथा विद्याध्ययन के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च खूब अधिक बना रहता है।

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

३८८

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

३८९

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित व्ययेश के प्रभाव से को बुद्धिमान एवं चतुर स्त्री मिलती है तथा बुद्धि चतुराई के बल से वह अपने दैनिक खर्चों को भी रहता है। साथ ही कभी-कभी स्त्रीपक्ष से क्लेश चिंताएं भी प्राप्त करता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्र-से प्रथमभाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, जातक के शरीर में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परंतु की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बाहरी स्थानों के से लाभ उठाता है तथा संतान एवं विद्या के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त करता है।
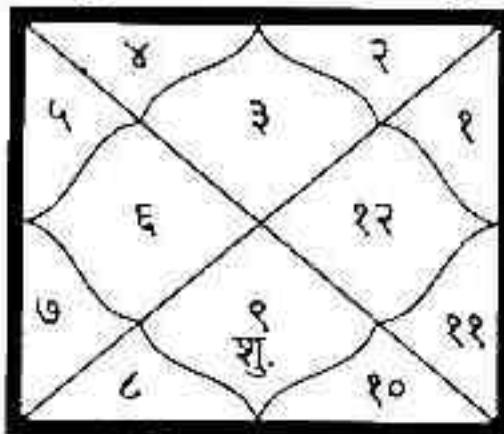
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'अष्टमभाव' शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

३९०

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व भवन में अपने मित्र शनि मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को तथा पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है। वह परिश्रमी कूटनीतिज्ञ होता है। साथ ही उसे संतान, विद्या एवं के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता अतः जातक धनवृद्धि के लिए विशेष प्रयत्नशील बना है, परंतु शुक्र के व्ययेश होने के कारण धन का संचय अधिक नहीं हो पाता।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: नवमभाव: शुक्र

३९१
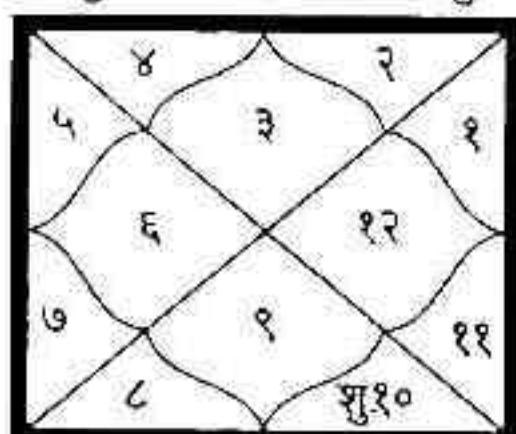
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपने मित्र की कुंभ राशि पर स्थित व्ययेश शुक्र के प्रभाव से भाग्यशाली तथा उन्नति करता है, परंतु शुक्र के होने के कारण कुछ परेशानियां भी आती रहती हैं। साथ ही जातक विद्या एवं संतान के सुख को प्राप्त है। बुद्धिमान एवं विद्वान बनकर बाहरी स्थानों के द्वारा लाभ उठाता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि तृतीयभाव को सूर्य की सिंह राशि में देखता है, अतः भाई-बहनों के साथ वैमनस्य रहता है और वह भाग्य को पुरुषार्थ से अधिक बड़ा मानता है।
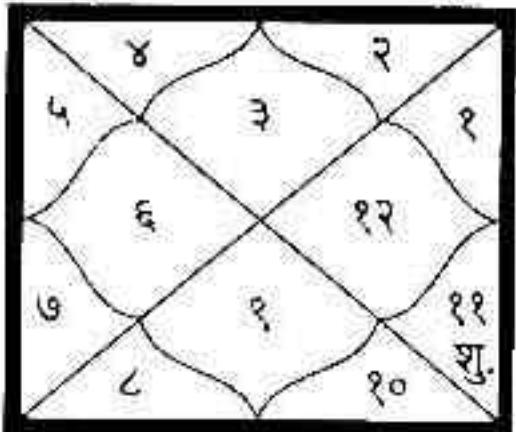
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः दशमभावः शुक्र

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने सामान्य मित्र मीन राशि में स्थित व्ययेश तथा उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को अपने पिता की संपत्ति तथा व्यवसाय के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से विशेष लाभ होता है। साथ ही राज्य द्वारा भी कुछ लाभ तथा सम्मान मिलता है। उसे संतान तथा विद्या की शक्ति भी मिलती है। यहां से शुक्र चौथी नीचदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता के सुख एवं भूमि-संपत्ति आदि के सुख में भी कमी बनी रहती है। ऐसा जातक अपने अहंकार के कारण बार-बार हानि उठाता है।
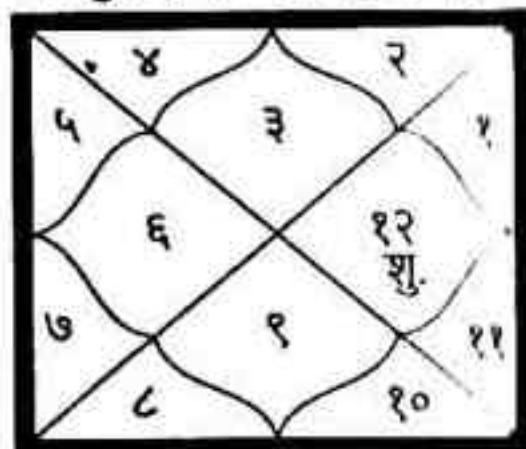
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः एकादशभावः शुक्र

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी खूब होती है, परंतु शुक्र के व्ययेश होने के कारण उसका खर्च भी अधिक बना रहता है। इसके साथ ही जातक के मस्तिष्क में कुछ चिंता तथा परेशानी बनी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान के पक्ष से सुख प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में प्रवीणता प्राप्त होती है, परंतु व्ययेश होने के कारण जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां भी उठानी पड़ती हैं तथा मस्तिष्क में चिंता भी बनी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः द्वादशभावः शुक्र
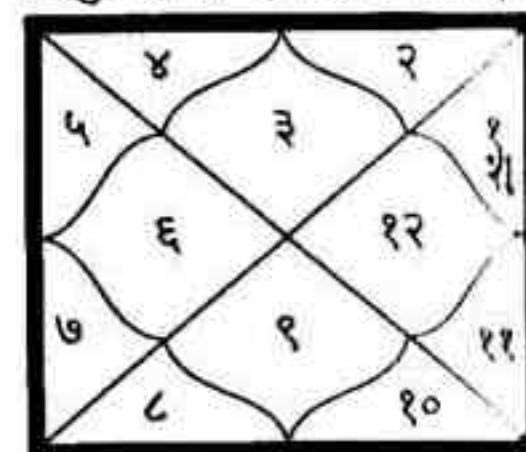
बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थान के संबंध वाले घर में अपनी ही वृष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से लाभ उठाता है। साथ ही उसे विद्या तथा संतान के पक्ष में कुछ कमी एवं परेशानी भी उठानी पड़ती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से षष्ठभाव को अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष में नम्रता

चतुराई से प्रभाव स्थापित करके अपना काम निकालेगा। ऐसा जातक बहुत चतुर होता है और उसके मस्तिष्क में परेशानियां भी बनी रहती है।

'मिथुन' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
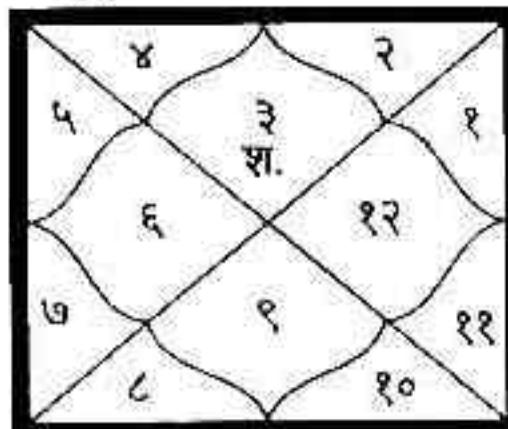
मिथुन लग्न: प्रथमभाव: शनि

३९५

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आती है। साथ ही आयु, भाग्य तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहनों से वैमनस्य रहता है एवं पराक्रम में कुछ कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष को असंतोष रहता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को गुरु की मीन राशि में देखने के कारण पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: शनि

३९६

दूसरे धन व कुटुंब के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक की धनसंचय शक्ति में हानि पहुंचती है तथा कुटुंब द्वारा भी सामान्यतः कष्ट प्राप्त होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि, मकान आदि का सुख कुछ कमी के साथ मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखता है, तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं। संक्षेप में ऐसा जातक बहुत भाग्यवान् समझा जाता है और वह स्वार्थी तथा चालाक होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः तृतीयभावः शनि

३९७
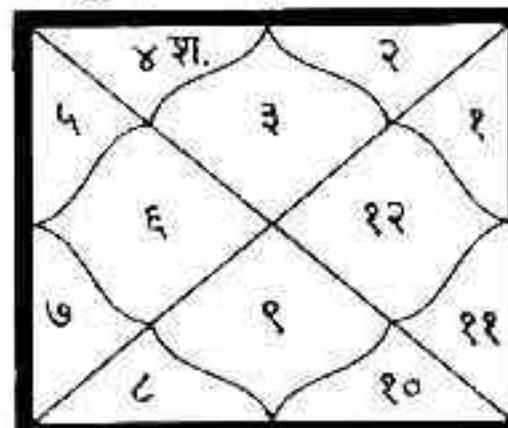
तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में कुछ कमी आ जाती है तथा भाई-बहनों से वैमनस्य बना रहता है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहां से शनि तीसरी उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष से उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं दृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पालन भी होता है, परंतु शनि के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। दसवीं दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से लाभ होता है।
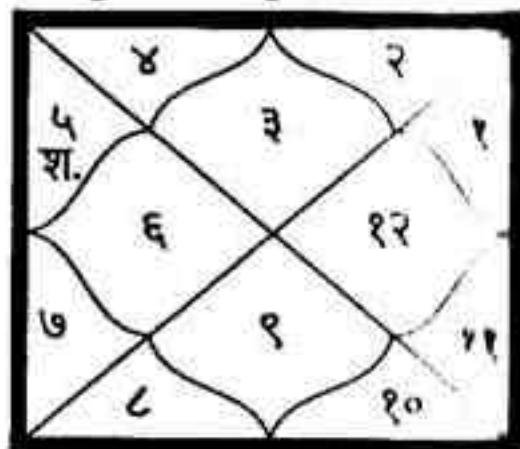
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार चाहिए—

मिथुन लग्नः चतुर्थभावः शनि

३९८

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश शनि के प्रभाव से जातक को माता का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है। इसी प्रकार भूमि, मकान आदि के सुख में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा धर्म का पालन भी होता रहता है। तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु-पक्ष के प्रति कड़ाई से काम लेकर प्रभाव स्थापित करता है तथा झगड़ों द्वारा लाभ प्राप्त करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से वैमनस्य तथा राज्य के क्षेत्र से असंतोष रहता है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक शक्ति की वृद्धि होती है तथा भाग्यवान समझा जाता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः पंचमभावः शनि

३९९
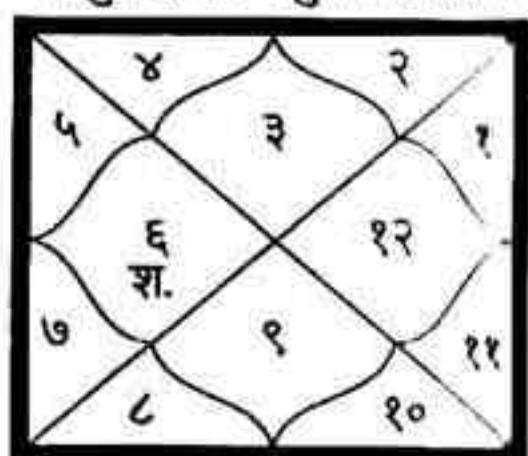
पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि के भवन में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को संतान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में उन्नति प्राप्त होती है। साथ ही संतानपक्ष से भाग्य वृद्धि का योग भी बनता है। यहां से शनि सातवीं नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कमजोरी बनी रहती है। तीसरी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा
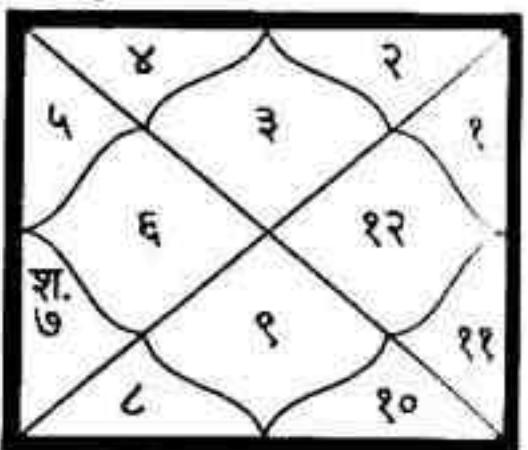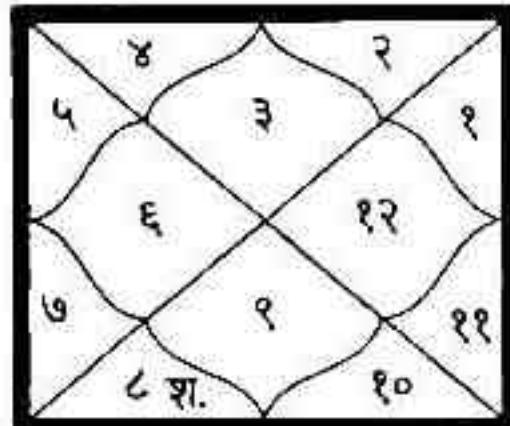
साय के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव देखने के कारण बड़ी कठिनाइयों के साथ धन संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति होती है कुटुंब द्वारा अल्प सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक को भाग्योन्नति के लिए अत्यधिक श्रम करना पड़ता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठमभाव' शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: शनि

४००

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर झगड़े-झंझट के क्षेत्र में सफलता एवं प्राप्त होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि वाले अष्टमभाव देखने से आयु में वृद्धि तथा पुरातत्त्व का लाभ होता सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण बहुत ठाट का रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध लाभ मिलता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन के सुख में बाधा पड़ती है पराक्रम में कमी आती है। ऐसा जातक बहुत परिश्रमी होता है।
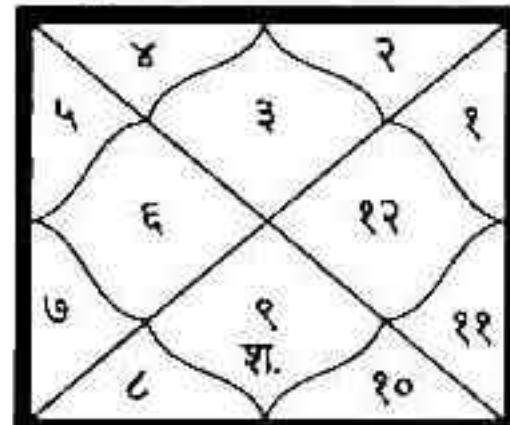
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: सप्तमभाव: शनि

४०१

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के घर में अपने शत्रु की राशि पर स्थित अष्टमेश तथा नवमेश शनि के प्रभाव जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख-दुख तथा हानि-लाभ दोनों की प्राप्ति होती है। साथ ही, उसे जननेंद्रिय कष्ट भी होता है, परंतु आयु की वृद्धि होती है। यहां तीसरी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, भाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव देखने के कारण शरीर के पक्ष में कुछ चिंतायुक्त प्रभाव होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि तथा मकान के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों साथ सुख प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक विरोधियों पर विजय पाकर परिश्रम के द्वारा उन्नति करता है।
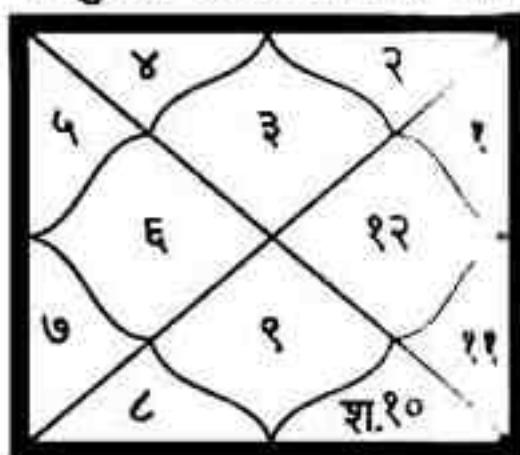
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' शनि ' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः अष्टमभावः शनि

४०२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपनी मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु भाग्य के मामले में कठिनाई बनी रहती है तथा सम्मान में भी कमी आती है। ऐसा जातक धर्म का भी यथाविधि पालन नहीं करता। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा दसवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण विद्या तथा संतान के क्षेत्र में भी कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक वाणी की शक्ति द्वारा भाग्योन्नति करता है तथा भाग्यवान समझा जाता है।
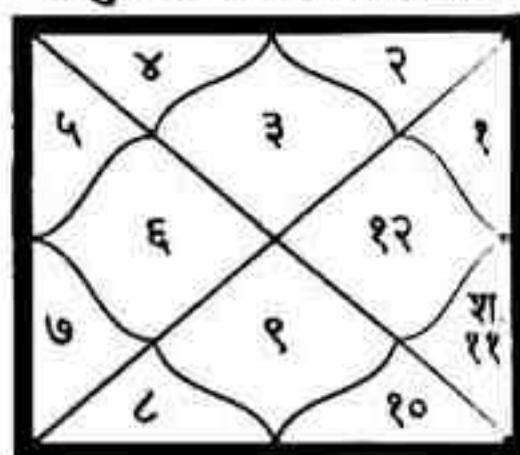
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः नवमभावः शनि

४०३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी कुंभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमियां तो रहती हैं, परंतु वह प्रकटरूप में भाग्यवान समझा जाता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का अच्छा लाभ मिलता है। धर्म पालन में रुचि एवं यश की प्राप्ति भी होती है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से एकादश भाव को देखता है, अतः आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि ये तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन के सुख तथा पुरुषार्थ में कमी आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष से परेशानी होने पर भी जातक उनकी चिंता नहीं करता तथा उन पर विजय पाता है। ऐसा जातक ठाट-बाट का जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः दशमभावः शनि

४०४

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता के सुख में कुछ कमी मिलती है, परंतु राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में धन, यश तथा सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक स्वार्थ-साधक, भाग्यवान तथा धर्म

पालन करने वाला होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है तथा दसवीं से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के सफलता मिलती है। कुल मिलाकर जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशानियों के साथ सफलता है।
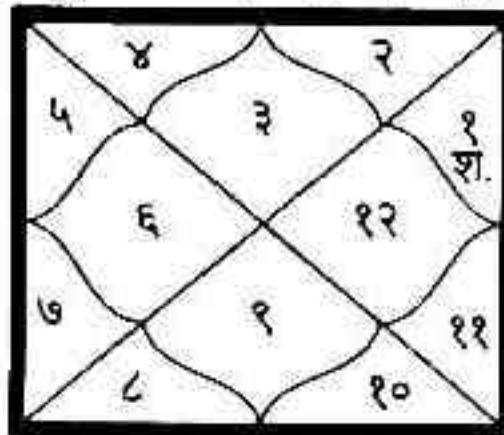
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि स्थित नीच शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी के में कठिनाइयां आती हैं। उसके भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र भी कमी रहती है। धन प्राप्ति के लिए अनुचित साधनों प्रयोग करने से भी वह नहीं चूकता। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, परंतु अष्टमेश होने के कारण वह जातक के शरीर में कुछ कष्ट देता है तथा होने के कारण भाग्यवान भी बनाता है। सातवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान, विद्या तथा बुद्धि क्षेत्र में उन्नति होती है और दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में अष्टमभाव को देखने के कारण जातक की आयु में वृद्धि करता है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी देता है। परंतु नीच का शनि होने के कारण जातक को अपने जीवन में अनेक संकटों तथा खतरों का सामना करना पड़ता है।

मिथुन लग्न: एकादशभाव: शनि

४०५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
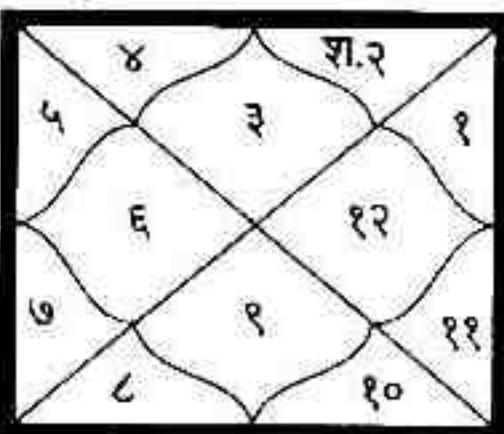
बारहवें व्ययभाव में अपने ही मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च खूब अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से लाभ भी मिलता है। जातक के पुरातत्त्व पक्ष में भी कुछ हानि पहुंचती यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता अतः धन-संचय एवं कुटुंब के पक्ष में त्रुटि तथा अशांति रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि षष्ठभाव को देखने से शत्रु में कठिनाइयों के साथ विजय प्राप्त होती है एवं दसवीं से अपनी कुंभ राशि में नवमभाव को देखने से जातक भाग्य में वृद्धि होती है तथा वह सामान्य रूप से धर्म पालन भी करता है। ऐसे जातक को सुख-दुख एवं यश-अपयश की प्राप्ति होती रहती है, परंतु वह भाग्यवान माना जाता है।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: शनि

४०६

'मिथुन' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

मिथुन लग्नः प्रथमभावः राहु

४०७

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक का शरीर लंबा तथा प्रभावशाली होता है। वह विवेकी, गुप्त युक्ति संपन्न तथा प्रतिष्ठा पाने वाला होता हैं। उसके मन में बड़ी हिम्मत बनी रहती है तथा वह अपनी उन्नति के लिए कष्टसाध्य कर्मों को करता तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है। ऐसा जातक लंबी-चौड़ी बातें बनाने वाला, स्वार्थी तथा अपने युक्ति बल पर धन एवं सम्मान प्राप्त करने वाला होता है।
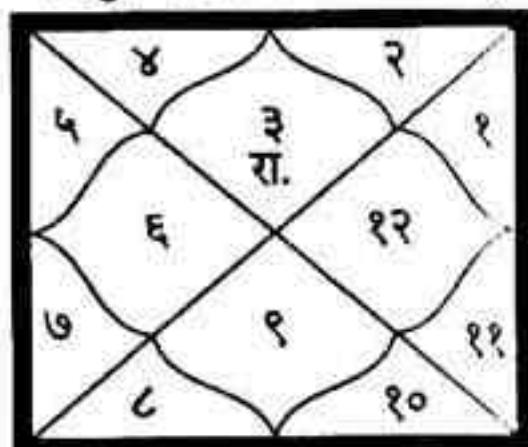
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः द्वितीयभावः राहु

४०८

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन-संपत्ति एवं कुटुंब के मामले में बहुत हानि उठानी पड़ती है तथा कष्टों का सामना करना पड़ता है। वह धन-प्राप्ति के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा कठोर परिश्रम करता है, फिर भी उसे कठिनाइयां निरंतर परेशान करती रहती हैं। ऐसे जातक को अपने जीवन में बहुत समय बाद धन का अल्प सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्नः तृतीयभावः राहु

४०९
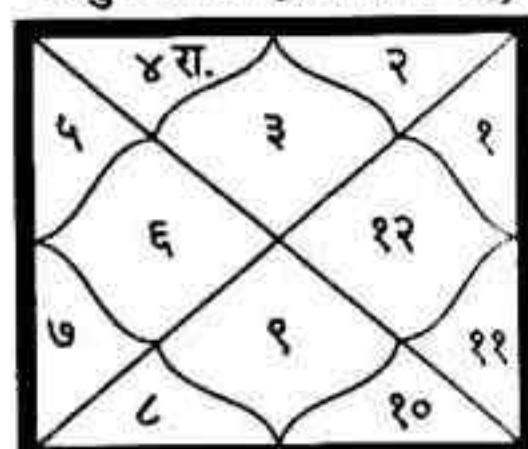
तीसरे पराक्रम तथा बंधु स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख-संबंध में कमी एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है। वह परिश्रम, कष्ट एवं हिम्मत के साथ अपनी उन्नति के लिए प्रयत्न करता है। वह धैर्यवान तथा गुप्त युक्तियों से संपन्न, बहादुर स्वभाव का भी होता है, परंतु कभी-कभी उसे बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है; अतः वह अपनी पूर्ण उन्नति नहीं कर पाता।
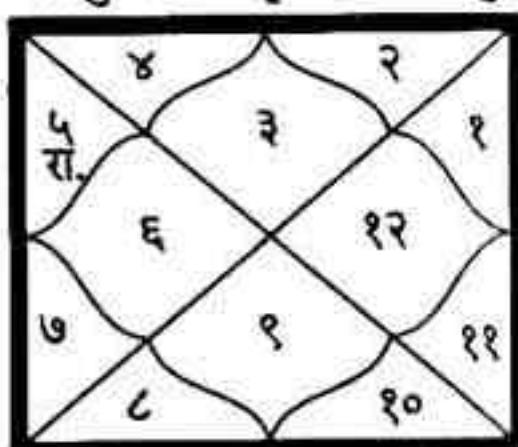
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: राहु

४१०

चौथे केंद्र, एवं माता के सुख भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ कमी प्राप्त होती है तथा भूमि आदि, मकान एवं घरेलू सुख में भी कुछ असंतोष एवं झगड़े-टंटे का योग बना रहता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों के बल पर सुख की प्राप्ति करता है और बहुत कठिनाइयों के बाद सुख के साधन प्राप्त करने में सफल होता है। ऐसे जातक को घरेलू सुख-शांति में कमी का अनुभव होता रहता है।
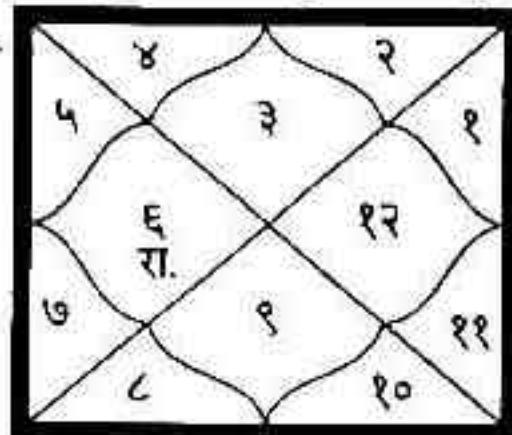
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: राहु

४११

पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में अनेक युक्तियों के बाद सफलता प्राप्त होती है, परंतु संतानपक्ष से कुछ कष्ट बना रहता है। ऐसा जातक बहुत चतुर; गुप्त युक्तियों वाला तथा बुद्धिमान होता है। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए असत्य भाषण करने में भी संकोच नहीं करता। यद्यपि उसके मस्तिष्क में अनेक प्रकार की चिंताएं भी रहती हैं, परंतु उसकी बात-चीत बड़ी प्रभावोत्पादक होती है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: राहु

४१२
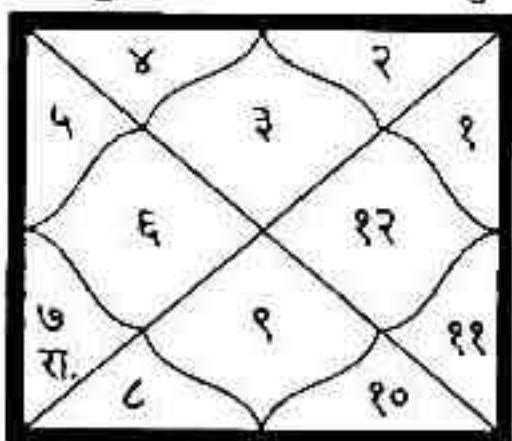
छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपने शत्रु पक्ष में अत्यंत प्रभाव बनाए रहता है। वह शत्रुओं द्वारा परेशानियों का अनुभव करने पर भी उन पर विजय प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्ति, चातुर्य, धैर्य, साहस, हिम्मत तथा वीरता की प्रतिमूर्ति होता है। वह अपनी कमजोरियों को प्रकट नहीं होने देता तथा प्रत्येक झगड़े-झंझट से लाभ एवं सफलता प्राप्त करता है। परंतु वह अपने मामा के पक्ष को कुछ हानिकारक सिद्ध होता है।
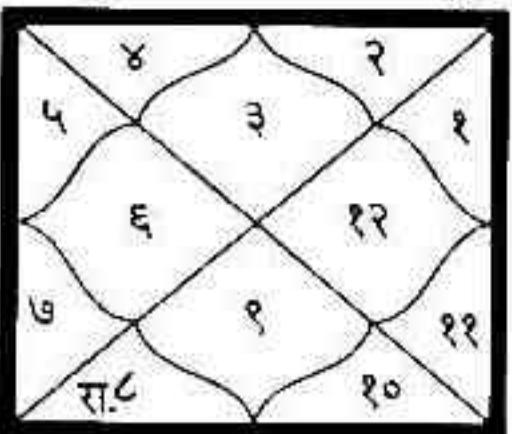
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनुराशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री के द्वारा विशेष कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे अपनी गृहस्थी का संचालन करने के लिए भी हर समय चिंतित एवं परेशान रहना पड़ता है तथा मूत्रेंद्रिय में भी कोई विकार होता है। ऐसा व्यक्ति गुप्त युक्तियों, असत्य भाषण एवं अनुचित तरीकों से भी अपना स्वयं को परतंत्र तथा परेशान-सा भी अनुभव करता रहता है।
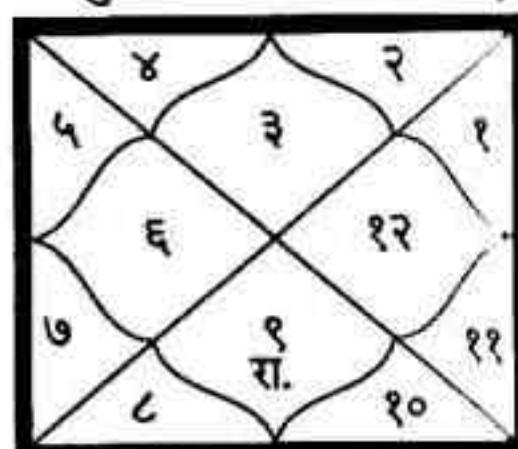
मिथुन लग्न: सप्तमभाव: राहु

४१३

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में कठिनाइयों, मुसीबतों, निराशाओं का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में कोई विकार भी होता है। वह गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा सफलता प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करता रहता है। उसके बाह्य तथा आभ्यंतरिक रूप में अंतर होता है और वह अपनी कठिनाइयों को किसी पर प्रकट नहीं करता।

मिथुन लग्न: अष्टमभाव: राहु

४१४

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
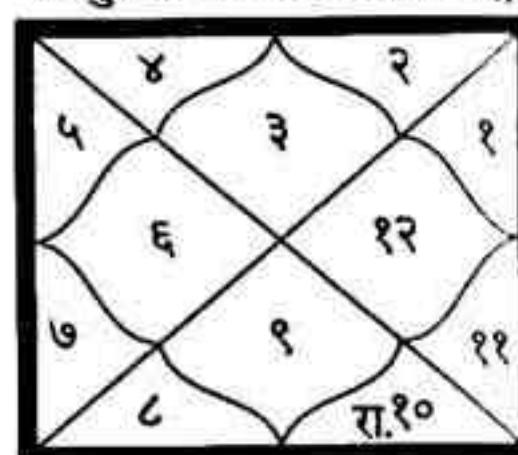
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति के क्षेत्र में अन्य कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह अत्यंत परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों, द्वारा अपने भाग्य की वृद्धि करता है, उसे पूर्ण सुख तथा सम्मान प्राप्त नहीं होता। इसी प्रकार उसका धर्म पालन भी दिखावटी होता है। क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की उपस्थिति के कारण जातक कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के द्वारा बाद में थोड़ी-सी सफलता अर्जित कर लेता है।
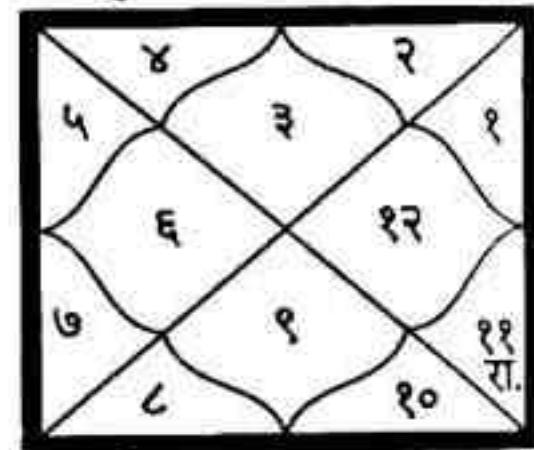
मिथुन लग्न: नवमभाव: राहु

४१५

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में राहु की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

४१६

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को राज्य तथा व्यवसाय के सुख-संबंध में कठिनाइयों एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम के द्वारा सफलता मिलती है, कभी-कभी व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा के ऊपर घोर संकट भी आते हैं। ऐसा व्यक्ति सामान्यत: आदर्शवादी होता है और बहुत कुछ संकट उठा चुकने के बाद अंत में यश, प्रतिष्ठा तथा भाग्य के क्षेत्र में थोड़ी सफलता पा लेता है।
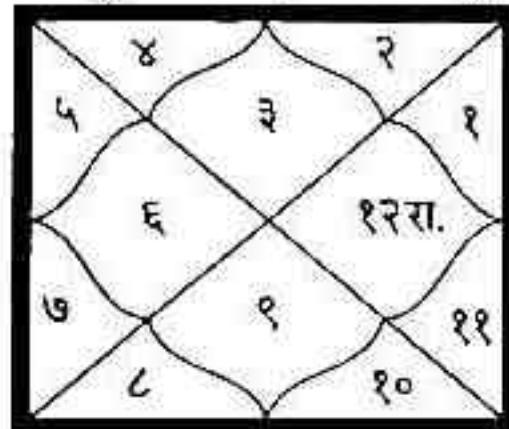
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

४१७

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक बड़ी गुप्त युक्तियों से काम लेकर अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त करता है। वह कठिन परिश्रम द्वारा लाभ अर्जित करता है। यद्यपि उसे कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु अंत में उसे विशेष सफलता भी प्राप्त होती है। ऐसे जातक थोड़े लाभ से संतुष्ट नहीं होते, अत: अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए निरंतर नई-नई योजनाएं बनाते और उन पर अमल करते रहते हैं।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

४१८
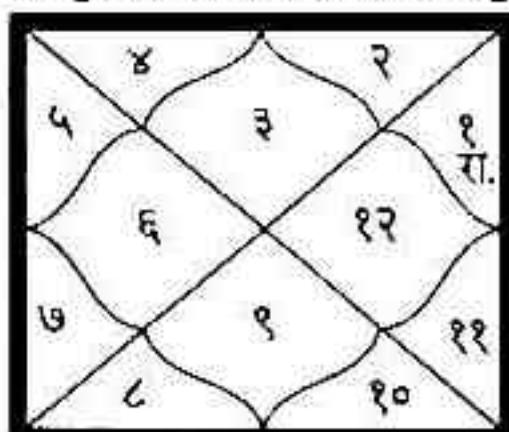
बारहवें व्यय भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है और उस संबंध में उसे कभी कभी बड़ी कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। वह चातुर्य के बल पर खर्च का संचालन करता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से परिश्रम द्वारा लाभ भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत परिश्रमी होता है और बाहरी लोगों की दृष्टि में प्रभावशाली बना रहता है।
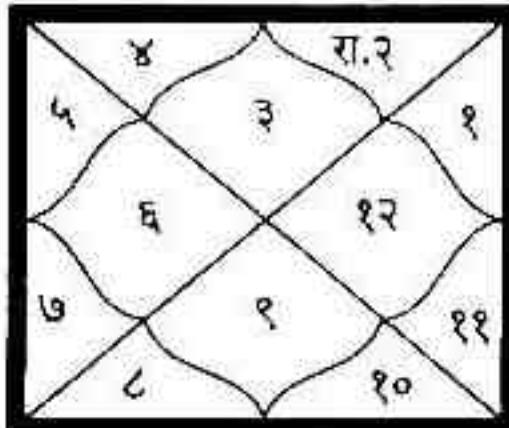
'मिथुन' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कमी रहती है। वह गुप्त चिंताओं से चिंतित बना रहता है और रोग तथा चोट का सामना भी करता है। वह अपने शारीरिक श्रम तथा गुप्त युक्तियों द्वारा अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है तथा विवेक शक्ति द्वारा स्वार्थ साधन में सफलता भी प्राप्त करता है, ऐसे व्यक्ति में स्वाभिमान की मात्रा कम होती है, परंतु वह विवेकशील होता है।
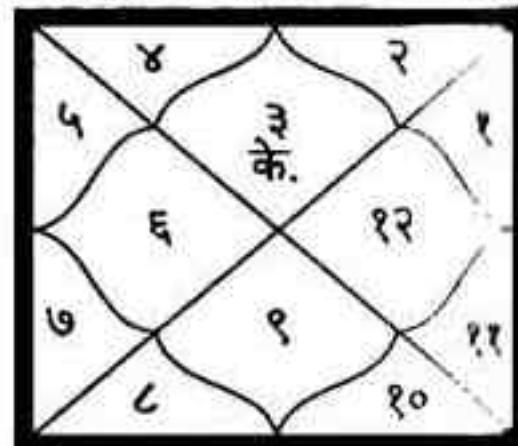
मिथुन लग्न: प्रथमभाव: केतु

४१९

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के पक्ष में चिंताओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। धन का संचय न हो पाने से वह कभी-कभी बहुत कष्ट भी पाता है तथा कौटुंबिक कारणों से मानसिक-क्लेश का शिकार बना रहता है। ऐसा जातक धन-संचय के लिए गुप्त, धैर्य एवं साहस से काम लेता है और अनेक कठिनाइयों के बाद थोड़ी सफलता प्राप्त करता है।

मिथुन लग्न: द्वितीयभाव: केतु

४२०

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–
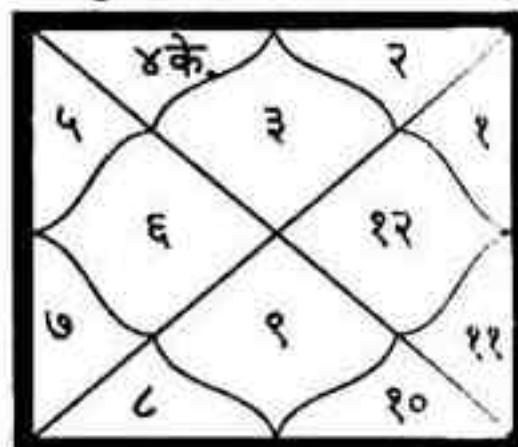
तीसरे पराक्रम एवं सहोदर भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कमी आती है, परंतु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है; क्योंकि तृतीयभाव में स्थित क्रूर ग्रह विशेष शक्तिशाली होता है। राहु के शत्रु राशिस्थ होने के कारण जातक को अपने पुरुषार्थ संबंधी कार्यों से ही परेशानी तथा निराशा का अनुभव होता रहेगा, परंतु अंत में उसे अपने उद्देश्य में सफलता एवं विजय भी प्राप्त होगी। ऐसा जातक बहुत हठी, हिम्मती तथा बहादुर होता है।
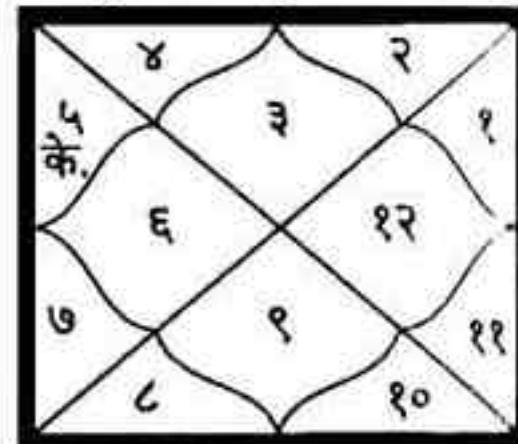
मिथुन लग्न: तृतीयभाव: केतु

४२१

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: चतुर्थभाव: केतु

४२२

चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक घरेलू सुख को प्राप्त करने के लिए चतुराई का आश्रय लेता है, परंतु उसे माता, भूमि तथा मकान आदि के सुख में कुछ कमी एवं असंतोष का सामना करना पड़ता है। कन्या राशि पर स्थित 'केतु' को स्वक्षेत्री जैसा माना जाता है, अतः वह अपने गुप्त धैर्य एवं साहस के बल पर अंततः सुख के साधनों में सफलता प्राप्त कर लेता है तथा स्थायी सुख पाने के लिए भी प्रयत्नशील बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: पंचमभाव: केतु

४२३
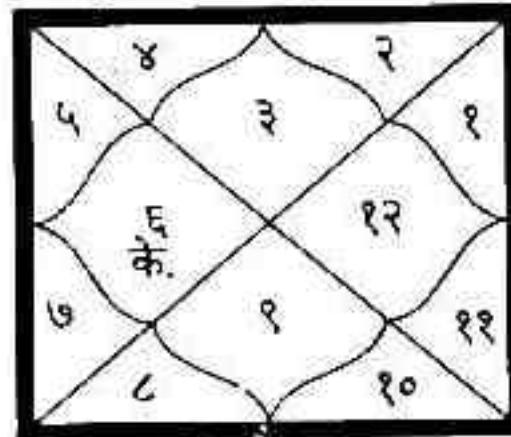
पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि संतान के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट मिलता है तथा विद्याध्ययन में कठिनाइयां आती हैं, परंतु वह अपने गुप्त धैर्य की शक्ति द्वारा विद्या के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। संतानपक्ष से भी उसे कठिनाइयों के द्वारा सामान्य सफलता मिलती है। ऐसा जातक अत्यंत चतुर तथा हिम्मती होता है।

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

मिथुन लग्न: षष्ठभाव: केतु

४२४

छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक शत्रुओं का दमन करता है और गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर उन पर विजय पाता है। छठे स्थान में स्थित क्रूर ग्रह अधिक शक्तिशाली कहा गया है, अतः ऐसा जातक झगड़े-झंझट, मुकदमे आदि में सफलता प्राप्त करता है। वह अपनी आंतरिक कमजोरी को छिपाकर बड़ी हिम्मत से काम लेता है, जिसके कारण सब लोग उसका लोहा मानते रहते हैं।
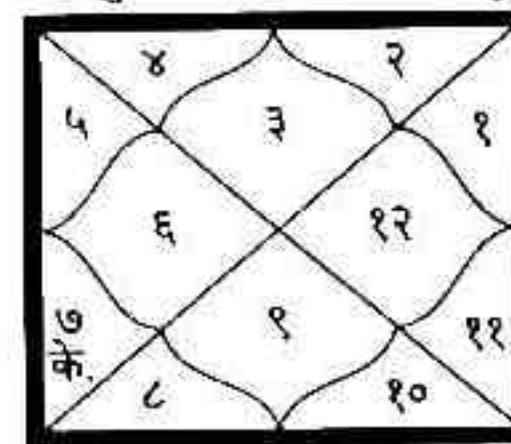
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
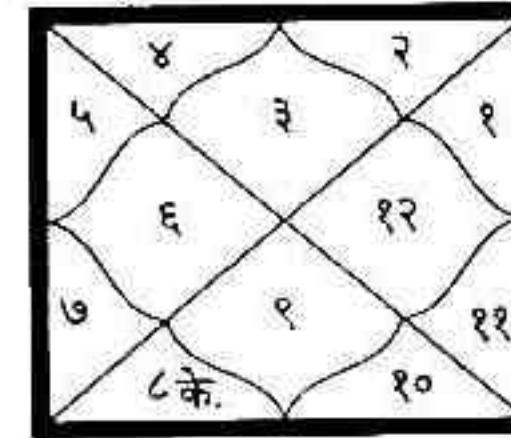
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर उच्च के 'केतु' के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में कुछ कठिनाइयों के बाद अनेक प्रकार की सफलताएं प्राप्त होती हैं तथा इंद्रिय-भोगादि की विशेष प्राप्ति होती हैं। व्यवसाय के क्षेत्र में भी वह अत्यंत कठिन परिश्रम तथा दौड़-धूप करने के उपरांत अत्यधिक उन्नति प्राप्त करता है तथा निरंतर उन्नतिशील बने रहने के लिए अनेक प्रकार की युक्तियों का प्रयोग करता है तथा सफल होता है।

मिथुन लग्नः सप्तमभावः केतु

४२५
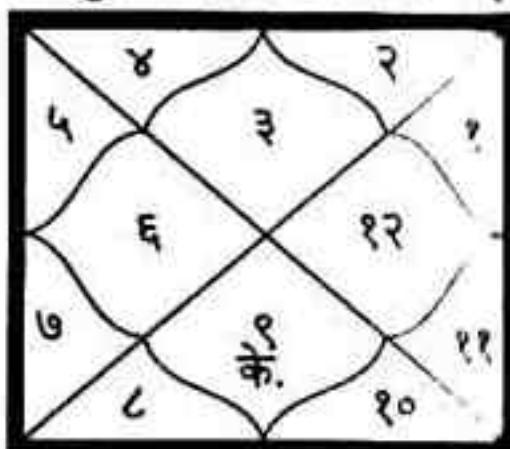
जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के संबंध में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है, परंतु केतु के मित्र राशिस्थ होने के कारण वह परेशानी के समय भी अपने धैर्य को नहीं खोता तथा प्रत्यक्ष रूप में हिम्मत एवं बहादुरी का प्रदर्शन करता रहता है। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक को उदर-विकार से भी ग्रस्त होना पड़ता है।

मिथुन लग्नः अष्टमभावः केतु

४२६

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के संबंध में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ता है, परंतु उस संबंध में वह कठिन परिश्रम करके थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसा जातक धर्म का यथार्थ पालन नहीं कर पाता तथा उसके यश में भी कमी बनी रहती है। फिर भी, क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति होने से गुप्त युक्तियों एवं कठिन परिश्रम द्वारा उक्त सभी क्षेत्रों में जातक को थोड़ी-बहुत सफलता प्राप्त हो जाती है।
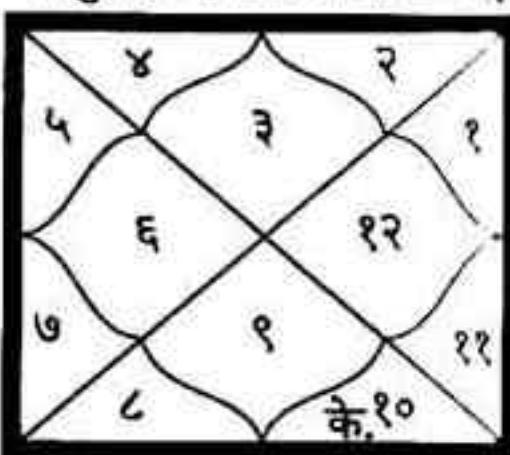
मिथुन लग्नः नवमभावः केतु

४२७

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
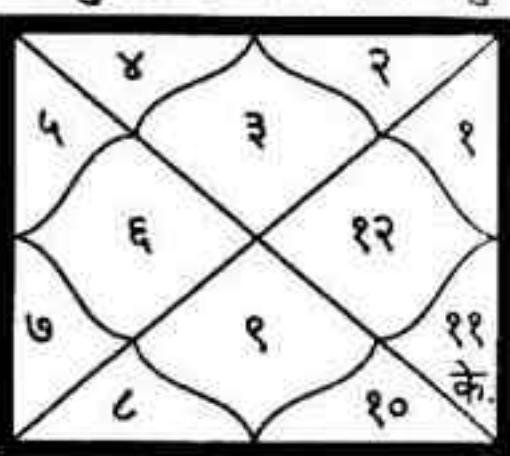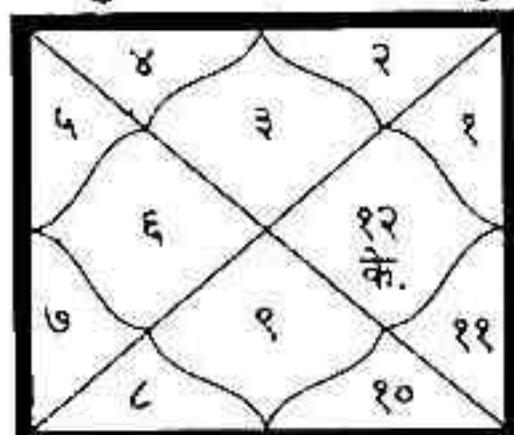
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को पिता, व्यवसाय एवं राज्य के पक्ष में अनेक प्रकार की कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा प्रतिष्ठा के क्षेत्र में भी कभी-कभी बड़ी हानि उठानी पड़ती है। ऐसा जातक अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है तथा उनके द्वारा कुछ सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

मिथुन लग्न: दशमभाव: केतु
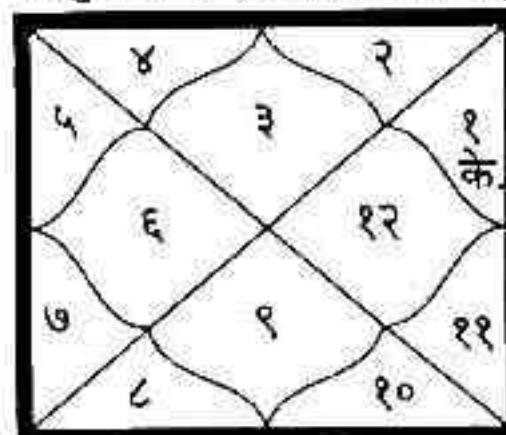
४२८

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आमदनी के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करना पड़ता है तथा कभी-कभी संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु अपनी गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं साहस के बल पर वह कठिनाइयों पर विजय पाकर अंत में सफल होता है। यद्यपि उसे अपनी आमदनी से पूर्ण संतोष नहीं होता, फिर भी वह उसे बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयत्नशील बना रहता है।

मिथुन लग्न: एकादशभाव: केतु
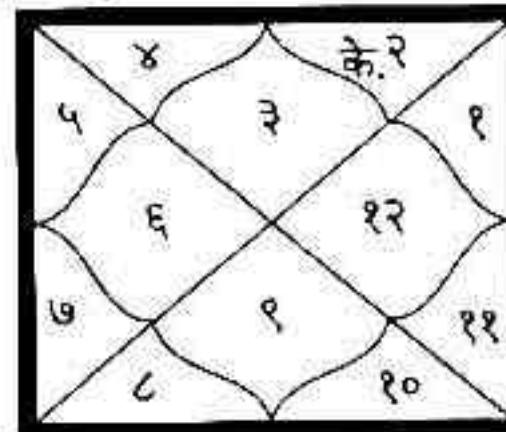
४२९

जिस जातक का जन्म 'मिथुन' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
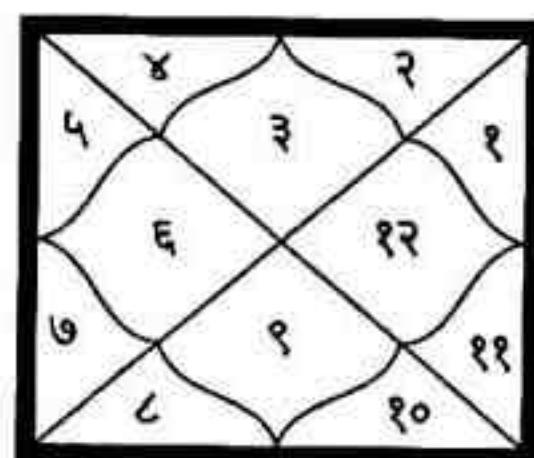
बारहवें व्यय तथा बाहरी स्थानों के संबंध से, घर में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित 'केतु' के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक बना रहता है, जिसके कारण उसे कठिनाइयों तथा कभी-कभी बड़े भारी संकट का सामना भी करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ परेशानी प्राप्त होती है, परंतु केतु के अपने मित्र की राशि पर स्थित होने के कारण जातक अपनी गुप्त युक्ति, चातुर्य, परिश्रम एवं हिम्मत के बल पर अपने खर्च को चलाते रहने की शक्ति प्राप्त कर लेता है।

मिथुन लग्न: द्वादशभाव: केतु
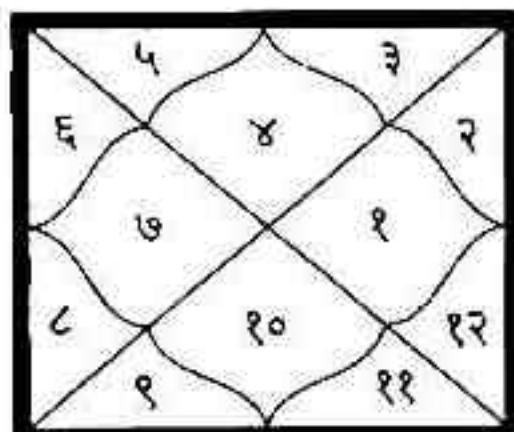
४३०

'मिथुन' लग्न का फलादेश समाप्त

कर्क लग्न

४३२
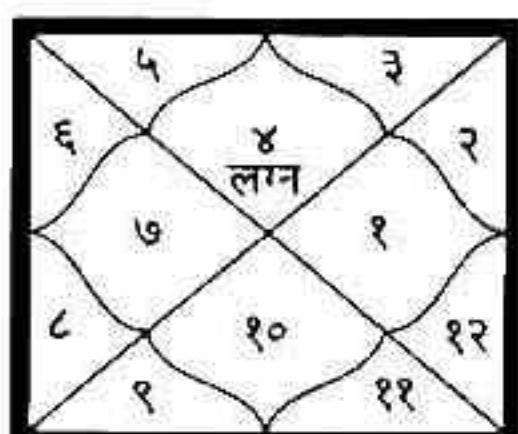
कर्क लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'कर्क' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातक का शरीर गौर वर्ण होता है। वह पित्त प्रकृति, जल क्रीड़ा का प्रेमी, मिष्ठान्नभोजी, भले लोगों से स्नेह करने वाला, उदार, विनम्र, पवित्र, क्षमाशील, धर्मात्मा, बड़ा ढीठ, कन्या-संततिवान्, व्यवसायी, मित्रद्रोही, धनी, शत्रुओं से पीड़ित, स्वभाव से कुटिल, कभी-कभी विपरीत-बुद्धि का परिचय देने वाला, जन्म-स्थान को छोड़कर अन्य स्थान में निवास करने वाला और पतले, परंतु शक्तिशाली वाला होता है।

कर्क लग्न में जन्म लेने वाले जातक का भाग्योदय १६-१७ वर्ष की आयु में ही हो है।

'कर्क' लग्न

५ ३
६ ४ लग्न २
७ १
८ १० १२
९ ११

४३३

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव दो प्रकार से पड़ता है:

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी द्वारा की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली सूर्य में 'कर्क' राशि पर 'प्रथमभाव' बैठा है, तो उसका अस्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण कुंडली-४६४ के अनुसार पड़ता रहेगा; परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय 'सिंह' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव

अवश्य डालेगा, जब तक कि वह 'सिंह' राशि से हटकर 'कन्या' राशि में नहीं चला जाता। 'कन्या' राशि में पहुंचकर वह 'कन्या' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अतः जिस जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य कर्क राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण कुंडली ४३४ में फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों ग्रह गोचर में सूर्य राशि के द्वितीयभाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ५४६ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय-स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय का प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण कुंडली-संख्या ४३४ से ५४१ तक में किया गया है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कर्क' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों को किन-किन उदाहरण द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए, इसका विवरण वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति जन्म-कुंडली का ठीक-ठीक फलादेश सहज में ही ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी-(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर अथवा ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या फिर पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी कुंडली में लिखवा लेने चाहिएं, ताकि उनके अंशों के बारे में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के झंझट से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा किसी ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति-कुंडली में यदि किसी भाव में एक से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं, जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों की युति का प्रभाव' शीर्षक अध्याय के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युक्ति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोतरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी जाती है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा-काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन के जिस काल में जिस ग्रह की दशा जिसे 'महादशा' कहा जाता है, चल रही होती है, जन्मकालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि तक किस ग्रह की दशा चलेगी और

महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी। इन बातों का उल्लेख भी रे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की दशा इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में गया है, अतः इन तीनों के समन्वय-स्वरूप फलादेश का ठीक-ठीक निर्णय करके अपने वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भागों में स्थित 'सूर्य' स्थायी फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४३४ से ४४५ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भागों में स्थित 'सूर्य' अस्थायी-फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण डली संख्या ४३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण डली संख्या ४३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४४० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण डली संख्या ४४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण डली संख्या ४४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-डली संख्या ४४५ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४४६ से ४५७ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५७ के अनुसार समझना चाहिए।

'कर्क' (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४५८ से ४६९ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का **अस्थायी** फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-**कुंडली संख्या** ४६९ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का **स्थायी** फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७० से ४८१ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित **'बुध' का** अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना **चाहिए—**

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण **कुंडली संख्या** ४७० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण **कुंडली संख्या** ४७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४८० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४८१ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४८२ से ४९३ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ४८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-
ली संख्या ४८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
४८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
४९० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
४९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
४९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-
ली संख्या ४९३ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र'
स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ४९४ से ५०५ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र'
अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ४९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण
डली संख्या ५०० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ५०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण
डली संख्या ५०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
डली संख्या ५०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०५ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०६ से ५१७ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५११ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१७ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का फलादेश

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१८ से ५२९ तक में देखना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५२९ के अनुसार समझना चाहिए।

कर्क (४) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-लग्न तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कर्क (४) जनम-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३० से ५४१ तक में देखना चाहिए।

'कर्क' (४) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५४० के अनुसार समझना चाहिए।
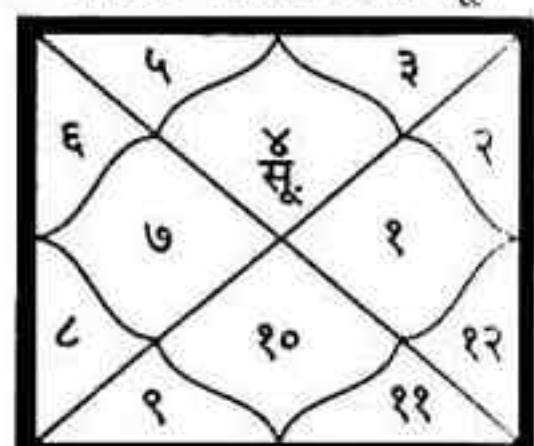
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ५०६ के अनुसार समझना चाहिए।

'कर्क' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

४३[illegible]

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, सौंदर्य एवं तेज में वृद्धि होती है तथा वह धन एवं कुटुंब की शक्ति प्राप्त कर दूसरों की दृष्टि में धनी तथा प्रतिष्ठित समझा जाता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ असंतोष एवं कठिनाइयों के साथ लाभ प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपनी सिंह राशि स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है, जिसके कारण वह प्रभाव तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को जीवन के संबंध में कुछ कठिनाई एवं दैनिक जीवनचर्या में भी कुछ परेशानी का सामना करना पड़ेगा।

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

४३५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
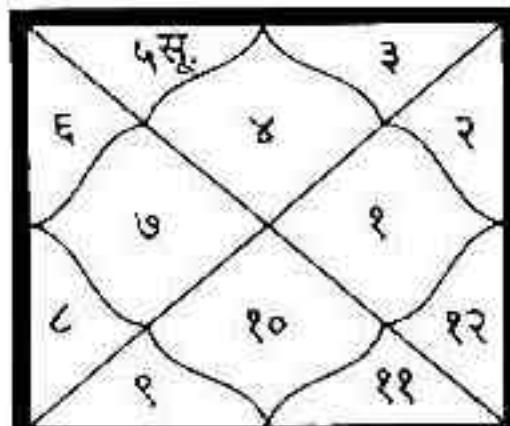
तीसरे पराक्रम एवं सहोदर भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहनों के पक्ष में कुछ त्रुटियों के साथ शक्ति प्राप्त होती है। पराक्रम द्वारा ही जातक अपने धन की वृद्धि भी करता है और प्रतिष्ठित होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक अपने पराक्रम द्वारा भाग्य की वृद्धि तथा धर्म का पालन करता है। उसे प्रभाव तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है।

कर्क लग्न: तृतीयभाव: सूर्य

४३६

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, व भवन के सुख में कमी प्राप्त होती है। साथ ही, धन एवं कुटुंब का सुख भी कम मिल पाता है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, मान तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक प्रतिष्ठा प्राप्त करने के लिए धन तथा सुख की विशेष चिंता नहीं करता।
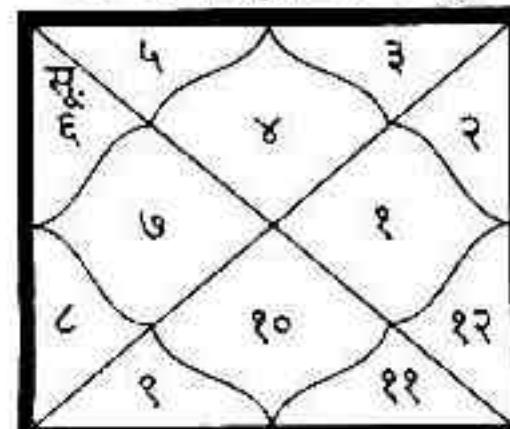
कर्क लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

४३७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
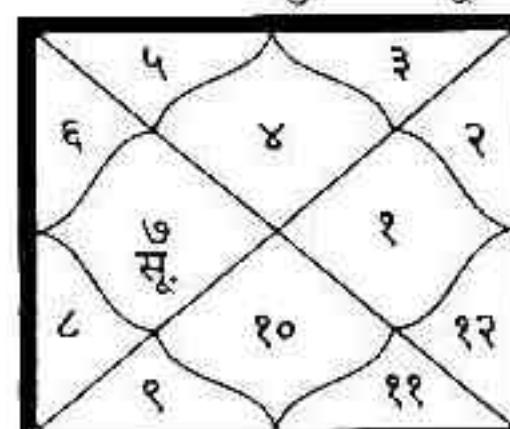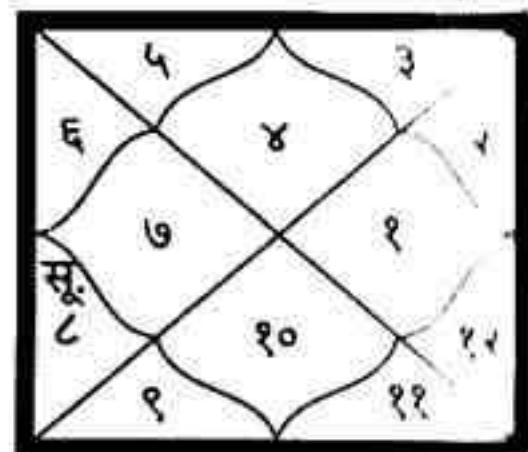
पांचवें त्रिकोण तथा विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कुछ बाधा मिलती है, परंतु एक संतान अत्यंत प्रभावशाली होती है। साथ ही विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है तथा धन की भी वृद्धि होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादश भाव को देखता है अत: जातक को लाभ व शक्ति भी पर्याप्त मिलती है। परंतु ऐसा जातक उग्र-स्वभाव का होता है और वह स्पष्ट बात कहने में अपने हानि-लाभ की चिंता नहीं करता है।

कर्क लग्न: पंचमभाव: सूर्य

४३४

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

छठे शत्रु स्थान में मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है, परंतु धनसंचय के क्षेत्र में कमजोरी एवं कौटुम्बिक सुख में वैमनस्य तथा सुख दोनों प्राप्त करता है। झगड़े-टंटे से युक्त परिश्रम के कार्यों द्वारा जातक के प्रभाव में वृद्धि होती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च खूब होगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होगा। वह प्रतिष्ठा के आगे धन-संचय की चिंता नहीं करेगा।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

४३५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
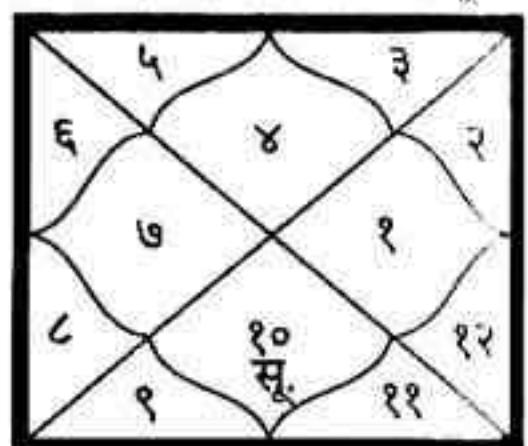
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित धन स्थान के स्वामी सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री के पक्ष में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होगी। स्त्री से उनका वैमनस्य रहेगा, परंतु व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानियों के साथ धन का लाभ होता रहेगा। मूत्रेंद्रिय में विकार तथा गृहस्थी के संबंध में कुछ कठिनाइयां भी हो सकती हैं। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक शरीर के संबंध में प्रभावशाली बना रहेगा तथा प्रतिष्ठा भी प्राप्त करेगा।

कर्क लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

४३६

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

४४१

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से आयु के पक्ष में कभी-कभी संकटों का सामना करना पड़ेगा तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ कमी के साथ प्राप्त होगा। उसका रहन-सहन धनवानों जैसा रहेगा। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से स्वराशि सिंह में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक के धन एवं कौटुंबिक सुख में कुछ कमी बनी रहेगी। उसके शरीर में भी कोई रोग हो सकता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: सूर्य

४४२
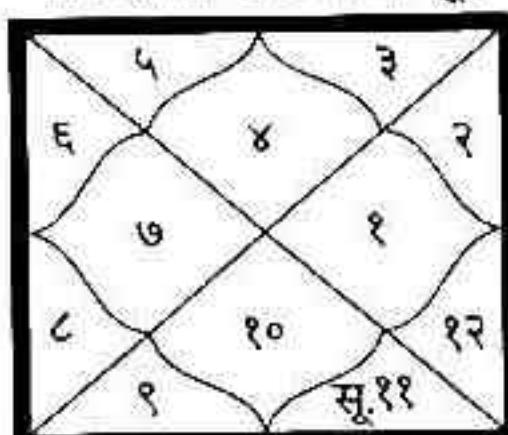
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की भाग्यशक्ति प्रबल रहेगी, जिसके कारण उसे धन तथा कौटुंबिक सुख की भी प्राप्ति होगी। वह धर्म का पालन भी करेगा तथा यश, मान व प्रतिष्ठा को प्राप्त होगा। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक के पराक्रम में वृद्धि होगी और भाई-बहनों का सुख भी मिलेगा। ऐसा जातक धनी, सुखी, हिम्मतवर तथा स्वार्थ एवं परमार्थ दोनों का साधन करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: दशमभाव: सूर्य

४४३

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, प्रतिष्ठा एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। वह धनी एवं सम्मानित माना जाता है तथा उच्च पद प्राप्त करता है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि तथा जन्म-स्थान के सुख में त्रुटि प्राप्त होगी तथा घरेलू सुख-शांति में भी कमी बनी रहेगी।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
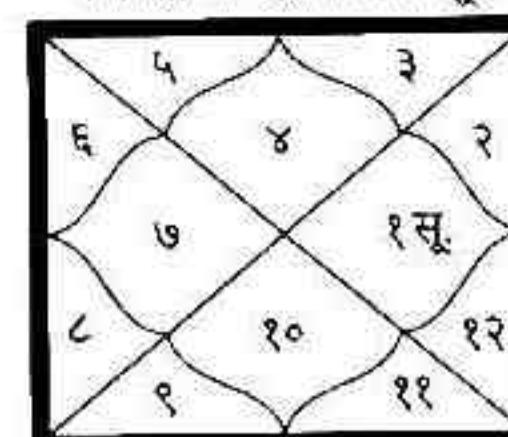
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होगा, परंतु कौटुंबिक सुख में कमी बनी रहेगी। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है। अत: जातक को संतानपक्ष से लाभ होगा तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी प्रवीणता तथा सफलता प्राप्त होगी। ऐसा जातक ऐश्वर्यशाली जीवन व्यतीत करता है तथा अपनी विद्या-बुद्धि के द्वारा धनोपार्जन में उन्नति करता रहता है।

कर्क लग्न: एकादशभाव: सूर्य

४४४

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय तथा बाहरी संबंधों के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से धन का श्रेष्ठ लाभ होता रहता है। ऐसा जातक रईसी ढंग का जीवन बिताता है, परंतु उसके कौटुंबिक सुख एवं धन-संचय के क्षेत्र में कमी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की वृश्चिक राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक को शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति रईसी खर्च करता हुआ धन के संचय की चिंता नहीं करता।

कर्क लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

४४५
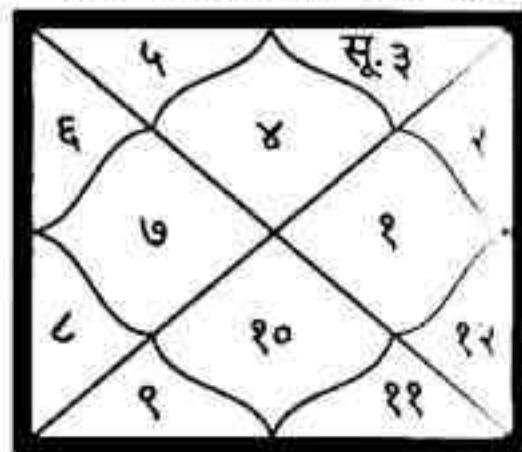
'कर्क' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक की शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य, आत्मिक शक्ति तथा यश-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति के मनोभाव बहुत उच्च कोटि के होते हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सामान्य असंतोष के साथ स्त्री तथा भोग की प्राप्ति होती है। साथ ही व्यवसाय के क्षेत्र तथा लौकिक कार्यों में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। ऐसा जातक यशस्वी भी होता है।
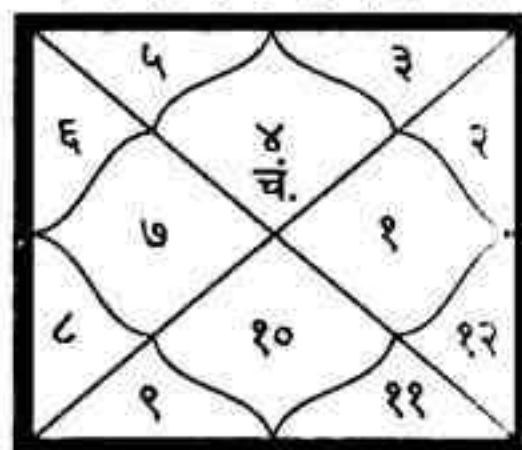
कर्क लग्न: प्रथमभाव: चंद्र

४४६

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र सूर्य सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के तथा मन की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुटुंब का भी पर्याप्त मिलता है। धन के क्षेत्र में जातक को कुछ -सी होते हुए भी अत्यधिक सफलता प्राप्त होती और वह भाग्यवान तथा प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता हां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु के संबंध में परेशानियां आती हैं तथा पुरातत्त्व का लाभ कुछ नाइयों के साथ होता है, परंतु वह अपने जीवन को शान-शौकत के साथ व्यतीत करता

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: चंद्र

४४७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में मा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
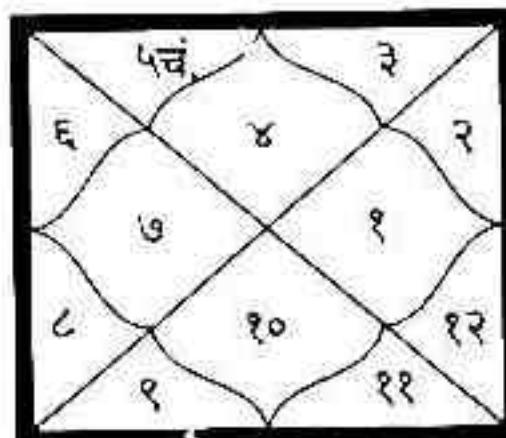
तीसरे भाई तथा पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को -बहन का सुख यथेष्ट मात्रा में मिलता है तथा पराक्रम भी अत्यधिक वृद्धि होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से नवमभाव को गुरु की मीन राशि में देखता अतः जातक की भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में भी उन्नति है। ऐसा जातक शरीर से सुंदर, ईश्वरभक्त, धार्मिक, , पुरुषार्थी, हिम्मतवर, उत्साही, सज्जन तथा शारीरिक एवं मनोबल से संपन्न होता है।

कर्क लग्न: तृतीयभाव: चंद्र

४४८

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में द्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र माता, भूमि एवं सुख स्थान में अपने सामान्य शुक्र की राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक माता, भूमि, भवन आदि का सुख पर्याप्त मात्रा में लब्ध होता है। शरीर सुंदर, मन कोमल तथा स्वभाव नोदी होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल मेष राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक पिता-स्थान की उन्नति होती है और वह राज्य तथा वसाय के क्षेत्र में सफलता, यश तथा सम्मान अर्जित रता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा सम्मानित ता है।
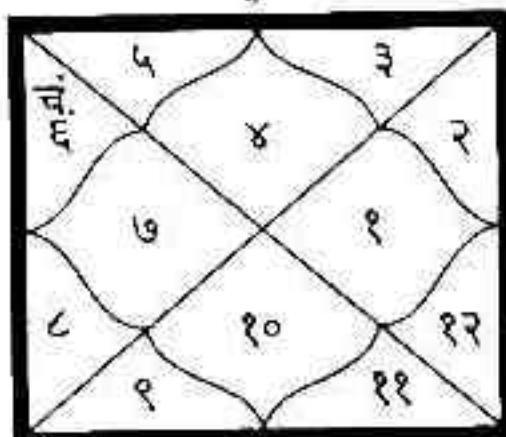
कर्क लग्न: चतुर्थभाव: चंद्र

४४९

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
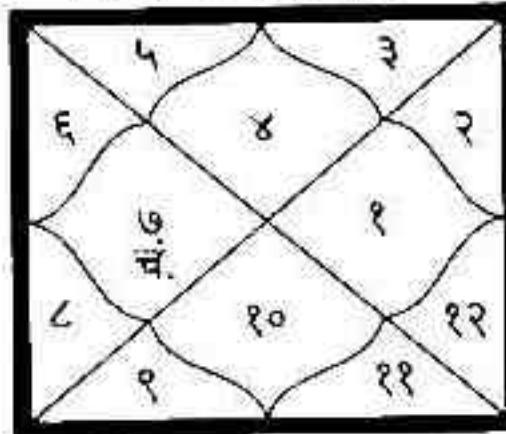
पांचवें त्रिकोण, विद्याबुद्धि तथा संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को विद्याबुद्धि में कमी तथा संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है। साथ ही शरीर तथा मल में भी दुर्बलता आती है। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक आर्थिक लाभ के लिए अपनी मानसिक तथा शारीरिक शक्तियों एवं गुप्त युक्तियों का प्रयोग करता है और उनमें सफलता प्राप्त करता है, परंतु उसे थोड़ी-बहुत मानसिक अशांति भी बनी रहती है।

कर्क लग्न: पंचमभाव: चंद्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
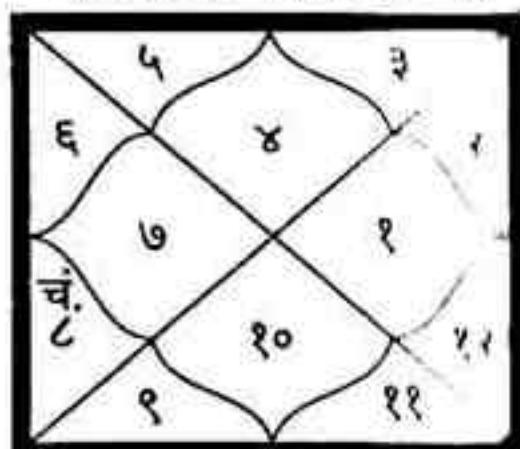
छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र बृहस्पति की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में कुछ दुर्बलता प्राप्त करता है तथा अपने नम्र व्यवहार के द्वारा प्रभाव स्थापित करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से बुध की मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक का खर्च अधिक रहता है तथा उसे बाहरी स्थानों के संबंध से सम्मान, यश तथा धन की प्राप्ति भी होती है। ऐसा जातक आत्मबली तथा गौरवशाली होता है।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: चंद्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव जातक को स्त्रीपक्ष में कुछ असंतोष के बाद सफलता प्राप्त होती है तथा भोगादि में विशेष रुचि बनी रहती है। साथ ही दैनिक कार्य संचालन एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सामान्य कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। यहां से चंद्रमा सातवीं दृष्टि से अपनी कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, मनोबल, आत्मिक शक्ति एवं लौकिक कार्यों में सफलता मिलती है। संक्षेप में ऐसा जातक सुखी, धनी, सुंदर तथा विलासी होता है।
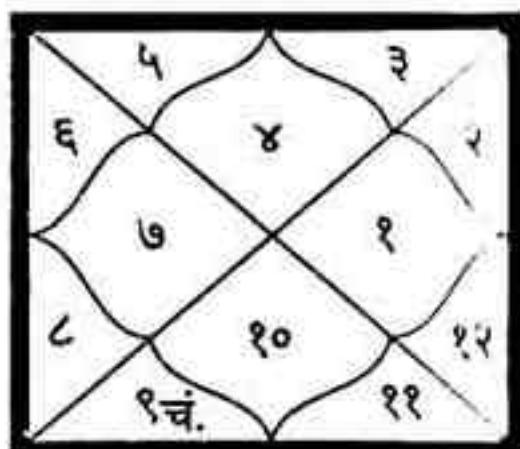
कर्क लग्न: सप्तमभाव: चंद्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
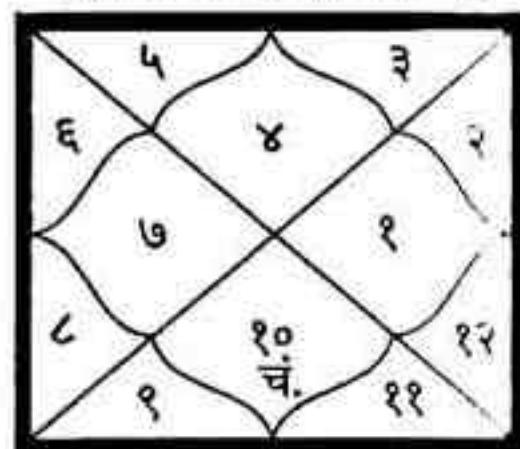
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कमी आती है तथा जीवन यापन संबंधी व्यवहारों तथा कार्यों में कुछ परेशानी का अनुभव होता है। उसे पुरातत्त्व के लाभ में सामान्य असंतोष रहता है और आयु की वृद्धि होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक के धन-जन की वृद्धि होती है तथा वह कठिन शारीरिक श्रम द्वारा अपनी उन्नति करता है।

कर्क लग्न: अष्टमभाव: चंद्र

४५३

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
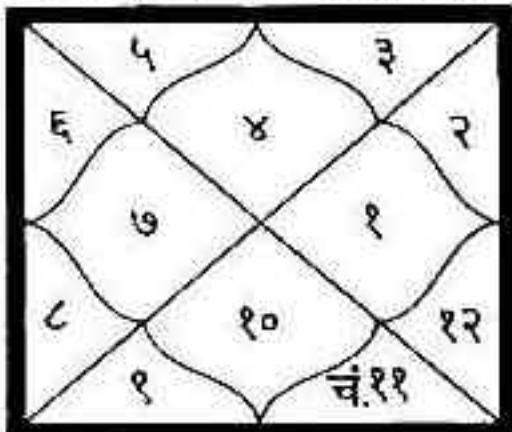
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शरीर तथा मान की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है और उसके द्वारा वह भाग्य की विशेष उन्नति करता हुआ धर्म का पालन करता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक सज्जन, सरल, सतोगुणी, भाग्यशाली, दैवी कृपापात्र, ईश्वर-भक्त तथा यशस्वी होता है।

कर्क लग्न: नवमभाव: चंद्र

४५४

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केतु, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के पक्ष में सहयोग, सुख, लाभ तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह किसी उच्च पद को पाता है। उसके शरीर में सौंदर्य एवं शक्ति दोनों का निवास रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक के सुख में भी वृद्धि होती है; संक्षेप में, ऐसा जातक, सुंदर, सुखी तथा भाग्यवान होता है।
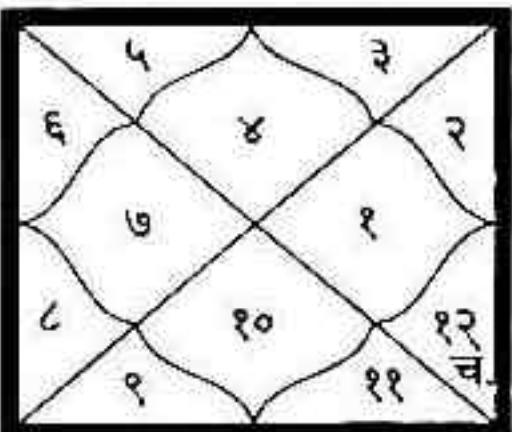
कर्क लग्न: दशमभाव: चंद्र

४५५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
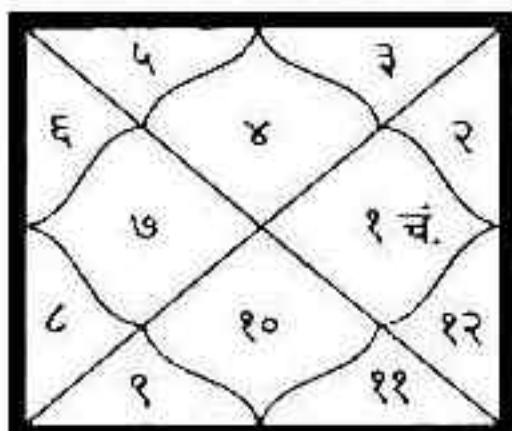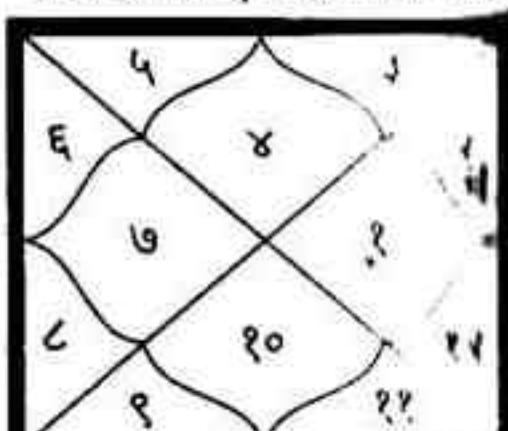
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक अपनी शारीरिक एवं मानसिक शक्ति द्वारा धन का विशेष लाभ प्राप्त करता है। वह शरीर से सुंदर तथा स्वस्थ भी होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने लाभ के लिए कटु शब्दों का प्रयोग भी करता है।

कर्क लग्न: एकादशभाव: चंद्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
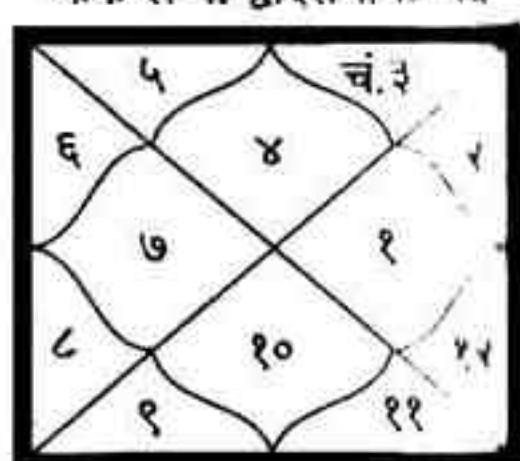
बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से लाभ प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को गुरु की धनु राशि में देखता है, अतः जातक शत्रुओं पर अपने शांतिमय व्यवहार से प्रभाव बनाए रहता है, परंतु मन में कुछ अशांति का अनुभव भी करता है। ऐसा व्यक्ति शरीर का दुबला-पतला होता है।

कर्क लग्न: द्वादशभाव: चंद्र
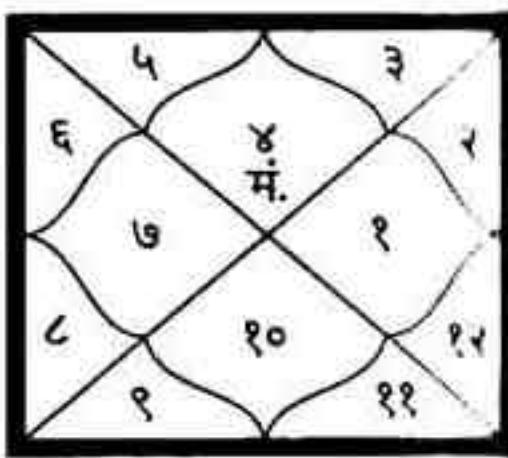
'कर्क' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा विद्या, संतान, राज्य एवं पिता के सुख में भी असंतोष बना रहता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख प्राप्त होता है। सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्रीपक्ष में असंतोष के साथ वृद्धि होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। आठवीं शत्रुदृष्टि में अष्टमभाव को देखने के कारण दैनिक जीवन में कठिनाइयां आती हैं तथा पुरातत्त्व का सामान्य लाभ होता है।

कर्क लग्न: प्रथमभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

४५९

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुंब का पर्याप्त सुख मिलता है। उसे पिता तथा राज्य से लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अत: संतान एवं विद्या की शक्ति प्राप्त होने पर भी कुछ परेशानियों का अनुभव होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से आयु स्थान को देखने के कारण आयु तथा पुरातत्त्व के लाभ में कुछ कमी रहती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से जातक के भाग्य, धर्म तथा यश की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: तृतीयभाव: मंगल

४६०
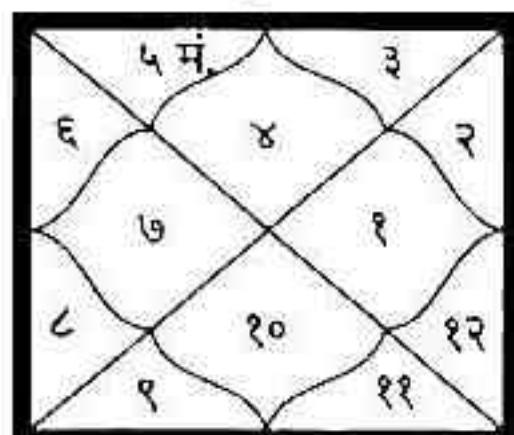
तीसरे सहोदर एवं पराक्रम भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का पराक्रम बढ़ता है तथा भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है। साथ ही विद्या तथा संतान की शक्ति भी मिलती है। यहां से मंगल सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: जातक बुद्धि-बल से भाग्यशाली होता है तथा धर्म और यश को प्राप्त करता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सहयोग, सफलता तथा सम्मान की प्राप्ति होती है तथा चौथी मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: चतुर्थभाव: मंगल

४६१

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा भवन संबंधी सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में भी सफलता मिलती है। अत: स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ एवं उन्नति का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सहयोग, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से धन का लाभ भी प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी तथा सफल जीवन व्यतीत करता है।
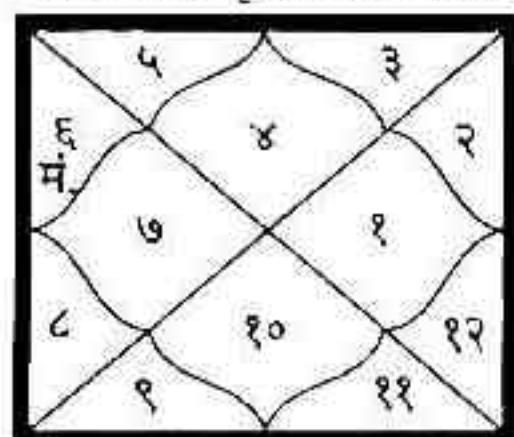
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
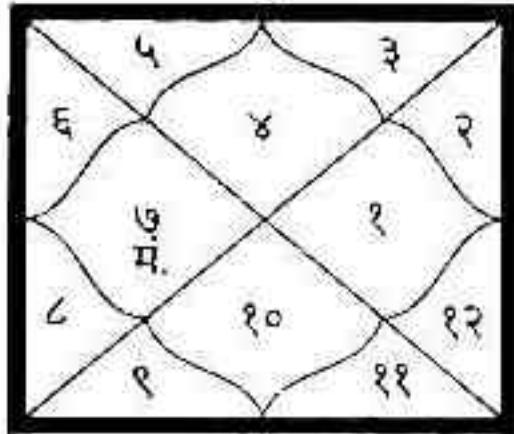
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान का सुख प्राप्त होता है तथा मान-सम्मान एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। चौथी शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण कुछ कमी तथा असंतोष के साथ आयु-पुरातत्त्व एवं दैनिक जीवन के सुख का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ प्राप्ति के लिए दिमागी परिश्रम अधिक करना पड़ता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से यश, धन तथा सफलता की प्राप्ति होती है।

कर्क लग्न: पंचमभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
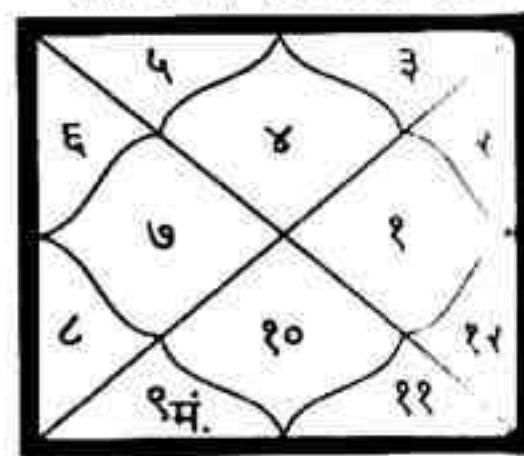
छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा विद्या, बुद्धि एवं संतान का भी सुख मिलता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः बुद्धियोग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक संबंध बनते हैं और आठवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य, स्वास्थ्य, सुख तथा शांति में कुछ कमी बनी रहती है।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को कई सुंदर स्त्रियों का संयोग प्राप्त होता है, परंतु उनसे कुछ मतभेद भी रहता है और व्यवसाय के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। इसके साथ ही विद्या, बुद्धि एवं संतान की शक्ति भी मिलती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय की शक्ति श्रेष्ठ रहती है तथा इनसे सुख, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं नीचदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी रहती है तथा घरेलू सुख में कुछ कठिनाइयां आती हैं। आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक की धन-संचय शक्ति प्रबल रहती है तथा वाणी में भी विशेष प्रभाव पाया जाता है।
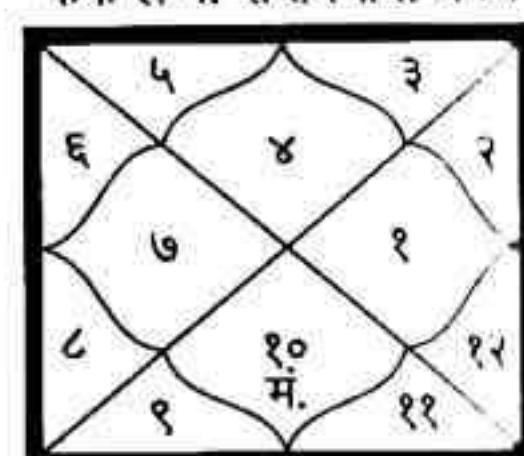
कर्क लग्न: सप्तमभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: अष्टमभाव: मंगल

४६५

आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक आयु तथा पुरातत्त्व के संबंध में कुछ लाभ मिलेगा, पिता, राज्य, व्यवसाय, विद्या, बुद्धि तथा संतान के में कुछ हानि उठानी पड़ेगी। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: परिश्रम द्वारा प्राप्त होगा। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने की वृद्धि होगी तथा कुटुंब का सुख मिलेगा। आठवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम तथा भाई के सुख में वृद्धि होगी एवं कुटुंब का सुख भी मिलेगा।
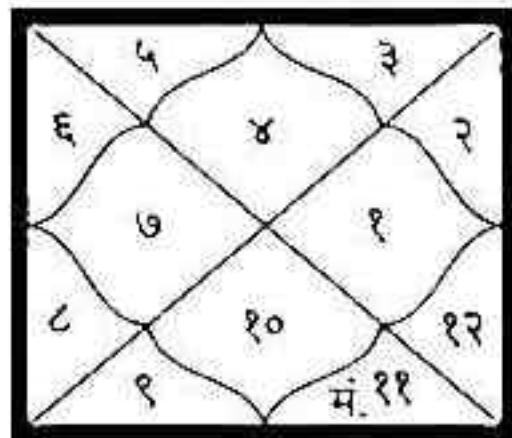
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: मंगल

४६६

नवें त्रिकोण एवं भाग्य भवन में अपने मित्र गुरु की राशि पर स्थित 'मंगल' के प्रभाव से जातक के भाग्य उन्नति होती है तथा विद्या-बुद्धि संतान, पिता एवं राज्य सुख तथा सम्मान प्राप्त होता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ रहेगा। सातवीं दृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन का श्रेष्ठ मिलेगा तथा पराक्रम को वृद्धि होगी तथा आठवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असंतोष एवं कठिनाइयों के साथ सफलता प्राप्त होगी। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: दशमभाव: मंगल

४६७
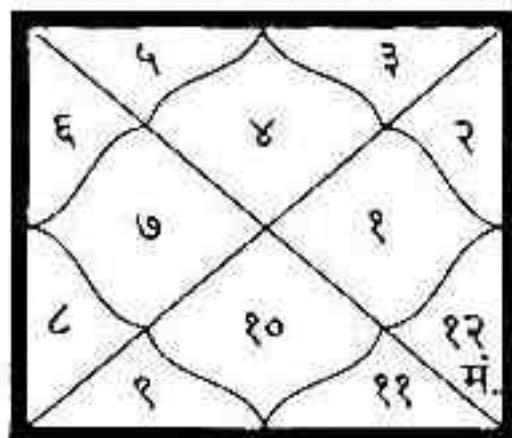
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में मेष राशि पर स्थित स्वक्षेत्री मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश तथा धन की प्राप्ति होती है। यहां से मंगल आठवीं दृष्टि से अपनी ही वृश्चिक राशि में पंचमभाव को भी देखता है, अत: संतान, एवं विद्या बुद्धि का श्रेष्ठ लाभ होता है तथा उच्च पद की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति एवं कानून का ज्ञाता भी होता है। चौथी नीचदृष्टि से मित्र चंद्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी तथा दुर्बलता रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि-भवन के सुख में कुछ असंतोष एवं त्रुटिपूर्ण सफलता मिलती है।
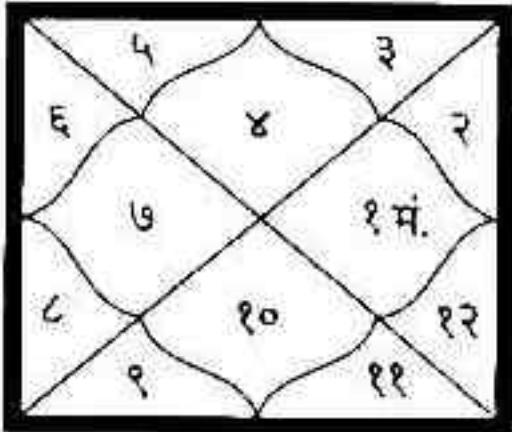
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः एकादशभावः मंगल

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है, परंतु धन का लाभ पर्याप्त मात्रा में होता है, साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय से भी लाभ होता है। यहां से सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखते के कारण विद्या, बुद्धि तथा संतान की शक्ति प्राप्त होती है, जिससे लाभ के साधनों में वृद्धि होती है तथा राज्य के द्वारा सम्मान एवं सफलता मिलती है। चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब का सुख मिलता है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में प्रभाव बढ़ता है तथा उन पर विजय प्राप्त होती रहती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, योग्य, विद्वान्, बुद्धिमान्, विजयी तथा सफल होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः द्वादशभावः मंगल
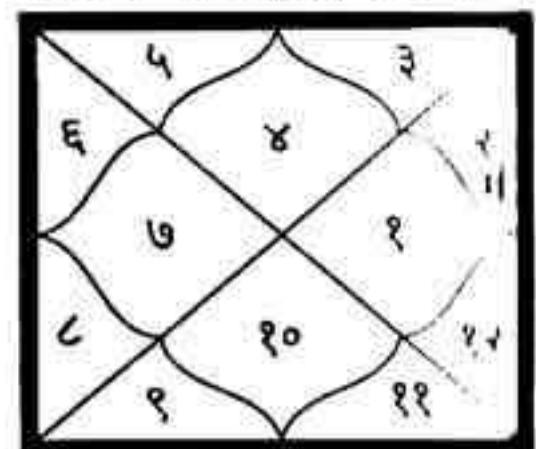
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सम्मान तथा सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही राज्य, पिता, संतान, विद्या-बुद्धि एवं प्रतिष्ठा के क्षेत्र में कमी का अनुभव होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। परंतु ऐसे जातक की बुद्धि में कुछ भ्रम तथा मस्तिष्क में परेशानी भी बनी रहती है।

'कर्क' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः प्रथमभावः बुध
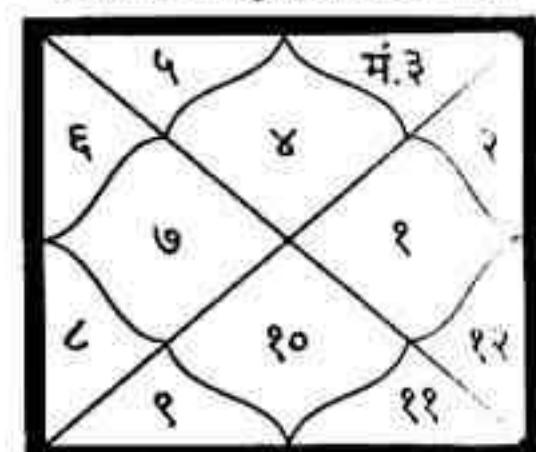
पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक के शरीर में कुछ दुर्बलता रहती है तथा भाई-बहन के सुख में कमी आती है। साथ ही पराक्रम एवं प्रभाव में वृद्धि होती है। खर्च खूब होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः पुरुषार्थ शक्ति द्वारा जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है, परंतु सामान्य त्रुटियां भी बनी रहती है।
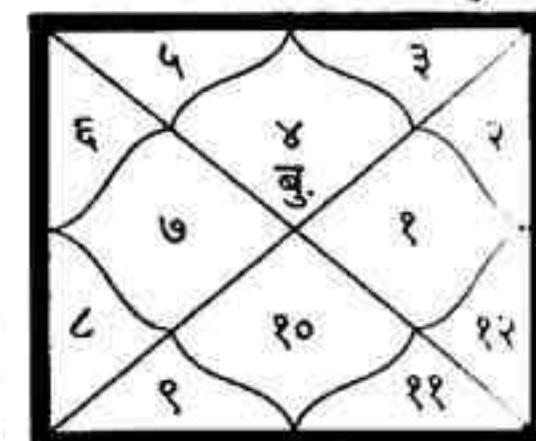
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

४७१

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक धन संग्रह का पूर्ण प्रयत्न करता है, परंतु वह संचय नहीं कर पाता, साथ ही जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती है तथा पराक्रम में कुछ वृद्धि होती है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु का सुख प्राप्त होता है, परंतु पुरातत्त्व का लाभ अधूरा रहता है। ऐसे जातक का दैनिक जीवन सुखपूर्ण तथा प्रभावयुक्त बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः तृतीयभावः बुध

४७२
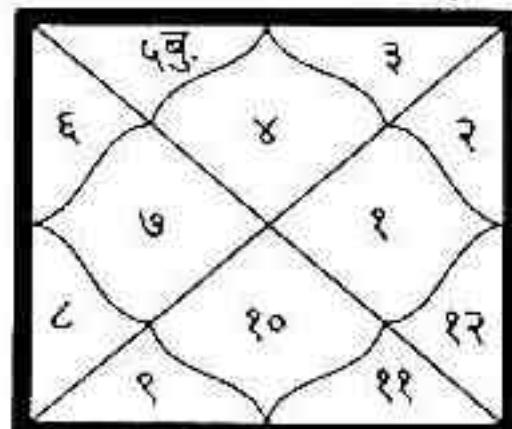
तीसरे पराक्रम एवं भाई के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित स्वक्षेत्री तथा उच्च के बुध के प्रभाव से जातक के पराक्रम में तो वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख में कुछ कमी बनी रहती है, क्योंकि बुध व्ययेश भी है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र गुरु की मीन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक का भाग्य कमजोर बना रहता है तथा धर्म के संबंध में भी कुछ त्रुटि बनी रहती है। ऐसे व्यक्ति के यश में भी कमी आ जाती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः चतुर्थभावः बुध

४७३

चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि-भवन में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है। परंतु भाई-बहन और बाहरी स्थानों के संबंध में सुख प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः कुछ त्रुटियों के साथ जातक को पिता के स्थान से शक्ति मिलती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी सामान्य सफलता प्राप्त होती है।
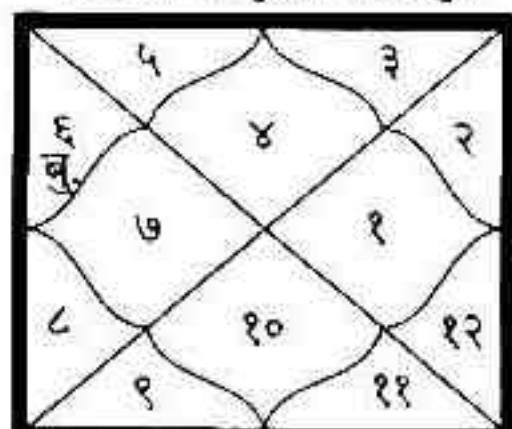
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
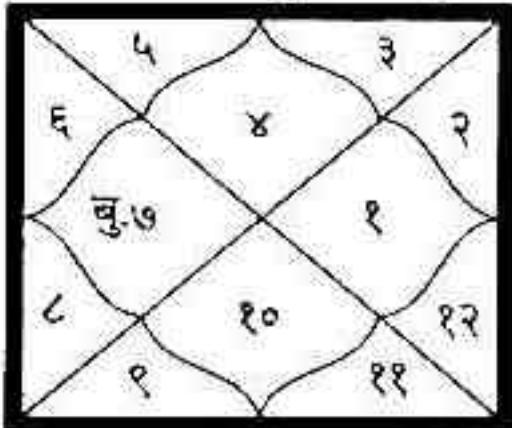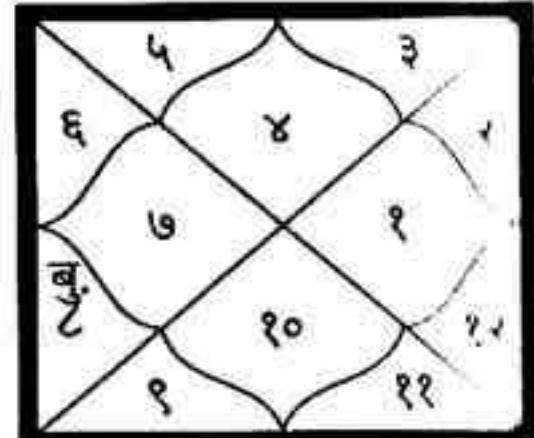
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सामान्य त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विवेक द्वारा खर्च चलाने में सफल होता है तथा हिम्मत एवं बुद्धि का धनी रहता है। यहां से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः उसे बुद्धि-बल द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी सफलता मिलती है।

कर्क लग्न: पंचमभाव: बु॰।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्टभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
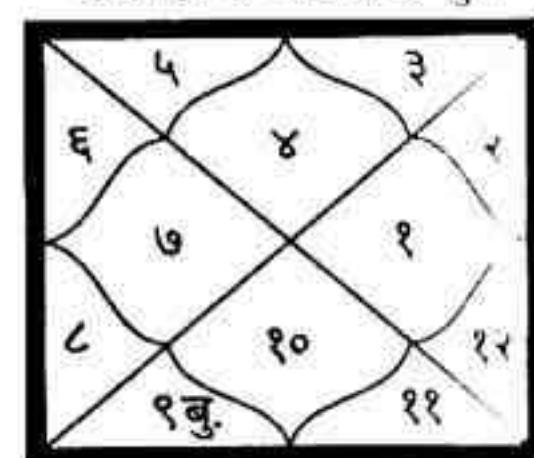
छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में कुछ नम्रता तथा शांति द्वारा सफलता प्राप्त करता है। साथ ही उसके भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम में भी कुछ कमजोरी बनी रहती है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च कम करने का प्रयत्न करने पर भी खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से संबंध सामान्य बना रहता है।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: बु॰।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए
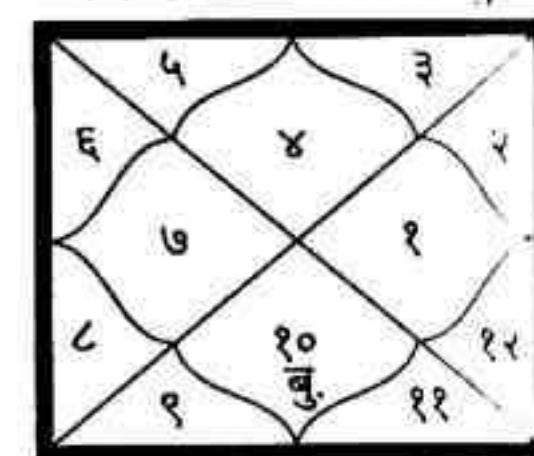
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को स्त्री का सुख प्राप्त होता है तथा व्यवसाय में भी सफलता मिलती है। परंतु बुध के व्ययेश होने के कारण कुछ असंतोष भी बना रहता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में शक्ति एवं दुर्बलता दोनों का ही प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक खर्च अधिक करता है तथा घर के भीतरी एवं बाहरी संबंधों एवं परिश्रम के द्वारा उन्नति भी करता है।

कर्क लग्न: सप्तमभाव: बु॰।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में कुछ कमियों के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही भाई बहनों के सुख तथा पराक्रम में कमी आ जाती है। कठिन परिश्रम, विवेक तथा बाहरी स्थानों के संबंध द्वारा जातक अपना खर्च चलाता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः उसे धन का लाभ भी होगा परंतु बुध के व्ययेश होने के कारण प्रत्येक क्षेत्र में कुछ कमियां भी बनी रहेंगी।

कर्क लग्न: अष्टमभाव: बुध

४७७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
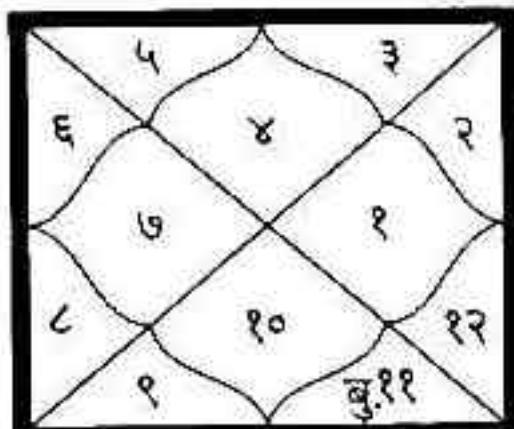
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में त्रुटिपूर्ण सफलता मिलेगी। इस प्रकार भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी अपूर्ण लाभ रहेगा। बाहरी स्थानों के संबंध से सामान्य लाभ उठाते हुए सामान्य खर्च को चलाने की शक्ति प्राप्त होगी। यहां से बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी कन्या राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक भाग्य के समक्ष पुरुषार्थ को विशेष मानेगा तथा बुध के व्ययेश होने के कारण उसकी भाग्योन्नति में बाधाएं भी आती रहेंगी।

कर्क लग्न: नवमभाव: बुध

४७८

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित व्ययेश के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अपूर्ण सफलता प्राप्त होगी। परंतु भाई बहन के सुख एवं पराक्रम की शक्ति विशेष रहेगी। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम एवं व्यय की शक्ति द्वारा सुख प्राप्त करेगा और माता, भूमि, मकान आदि का सामान्य लाभ रहेगा।
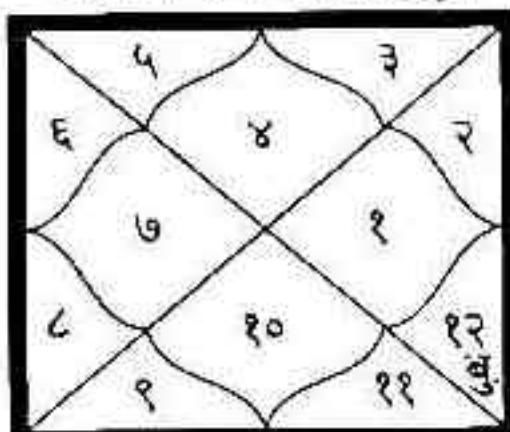
कर्क लग्न: दशमभाव: बुध

४७९

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: एकादशभाव: बुध

४८०
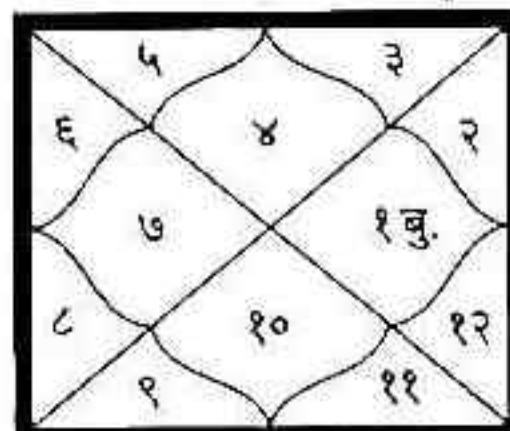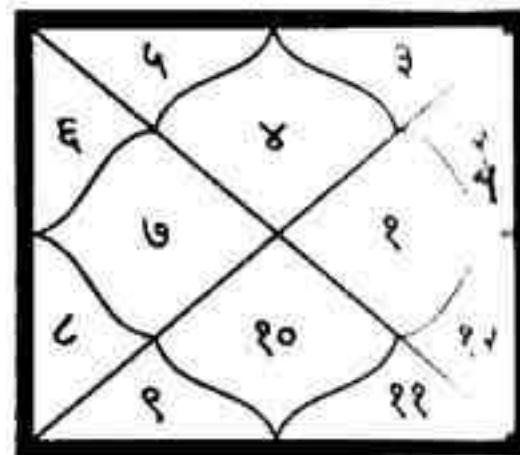
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश बुध के प्रभाव से जातक की आमदनी तो खूब होगी, बाहरी स्थानों के संबंध से भी लाभ होगा, परंतु खर्च अधिक बना रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम का लाभ होता रहेगा। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में भी अपूर्ण लाभ प्राप्त होगा। परंतु ऐसा जातक अपनी बुद्धि, विवेक एवं वाणी के बल पर लाभ उठाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: द्वादशभाव: बुध

४८१
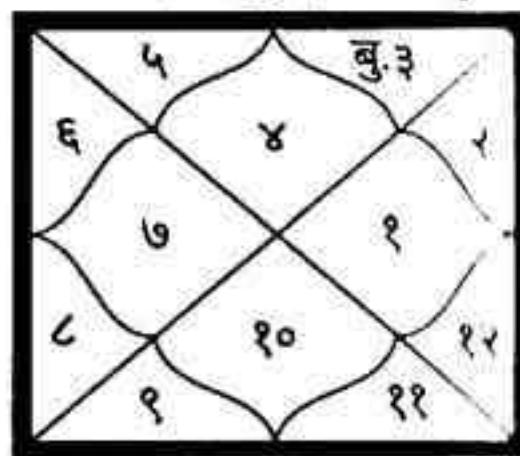
बारहवें व्ययभाव में अपनी ही मिथुन राशि में स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक का व्यय अधिक होगा तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता रहेगा। साथ ही उसे भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अत: उसे अपने शांत स्वभाव पुरुषार्थ एवं खर्च की शक्ति द्वारा शत्रु-पक्ष में सामान्य सफलता प्राप्त होगी और वह अपने खर्च करने के बल पर अनेक कठिनाइयों पर नियंत्रण बनाए रहेगा।
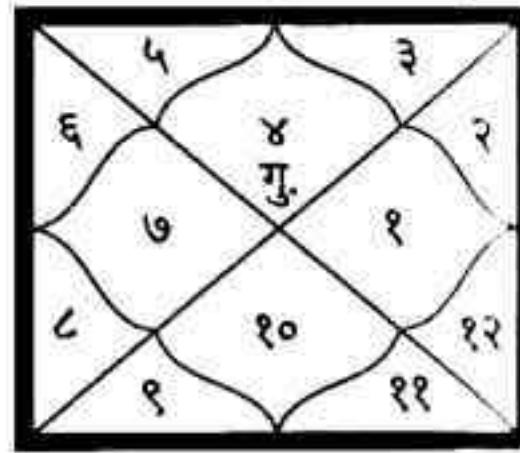
'कर्क' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: प्रथमभाव: गुरु

४८२

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि का पूर्ण सुख भी प्राप्त होता है। सातवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री-पक्ष में कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा दैनिक खर्च में कभी-कभी कठिनाइयां पड़ती हैं। नवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को स्वक्षेत्र में देखने के कारण भाग्य की शक्ति प्रबल रहती है तथा धर्म का भी यथावत् पालन होता है। संक्षेप में ऐसा जातक विद्वान बुद्धिमान, सज्जन, उदार, विनम्र, आत्मबली तथा शत्रुपक्ष पर विजय पाने वाला होता है।
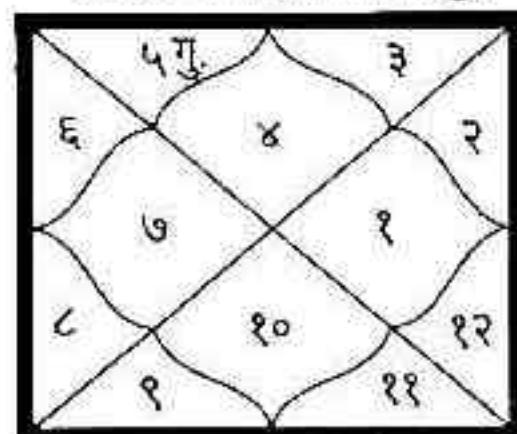
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब का सुख पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से षष्ठभाव को स्वराशि में देखता है, अतः धन की शक्ति से शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा दैनिक जीवन में कुछ कठिनाइयां आती हैं। नवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय द्वारा धन का लाभ होता है तथा ननिहाल पक्ष से भी लाभ मिलता है। ऐसा जातक यशस्वी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: गुरु
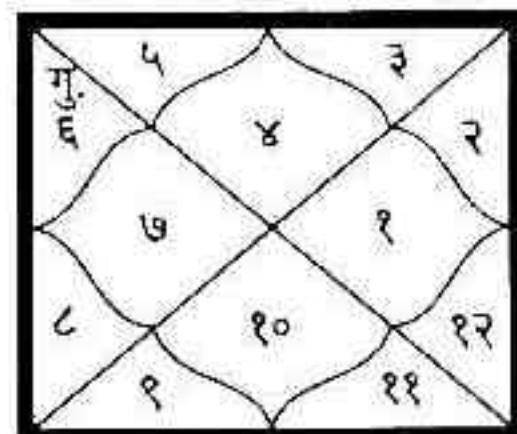
४८३

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान पर अपने मित्र बुध की कन्या राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम में वृद्धि प्राप्त होती है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ हानि तथा क्लेश रहता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म में निष्ठा बनी रहती है। नवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। ऐसा जातक शत्रुजयी, धर्मात्मा, उन्नतिशील, पराक्रमी तथा भाग्यवती होता है, परंतु गुरु के शत्रु स्थानाधिपति होने के कारण उसे कभी-कभी कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ता है।
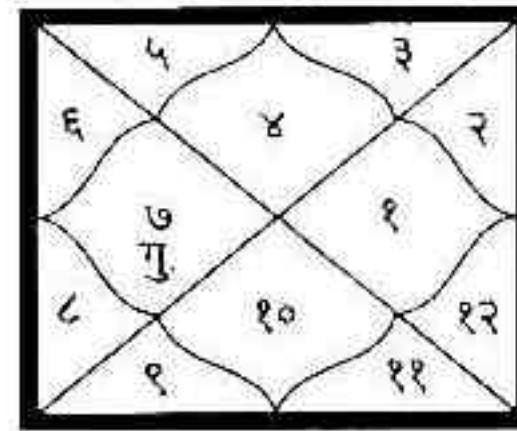
कर्क लग्न: तृतीयभाव: गुरु

४८४

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख के भवन में अपने शत्रु की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, मातृभूमि स्थान तथा सुख के पक्ष में कुछ असंतोष के साथ सफलता प्राप्त होती है। साथ ही शत्रु पक्ष एवं झगड़े के मामलों मे शांतिपूर्ण तरीकों के अपनाने पर सफलता मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु के क्षेत्र में सामान्य असंतोष रहता है, तथा पुरातत्त्व का भी कुछ

कर्क लग्न: चतुर्थभाव: गुरु

४८५

कमी के साथ लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, [illegible]
एवं व्यवसाय के पक्ष में सफलता मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने [illegible]
अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

कर्क लग्नः पंचमभावः गुरु

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा संतान के पक्ष में विशेष सफलता मिलती है तथा शत्रु पक्ष पर भी प्रभाव प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अतः बुद्धि और संतान के सहयोग से भाग्य तथा धर्म की वृद्धि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण लाभ के क्षेत्र में कुछ असंतोष के साथ असफलता मिलती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सौंदर्य, आत्मबल एवं सुयश प्राप्त होता है। गुरु के षष्ठेश होने के कारण जातक को प्रत्येक क्षेत्र में कुछ परेशानियां तो अनुभव होती हैं, परंतु सफलता भी अवश्य मिलती है।
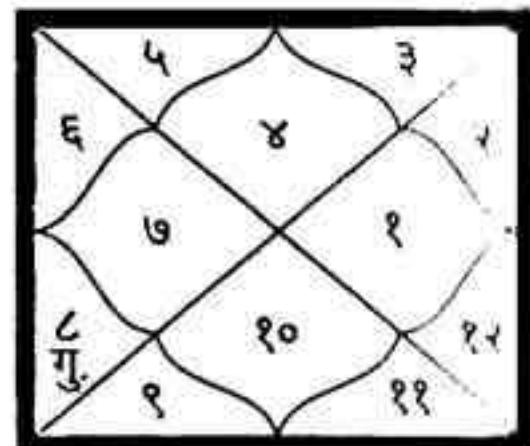
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उस 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

कर्क लग्नः षष्ठभावः गुरु

छठे शत्रु स्थान में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर अपना अत्यधिक प्रभाव रखने वाला तथा यशस्वी होता है, परंतु गुरु के षष्ठेश होने से भाग्योन्नति में कुछ परेशानियां भी आती हैं। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सफलता, लाभ एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, यशस्वी तथा प्रभावशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
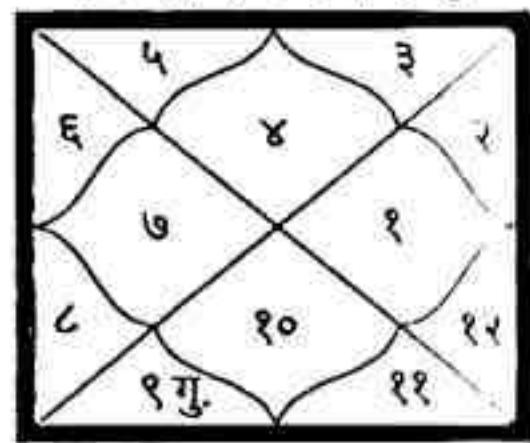
कर्क लग्नः सप्तमभावः गुरु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि के मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा शत्रुपक्ष से भी व्यवसाय को कुछ हानि पहुंचती है। यहां से गुरु ५वीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त
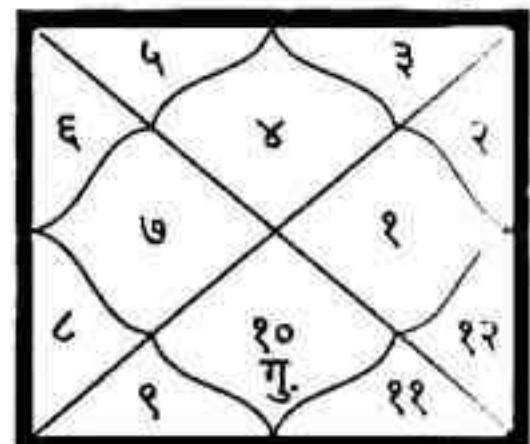
है। सातवीं उच्चदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर के सौंदर्य एवं प्रभाव में होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम सफलता प्राप्त होती है। परंतु गुरु के षष्ठेश होने के कारण सभी क्षेत्रों में सामान्य कठिनाइयां आती रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: अष्टमभाव: गुरु

४८९

अष्टम, आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शनि कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु तथा के पक्ष में कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है, शत्रुपक्ष की ओर से अशांति एवं भाग्य-पक्ष में दुर्बलता रहती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है तथा स्थानों के संबंध को देखने से लाभ भी होता है। सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब की वृद्धि है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण तथा भूमि आदि का सुख कुछ कमी के साथ प्राप्त होता है।
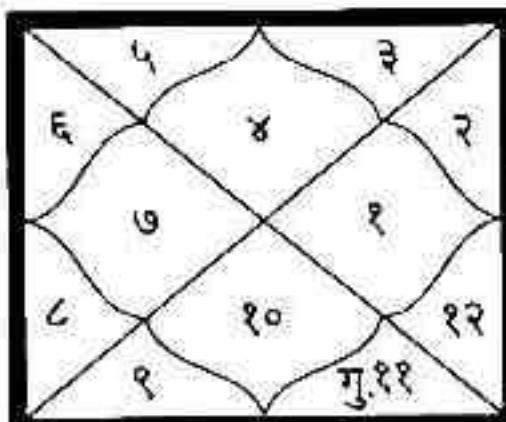
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: नवमभाव: गुरु

४९०

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपनी ही राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा की उन्नति होती है। यहां से गुरु पांचवीं उच्चदृष्टि से मित्र में प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य एवं की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को के कारण भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम वृद्धि होती है। नवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान, बुद्धिमान, सज्जन, धनी, पराक्रमी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: दशमभाव: गुरु

४९१
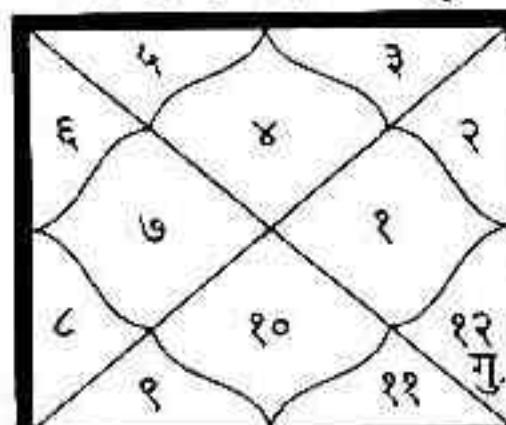
दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा पूर्ण सहयोग, सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन तथा कुटुंब की शक्ति से संपन्न रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से कुछ असंतोष के साथ माता भूमि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है तथा नवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर भारी
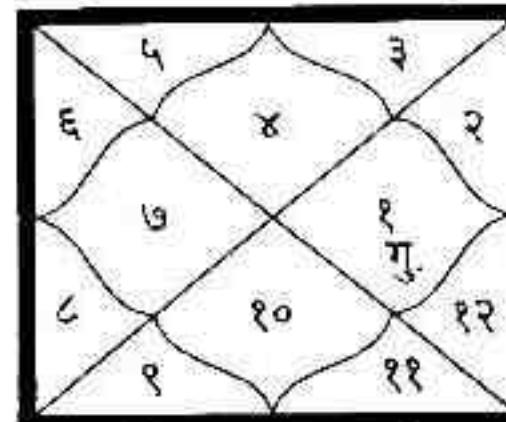
प्रभाव बना रहता है। ऐसा जातक परिश्रम तथा झगड़ों के योग से भाग्योन्नति एवं ... करता है तथा भाग्यशाली बनता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त करता है। उसे शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है और वह धर्म का पालन भी करता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को सामान्य वैमनस्य के साथ भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त रहेगी तथा पराक्रम में वृद्धि होगी। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलेगी एवं नवीं नीचदृष्टि से सप्तमभाव को देखने कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कष्ट, हानि तथा असंतोष बना रहेगा। सामान्यतः ऐसा जातक अवश्य धनी होता है।

कर्क लग्नः एकादशभावः गुरु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
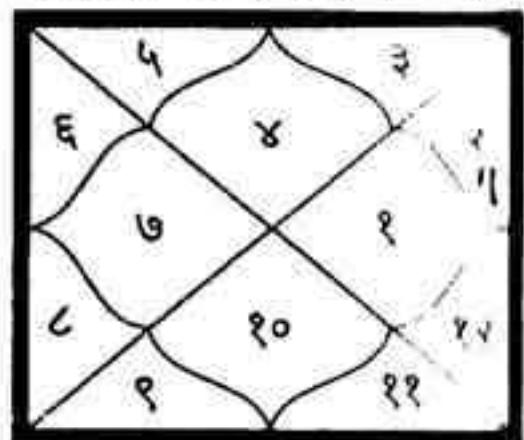
बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी मिलता है। परंतु भाग्य-स्थान में कमी रहती है और धर्म का पालन भी यथावत् नहीं हो पाता। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता एवं भूमि-भवन के पक्ष में परिश्रम द्वारा सफलता मिलती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष मे सामान्य सफलता प्राप्त होती है।

कर्क लग्नः द्वादशभावः गुरु

'कर्क' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
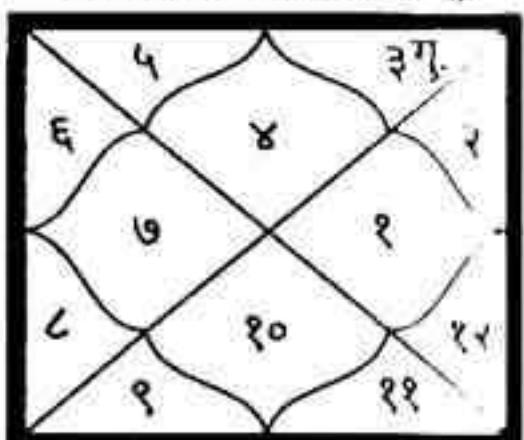
पहले केंद्र तथा शरीर में अपने चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौंदर्य, सुख एवं चातुर्य का लाभ होता है, साथ ही माता एवं भूमि-संपत्ति का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी खूब लाभ प्राप्त होता है तथा भोगादिक में रुचि बनी रहती है। संक्षेप में, ऐसा जातक सुखी, धनी, भू-संपत्तिवान, भोगी, ऐश्वर्यशाली तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

कर्क लग्नः प्रथमभावः शुक्र
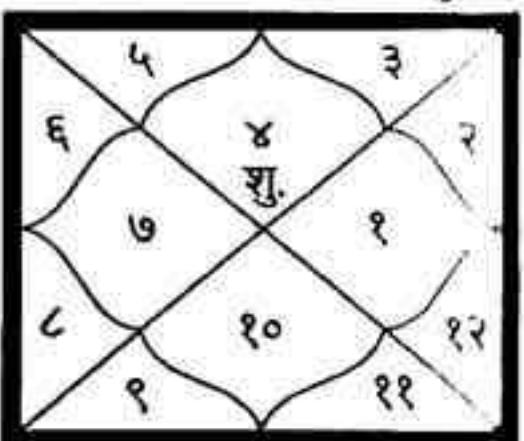
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को सामान्य संतोष के साथ धन कुटुंब का सुख प्राप्त होता है। उसे भूमि तथा मकान आदि का सुख भी मिलता है, परंतु माता के सुख में कुछ कमी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा जातक धनी, प्रतिष्ठित तथा सुखी होता है।

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

४९५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
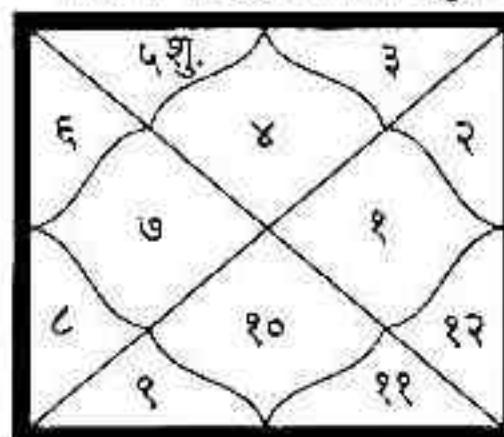
तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम में कमी रहती है, साथ ही माता के सुख में भी त्रुटि का अनुभव होता है। यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा जातक अपनी भीतरी कमजोरियों को छिपाकर बाहर से हिम्मत प्रकट करने वाला, धनी, सुखी तथा धार्मिक विचारों का होता है।

कर्क लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

४९६

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख-भवन में अपनी तुला राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, भवन तथा सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। उसकी आमदनी में वृद्धि होती है और वह धनवान बना रहता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी सुख, सहयोग, सम्मान, सफलता तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक बड़ा होशियार, चतुर, प्रतिष्ठित, सुखी तथा धनी होता है।
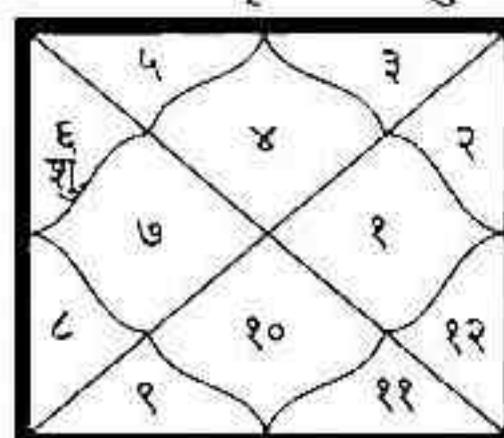
कर्क लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

४९७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: पंचमभाव: शुक्र
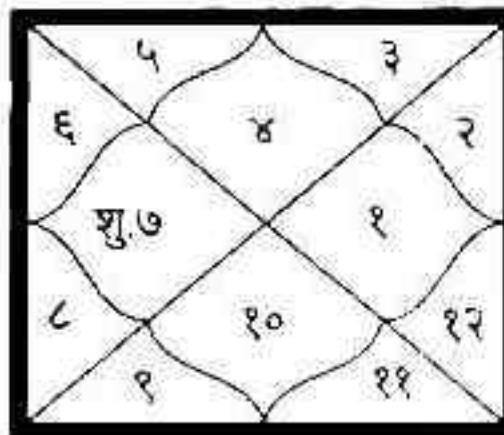
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि व संतान के भवन में अपने सामान्य मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को विद्या-बुद्धि तथा संतान का यथेष्ठ लाभ होता है। वह धन, सुख, सफलता एवं चातुर्य को प्राप्त करता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: बुद्धि-बल द्वारा जातक को धन का यथेष्ठ लाभ होता है। साथ ही उसे माता, भूमि, भवन आदि का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा जातक बड़ा समझदार, वार्तालाप करने में कुशल तथा प्रतिष्ठित होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: शुक्र
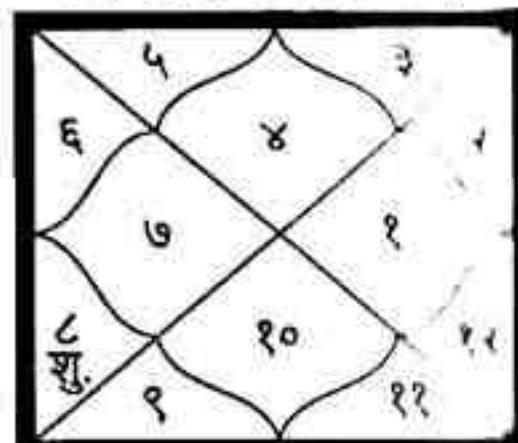
छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष में सफलता प्राप्त होती है, परंतु माता एवं भूमि-भवन के सुख में कुछ कमी तथा अशांति का योग उपस्थित होता है। इसी प्रकार लाभ के मार्ग में भी अधिक परिश्रम तथा परतंत्रता का सा योग बनता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: जातक बहुत खर्चीले स्वभाव का होता है और उसे बाहरी स्थानों से सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा दैनिक आमदनी एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। यहां से जातक अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक-सौंदर्य, चातुर्य एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, यशस्वी, गंभीर, बुद्धिमान, चतुर, भोगी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।
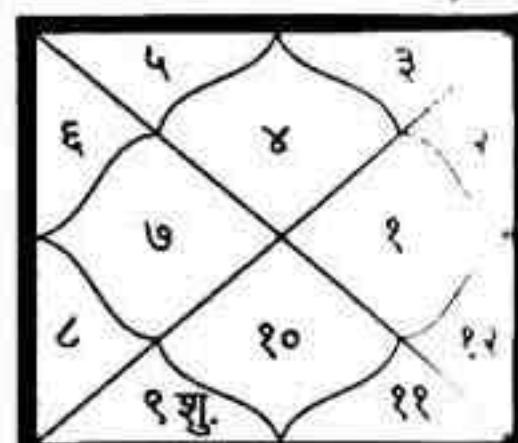
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
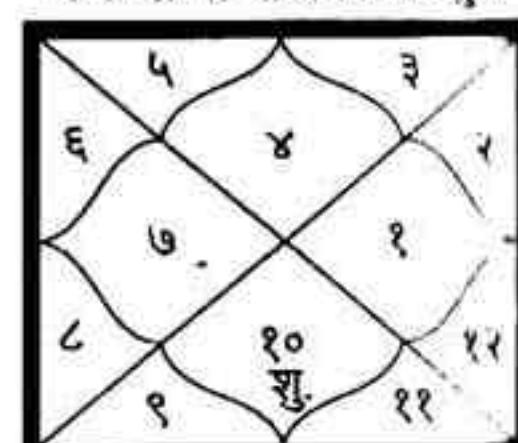
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक आयु पुरातत्त्व के क्षेत्र में शक्ति एवं सफलता प्राप्त करता परंतु माता एवं मातृभूमि के सुख में कमी आ जाती वह परदेश में रहकर उन्नति पाता है। घरेलू सुख-शांति भी कुछ कमी बनी रहती है। यहां से जातक सातवीं दृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक को धन- की चिंता नहीं रहती। उसे कुटुंब का सुख भी अल्प में मिलता है।
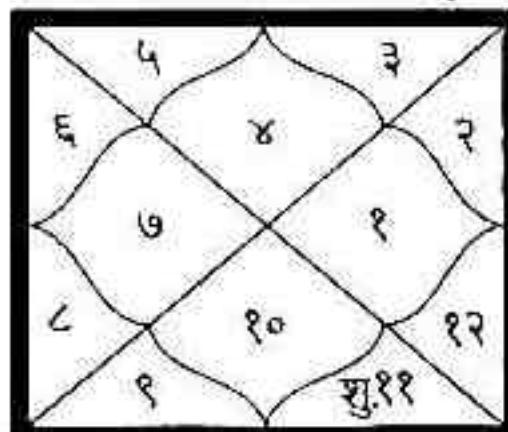
कर्क लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

५०१

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में विशेष वृद्धि होती है, ही माता, मकान, भूमि आदि का भी उत्तम सुख प्राप्त है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है। अत: जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमजोरी बनी रहती है तथा पराक्रम को भी वह भाग्य की तुलना में कम समझता है। ऐसा जातक भाग्यवादी, सुखी, तथा भाग्यशाली होता है।

कर्क लग्न: नवमभाव: शुक्र

५०२

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
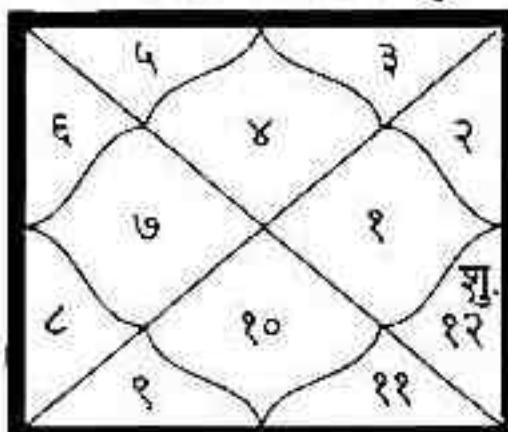
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा यथेष्ट सुख, सहयोग, सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता, भूमि एवं भवन का सुख भी पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होता है। ऐसा जातक गंभीर, चतुर, बुद्धिमान, ,सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा सौंदर्य-शृंगार का प्रेमी होता है।
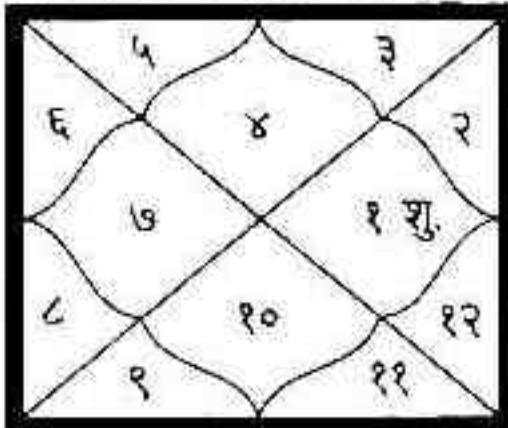
कर्क लग्न: दशमभाव: शुक्र
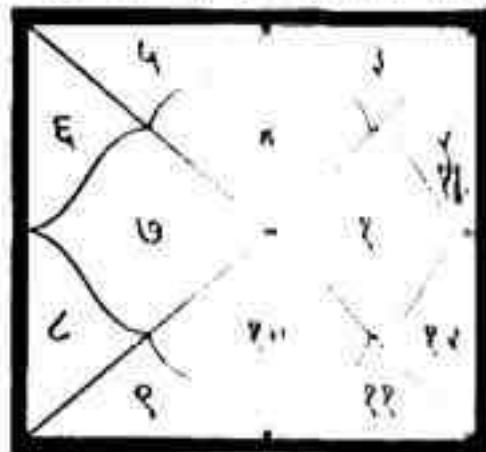
५०३

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक को आमदनी का श्रेष्ठ योग प्राप्त होता है। साथ ही मातृ-स्थान के सुख एवं भूमि-भवन आदि का भी लाभ होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के क्षेत्र में भी पूर्ण सफलता मिलती है। ऐसा जातक श्रेष्ठ वाणी बोलने वाला, योग्य, चतुर, समझदार, धनी, सुखी तथा अनेक प्रकार की विद्याओं में निपुण होता है।

कर्क लग्न: एकादशभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
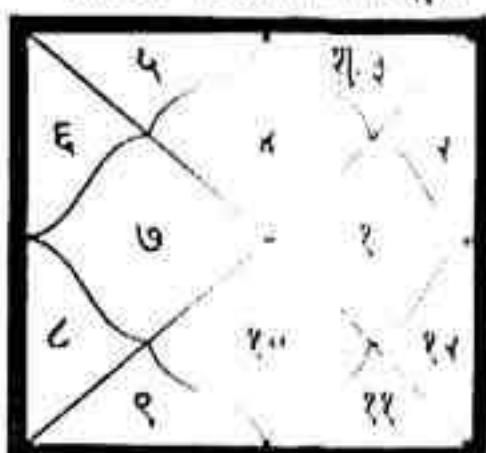
बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। साथ ही उसके माता के सुख में कमी आती है और उसे मातृभूमि से अलग जाकर रहना पड़ता है। भूमि, मकान आदि के सुख में भी कमी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है। अत: जातक शत्रुपक्ष में चतुराई तथा खर्च से काम लेकर सफलता प्राप्त करता है एवं प्रभाव को कायम रखता है,

कर्क लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

'कर्क' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
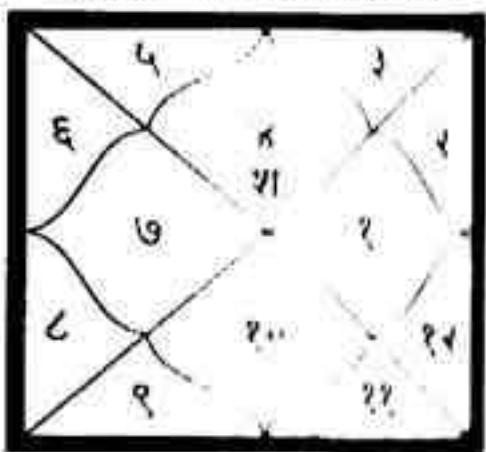
पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित अष्टमेष शनि के प्रभाव से जातक के शरीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी आती है तथा शरीर में कुछ रोग तथा परेशानी भी बनी रहती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहन का त्रुटिपूर्ण सुख प्राप्त होता है, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से सप्तमभाव के स्वक्षेत्र में देखने से स्त्री की शक्ति तो मिलेगी, परंतु उससे कुछ परेशानी भी रहेगी तथा व्यावसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होगी। दसवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता तथा राज्य के क्षेत्र में सफलता एवं सम्मान का लाभ रहेगा।

कर्क लग्न: प्रथमभाव: शनि

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्नः द्वितीयभावः शनि

५०७

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब के क्षेत्र में हानि उठानी पड़ती है। तीसरी उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि-भवन का सुख मिलता है। सातवीं दृष्टि से स्वर राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। दसवीं मित्रदृष्टि से एकादश भाव को देखने से परिश्रम द्वारा धन का लाभ होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक खर्चीले ढंग का जीवन व्यतीत करता है, परंतु धन की कमी बनी रहती है तथा पारिवारिक सुख में भी न्यूनता रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः तृतीयभावः शनि

५०८
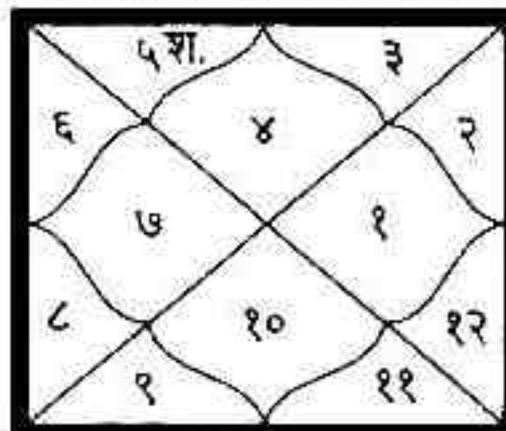
तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पुरुषार्थ की वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के द्वारा कुछ परेशानी मिलती है। यहां से तीसरी शत्रुदृष्टि से शनि पंचमभाव को देखता है, अतः संतान द्वारा कष्ट एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में कठिनाई एवं कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य के संबंध में परेशानी एवं धर्म के क्षेत्र में अरुचि रहती है। दसवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ मिलता है। ऐसी ग्रह-स्थिति वाला जातक कुछ क्रोधी स्वभाव का भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्नः चतुर्थभावः शनि

५०९

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख में कुछ परेशानी के साथ सुख एवं भूमि तथा मकान के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रुपक्ष में प्रभाव रहता है। सातवीं नीचदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिनाइयां आती हैं तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में परेशानी रहती है तथा घरेलू सुख के साधनों की वृद्धि के पक्ष में आलस्य बना रहता है।
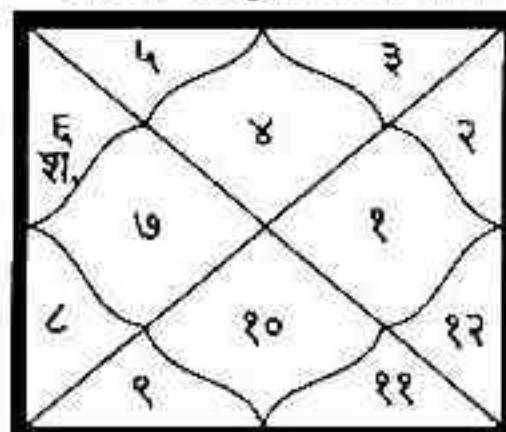
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: पंचमभाव: शनि
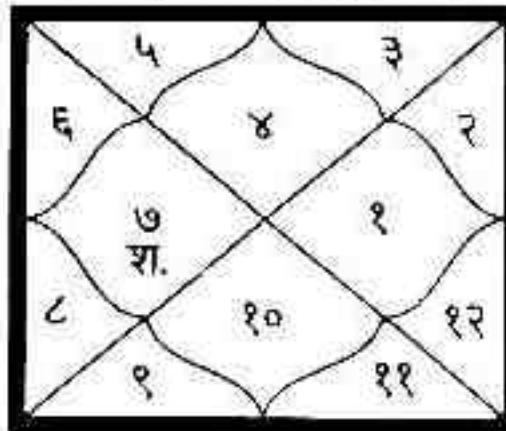
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि तथा संतान के भाव में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि में स्थित शनि के प्रभाव से जातक संतान एवं विद्या बुद्धि के पक्ष से परेशानी एवं चिंता का योग प्राप्त करता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से सप्तमभाव को स्वराशि में देखता है, अतः स्त्री बुद्धिमान मिलती है, परंतु उसके कारण भी थोड़ा-बहुत कष्ट बना रहता है। व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि के योग द्वारा सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी अच्छी रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय में कमी बनी रहती है तथा कुटुंब द्वारा भी कुछ परेशानी का अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: शनि
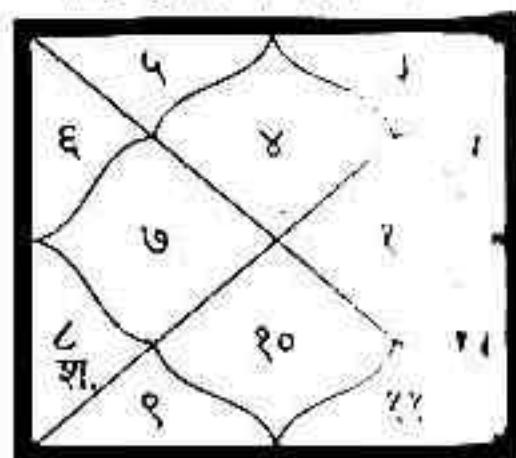
छठे शत्रु भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रुपक्ष में प्रभावशाली बना रहता है, परंतु स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में उसे कुछ परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्व का भी कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से लाभ मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम में वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के संबंध में वैमनस्ययुक्त सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कर्क लग्न: सप्तमभाव: शनि

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में स्वराशि मकर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता मिलती है तथा भोगादि के सुख भी खूब प्राप्त होते हैं। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अतः भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में त्रुटि रहती है तथा दसवीं उच्च एवं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान तथा घरेलू सुख में वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक कठिनाइयों के साथ उन्नति प्राप्त करता है।
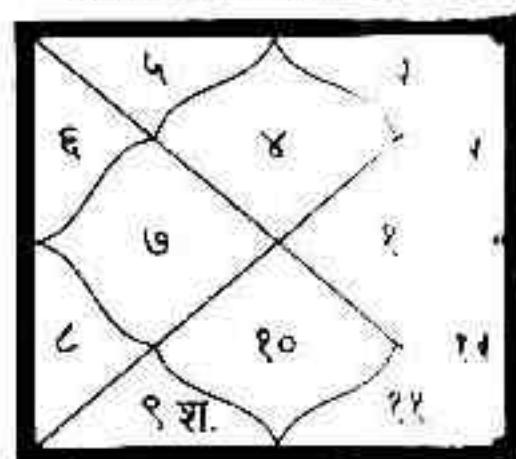
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
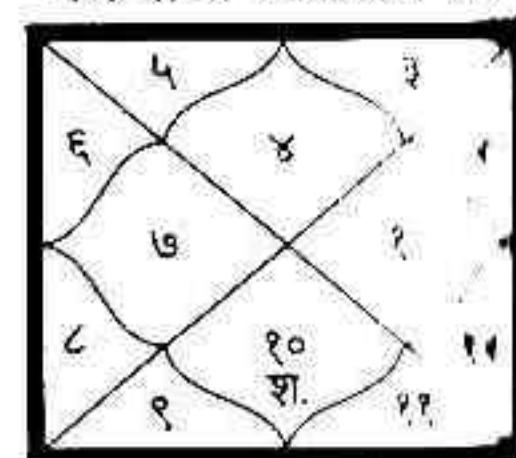
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी ही कुंभ पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है, परंतु स्त्री एवं साय के पक्ष में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी के संबंध से शक्ति मिलती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: जातक को , राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में परेशानी का अनुभव है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन- की शक्ति में कमी आती है तथा कौटुंबिक सुख त्रुटि रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान, विद्या तथा बुद्धि के में भी चिंता एवं कठिनाइयों का अनुभव होता है।
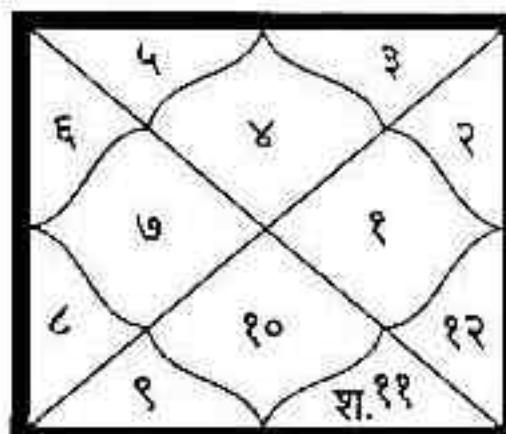
कर्क लग्न: अष्टमभाव: शनि

५१३

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु की राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयां बनी रहती परंतु आयु की वृद्धि होती है, पुरातत्त्व का साधारण लाभ होता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सुख मिलता यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता अत: लाभ अच्छा रहता है। सातवीं मित्रदृष्टि तृतीयभाव देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है, परंतु शनि के अष्टमेश होने से भाई-बहन के सुख में कुछ कमी रहती दसवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु-पक्ष में कठिनाइयों के बाद प्रभाव स्थापित होता है। आंतरिक रूप से कुछ कमजोर रहने पर प्रकट में ऐसा जातक बहुत भाग्यशाली समझा जाता है।

कर्क लग्न: नवमभाव: शनि

५१४

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
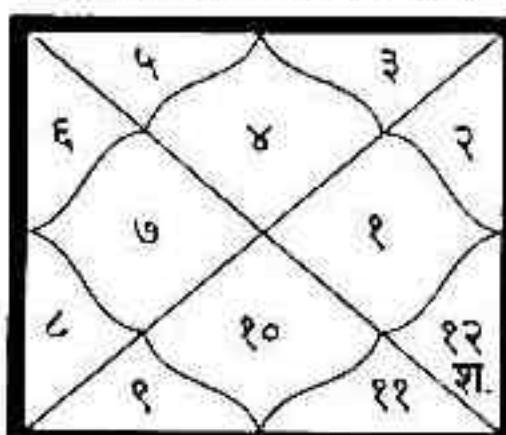
दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के भवन में अपने शत्रु की राशि पर स्थित नीच के प्रभाव से जातक को , राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परेशानियों का सामना पड़ता है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की भी कुछ हानि होती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों लाभ मिलता है। सातवीं उच्चदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है दसवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखने से तथा दैनिक रोजगार की अच्छी शक्ति मिलती है। ऐसा कुछ कमजोरियों के रहते हुए भी अपने सब कार्यों का ठीक से संचालन करता है सुखी एवं धनी प्रतीत होता है।
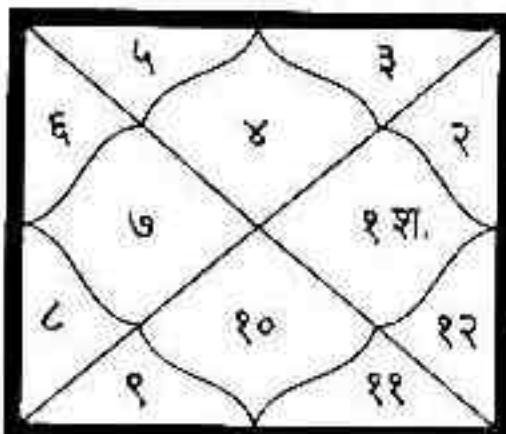
कर्क लग्न: दशमभाव: शनि

५१५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: एकादशभाव: शनि

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है तथा स्त्री एवं रोजगार का भी सुख मिलता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: शारीरिक-सौंदर्य में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि तथा संतान के पक्ष से कुछ कष्ट रहता है तथा दसवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की शक्ति बढ़ती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा जातक अधिक पढ़-लिख नहीं पाता, परंतु अपनी चतुराई, प्रपंच एवं परिश्रम द्वारा अपना तथा अपने परिवार का निर्वाह करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: द्वादशभाव: शनि

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री, व्यवसाय, आयु तथा पुरातत्त्व की शक्ति में हानि होती है। यहां से तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन तथा कुटुंब की ओर से चिंताएं बनी रहती हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि के षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से झंझट प्राप्त होती है, परंतु प्रभाव बना रहता है, दसवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्य एवं धर्मपालन में कठिनाई बनी रहती है। परंतु परेशानियों के बावजूद भी ऐसा जातक शानदार जीवन बिताता है।
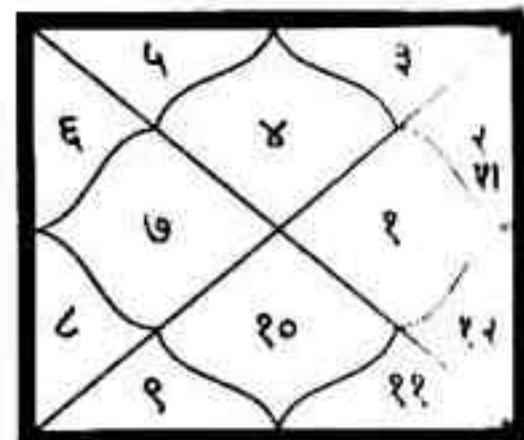
'कर्क' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: प्रथमभाव: राहु

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक-सौंदर्य में कमी आती है तथा हृदय में चिंताएं बनी रहती हैं, साथ ही उसे कभी-कभी मृत्युतुल्य कष्टों का भी सामना करना पड़ता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव तथा सम्मान को स्थिर बनाए रखने का प्रयत्न करता है तथा अपनी उन्नति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है, परंतु उसे स्वास्थ्य के संबंध में चिंतित बने रहना पड़ता है।
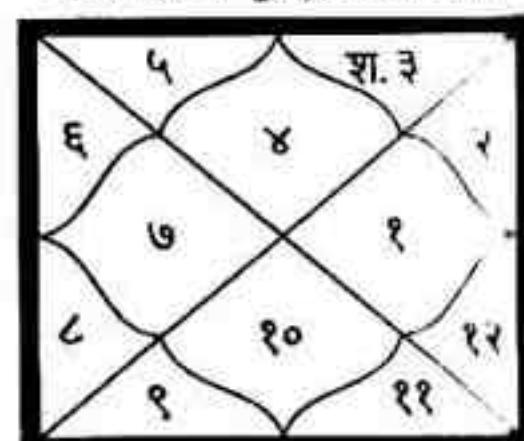
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: राहु

५१९
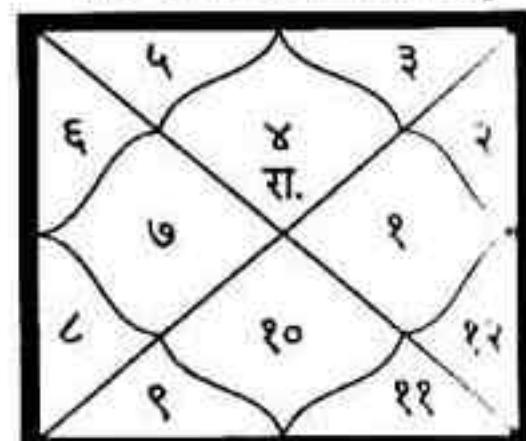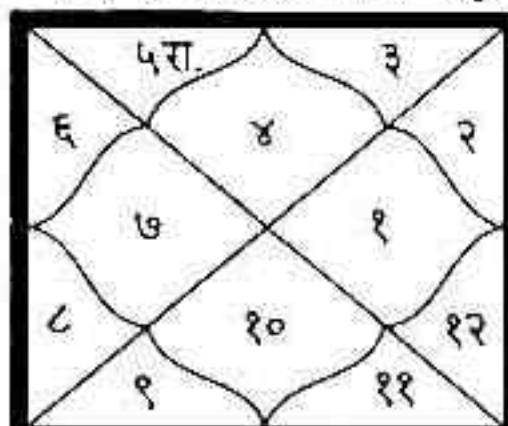
दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन एवं कुटुंब के सुख में हानि उठानी पड़ती है। वह गुप्त युक्तियों तथा कठिन परिश्रम के बल पर धन वृद्धि का प्रयत्न करता है तथा कभी-कभी उसे आकस्मिक धन लाभ भी हो जाता है। ऐसा जातक अपनी प्रतिष्ठा की वृद्धि के लिए चिंतित रहता है तथा बड़ा हिम्मती और परिश्रमी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: तृतीयभाव: राहु

५२०
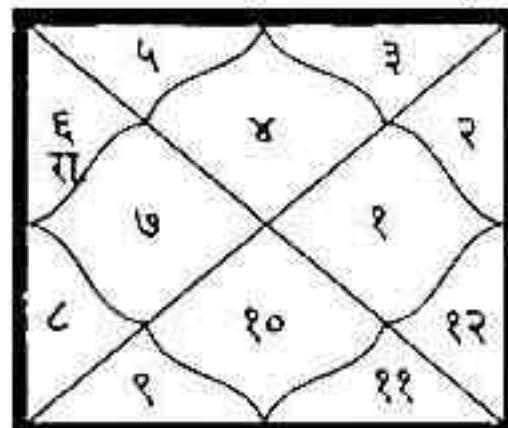
तीसरे पराक्रम एवं सहोदर के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम की बहुत वृद्धि होती है तथा कुछ परेशानियों के साथ भाई-बहन का सुख भी प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने स्वार्थ को सिद्ध करने के लिए गुप्त युक्तियों, कठिन परिश्रम तथा पुरुषार्थ से काम लेता है। वह भीतरी रूप से कमजोर होने पर भी ऊपरी दृष्टि से बड़ा हिम्मतवर बना रहता है तथा अपने प्रभाव को स्थिर रखने के लिए उद्योगशील रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: चतुर्थभाव: राहु

५२१
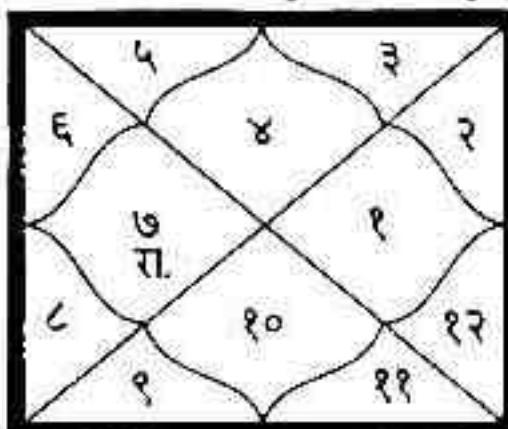
चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कुछ कमी रहती है। इसी प्रकार भूमि, भवन तथा जन्मस्थान का सुख भी न्यून मात्रा में प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति जीवन में सफलता पाने के लिए गुप्त युक्तियों, चतुराइयों तथा कठिन परिश्रम से काम लेता है, परंतु कभी-कभी असफलताओं के कारण विशेष कष्ट भी पाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, संतान तथा विद्या-बुद्धि के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट होता है, विद्या ग्रहण करने में कठिनाई होती है तथा मस्तिष्क के भीतर चिंताएं व्याप्त रहती हैं। ऐसे जातक को बहुत समय बीत जाने पर संतान का सुख प्राप्त होता है। बुद्धि से कमजोर होने पर भी ऐसा व्यक्ति बड़े बुद्धिमानों जैसी बातें कहकर लोगों को प्रभावित करता है। वह कानून को जानने वाला, जिद्दी तथा गुप्त-युक्ति संपन्न होता है।

कर्क लग्न: पंचमभाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
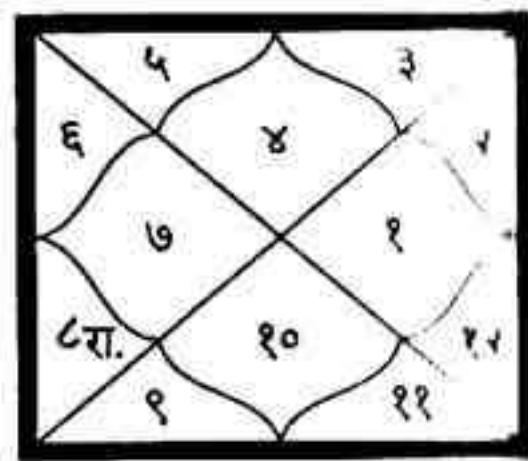
छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीचे के राहु के प्रभाव से जातक को शत्रुपक्ष से कुछ परेशानियां तो होती रहती हैं, परंतु वह भेद-नीति का आश्रय लेकर उनका दमन करता और सफलता पाता है। उसे ननिहाल के पक्ष से हानि प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति पाप-पुण्य की चिंता नहीं करता, अपितु, अपनी गुप्त-युक्तियों एवं चतुराई पर भरोसा रखकर स्वार्थ-साधन करता है।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तम भाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में चिंताओं, कठिनाइयों तथा परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उनके निवारणार्थ वह गुप्त युक्तियों से काम लेता है। ऐसे व्यक्ति की इंद्रिय में विकार होता है। वह अंदरूनी तौर पर दुःखी रहता है तथा गृहस्थी के संबंध में कभी-कभी घोर कष्ट भी उठाता है, परंतु अंत में सफलता भी पा लेता है।
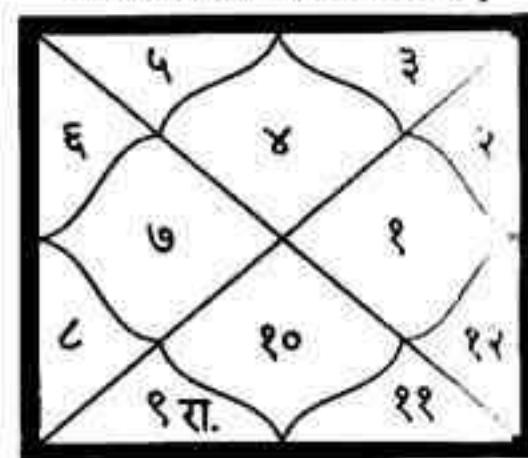
कर्क लग्न: सप्तमभाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
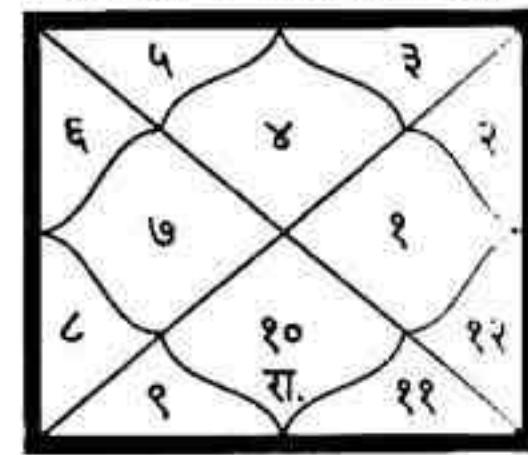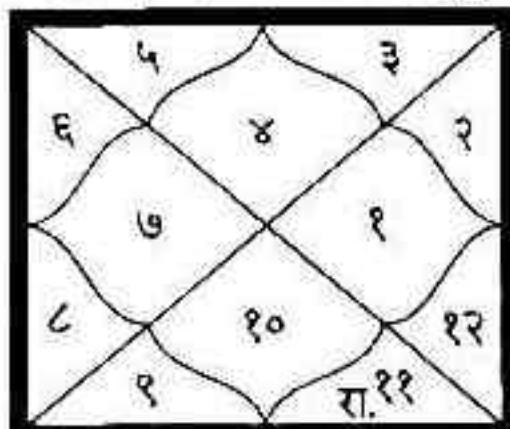
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र शनि की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के संबंध में कभी-कभी चिंताजनक स्थितियों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट में किसी प्रकार का विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन का निर्वाह करने के लिए गुप्त युक्तियों से काम लेता है तथा अनेक कठिनाइयों के बाद सफलता भी पाता है।

कर्क लग्नः अष्टमभावः राहु
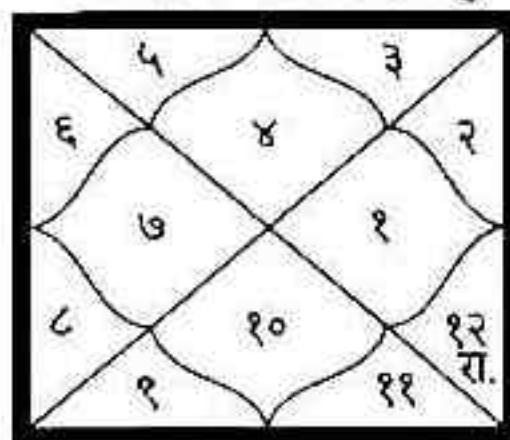
५२५

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती रहती हैं तथा धर्म का भी यथावत् पालन नहीं हो पाता। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु गुप्त युक्तियों और परिश्रम द्वारा कष्टों को सहन करने के उपरांत वह थोड़ी-बहुत सफलता भी पा लेता है। कभी कभी उसे आकस्मिक लाभ का योग भी प्राप्त होता है।

कर्क लग्नः नवमभावः राहु
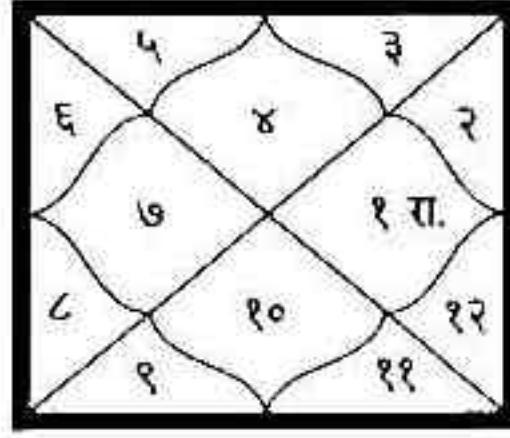
५२६

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में कमी, हानि, कष्ट एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। अनेक कष्टों को भोगने तथा अनेक बार निराश और असफल होने के बाद अंत में वह व्यवसाय के क्षेत्र में थोड़ी बहुत उन्नति पाता है तथा अपनी मान प्रतिष्ठा की रक्षा करता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा हिम्मती, बहादुर तथा धैर्यवान होता है।

कर्क लग्नः दशमभावः राहु

५२७
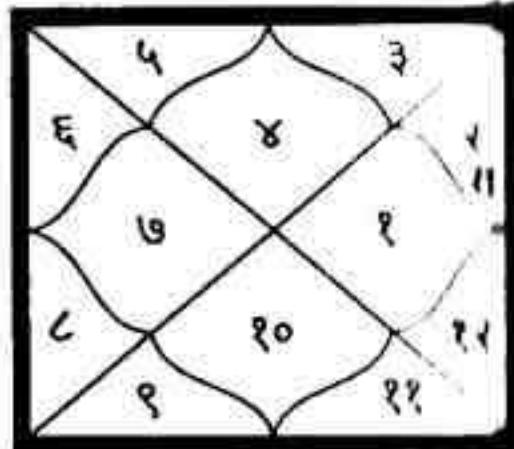
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक अपनी अत्यंत चतुराई के द्वारा धन का यथेष्ट उपार्जन करता है, यद्यपि उसे कभी-कभी सामान्य कठिनाइयों का सामना भी करना पड़ता है। परंतु कभी-कभी उसे लाभ के क्षेत्र में गहरे संकटों का सामना भी करना पड़ता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक रूप से अधिक लाभ हो जाने की प्रसन्नता भी प्राप्त होती है।

कर्क लग्न: एकादशभाव: राहु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
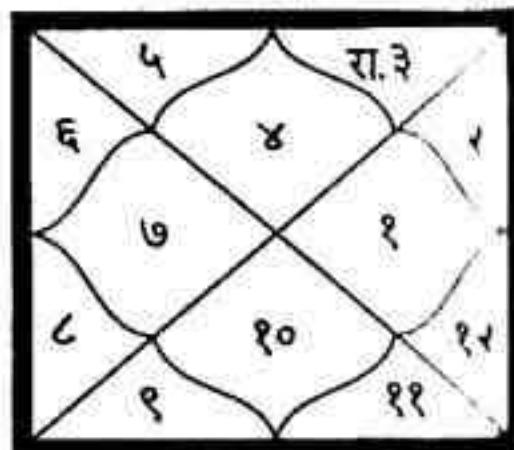
बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित उच्च राहु के प्रभाव से जातक का खर्च अत्यधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से गुप्त युक्तियों के बल पर उसे लाभ एवं शक्ति की प्राप्ति भी होती है। ऐसा व्यक्ति बाहरी स्थान में विशेष सम्मान एवं प्रभाव प्राप्त करता है। वह अपनी गुप्त कमजोरियों को कभी प्रकट नहीं होने देता तथा बड़ी बुद्धिमानी एवं चतुराई से उन्नति एवं सफलता प्राप्त करता चला जाता है।

कर्क लग्न: द्वादशभाव: राहु
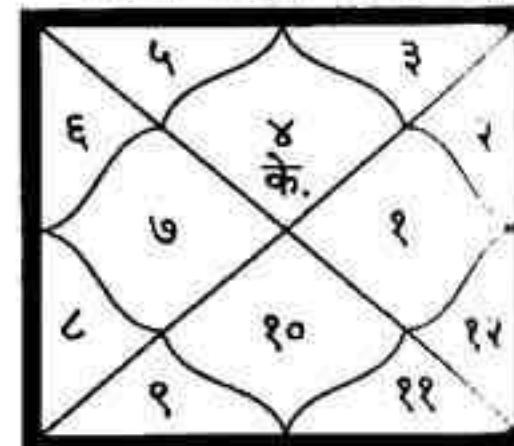
'कर्क' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शरीर पर किसी गहरी चोट अथवा घाव का निशान बनता है तथा शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में भी कमी रहती है। चेचक की बीमारी होने की भी संभावना रहती है। मानसिक शक्ति दुर्बल होती है तथा कभी-कभी मृत्यु-तुल्य कष्ट एवं रोग का शिकार भी बनना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति अपनी प्रसिद्धि एवं प्रभाव-वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

कर्क लग्न: प्रथमभाव: केतु

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

कर्क लग्न: द्वितीयभाव: केतु

५३१

दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के धन के कोष में अत्यधिक हानि होती है तथा उसे आर्थिक कमी के कारण बड़ी मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। इसी प्रकार उसे अपने कुटुंब से भी दुःख और क्लेश प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति ऋण लेकर अपना काम चलाता है तथा अत्यधिक परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों द्वारा अपने प्रभाव को बनाए रखने का प्रयत्न करता है। बहुत बाद में उसे थोड़ी-बहुत सफलता भी मिल जाती है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: तृतीयभाव: केतु

५३२
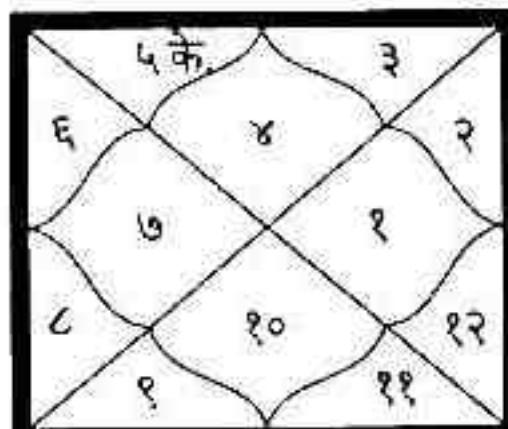
तीसरे पराक्रम एवं भाई-बहन के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है। गुप्त युक्तियों, विवेक तथा कठिन परिश्रम के द्वारा उसे सफलता भी मिलती है, परंतु ऐसा व्यक्ति उद्दंड प्रकृति एवं उग्र स्वभाव का होता है। उसमें शालीनता नहीं पाई जाती। उसे भाई-बहन का सुख भी कुछ कठिनाइयों के बाद प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कर्क लग्न: चतुर्थभाव: केतु

५३३

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की माता के सुख में कमी तथा परेशानी बनी रहती है। इसके अतिरिक्त मातृभूमि का वियोग सहन करके बार-बार स्थान परिवर्तन करना और दूसरी जगह में जाकर रहना पड़ता है। उसे घरेलू सुखों की प्राप्ति के लिए भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है। परंतु कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना होता है। अंत में उसे सामान्य सुख भी मिलता है।
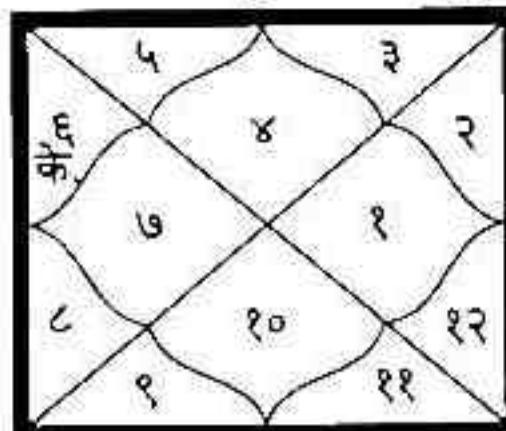
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
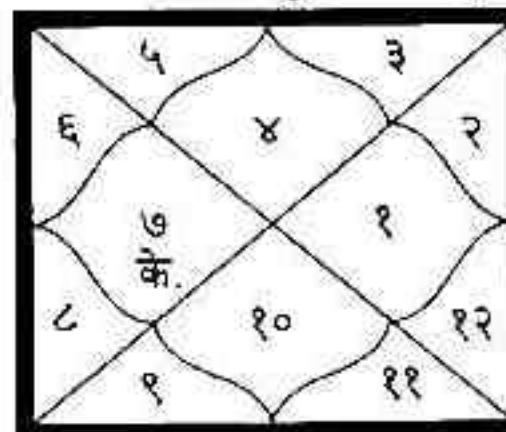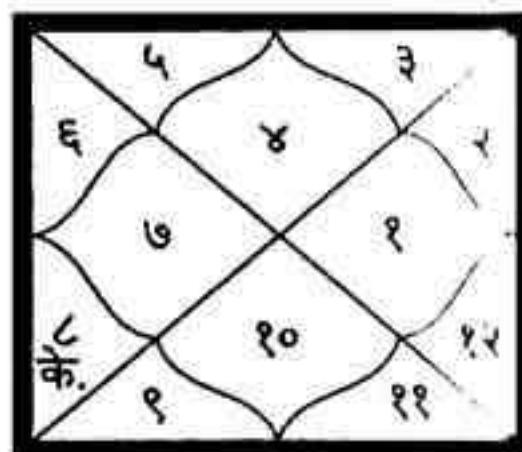
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आती हैं। परंतु ऐसा जातक गुप्त युक्तियों वाला, चतुर-चालाक तथा बातूनी होता है। वह अपनी अयोग्यता को छिपाकर दूसरे लोगों पर प्रभाव डालने में सफल होता है, परंतु शीलवान तथा संतोषी नहीं होता।

कर्क लग्न: पंचमभाव: केतु
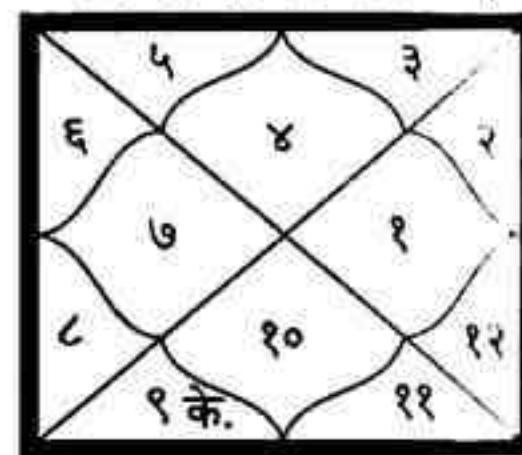
५३८

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभा।' ।। 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर बड़ी सफलता एवं विजय प्राप्त करता है तथा कठिन-से-कठिन संकट के समय में भी अपने धैर्य तथा साहस को नहीं छोड़ता। वह गुप्त युक्तियों एवं कठोर परिश्रम के बल पर अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील बना रहता है। उसका शरीर स्वस्थ रहता है, परंतु उसमें शील तथा दया आदि के गुण नहीं पाए जाते।

कर्क लग्न: षष्ठभाव: केतु

५३९
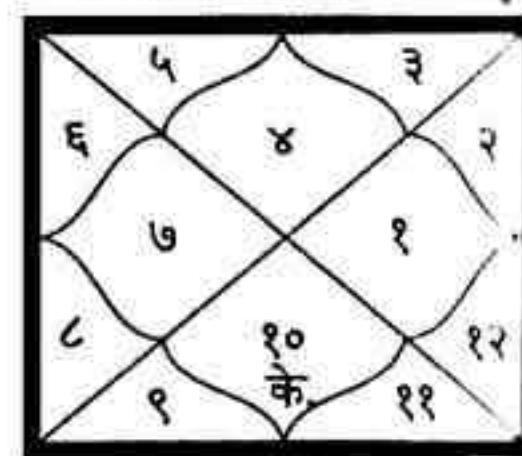
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' ।। 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेंद्रिय में विकार होता है। उसकी विषयेच्छा बढ़ी रहती है। वह गुप्त धैर्य से काम लेकर कठिनाइयों पर विजय पाता है। ऐसे लोग स्वभाव के जिद्दी, हठी, भोगी तथा कठिन परिश्रमी होते हैं।

कर्क लग्न: सप्तमभाव: केतु

५४०

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' ।। 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें मृत्यु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपनी आयु के पक्ष में अनेक बार मृत्यु-तुल्य [illegible] का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व को [illegible] होती है। ऐसे व्यक्ति के पेट में विकार रहता [illegible] गुप्त चिंताओं तथा परेशानियों से ग्रस्त बना रहता [illegible] का संकट उसे सदैव रहता है, परंतु उस पर [illegible] पाने के लिए वह निरंतर गुप्त रूप से प्रयत्न [illegible] रहता है।

कर्क लग्न: अष्टमभाव: केतु

५३७

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में [illegible]' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
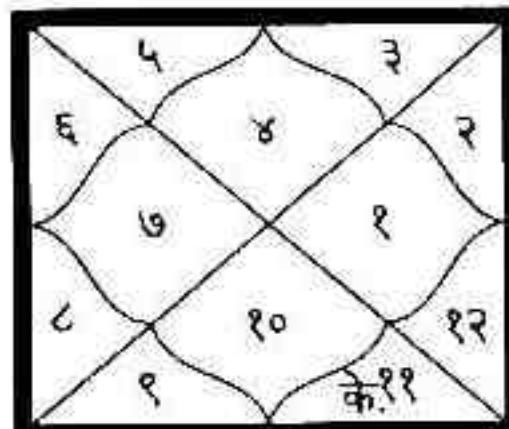
नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु [illegible] की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को [illegible] भाग्य की उन्नति के लिए कठिन परिश्रम करना [illegible] है तथा कभी-कभी उसे बहुत बड़े संकटों एवं [illegible]ओं का शिकार भी बनना होता है। ऐसे व्यक्ति [illegible] भाग्योन्नति बहुत धीरे-धीरे तथा संघर्षों से मुकाबला [illegible] हुए होती है। संक्षेप में, ऐसी ग्रह-स्थिति वाले लोग [illegible] रूप से चिंतित बने रहने वाले, परेशानियों में उलझे [illegible] वाले, ईश्वर की शक्ति में कम विश्वास करने वाले [illegible] मंद भाग्य वाले होते हैं।

कर्क लग्न: नवमभाव: केतु

५३८

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में [illegible]' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु [illegible] की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक [illegible] पिता के स्थान में हानि तथा कष्ट का सामना करना [illegible] है। उसे राज्य के क्षेत्र मे भी कठिनाइयां उठानी [illegible] हैं तथा व्यवसाय की उन्नति के लिए घोर परिश्रम [illegible] पड़ता है। कभी-कभी उसके यश तथा प्रतिष्ठा को [illegible] धक्का पहुंचता है, परंतु वह अपनी गुप्त-युक्ति, एवं [illegible] के द्वारा प्रतिष्ठा को पुनः स्थापित करने के लिए [illegible]शील बना रहता है।
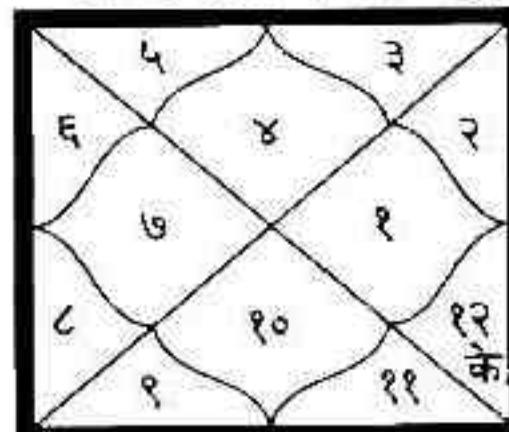
कर्क लग्न: दशमभाव: केतु

५३९

जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' [illegible] 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
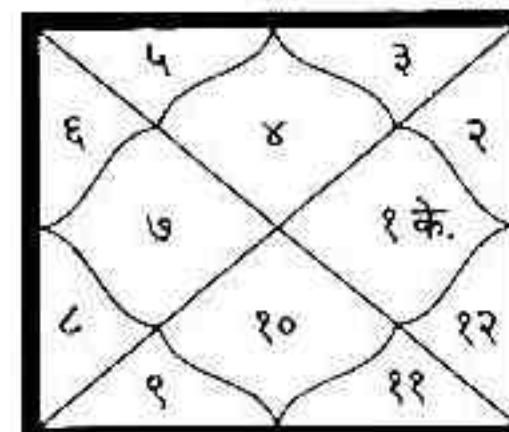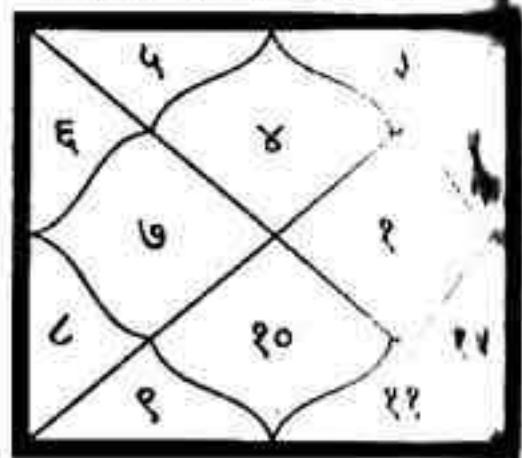
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र शुक्र की वृष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए कठोर परिश्रम करता है और गुप्त युक्ति, चतुराई एवं परिश्रम के द्वारा उसकी आय में वृद्धि भी होती है, परंतु कभी-कभी उसे आमदनी के क्षेत्र में परेशानियों एवं संकटों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, हिम्मतवर, परिश्रमी तथा पुरुषार्थी होता है।
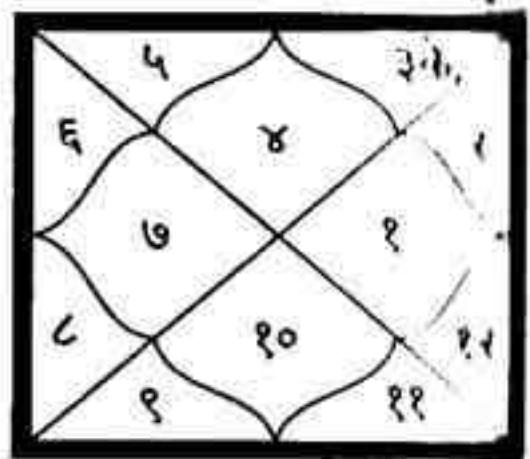
कर्क लग्न: एकादशभाव: केतु
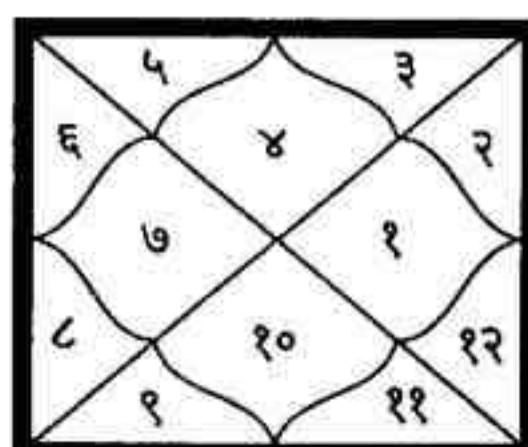
जिस जातक का जन्म 'कर्क' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

बारहवें व्यय-स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित नीच के केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के संबंध में बड़ी कठिनाइयां उपस्थित होती हैं तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी कष्ट प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपने खर्च को चलाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परंतु उससे सम्यक् पूर्ति नहीं हो पाती। वह गुप्त युक्तियों से काम लेने वाला, परिश्रमी तथा आंतरिक रूप से दुःख भोगने वाला भी होता है।

कर्क लग्न: द्वादशभाव: केतु
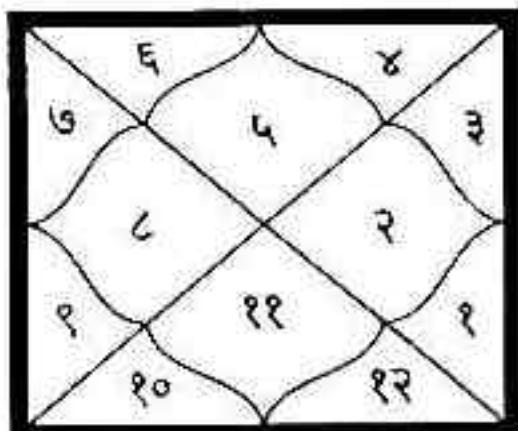
'कर्क' लग्न का फलादेश समाप्त

५४२

सिंह लग्न
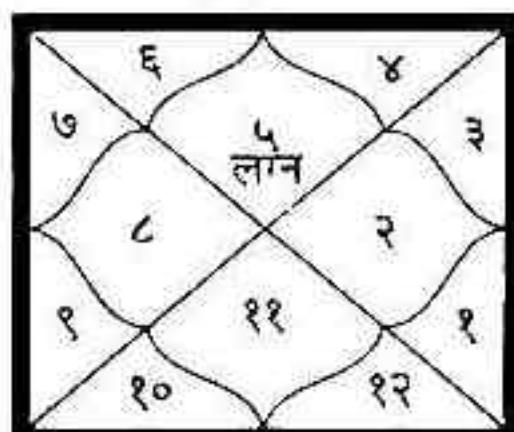
सिंह लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'सिंह' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातक के शरीर पांडुवर्ण होता है। वह पित्त तथा वायु विकार पीड़ित रहने वाला, मांसभोजी, रसीली वस्तुओं को पसंद करने वाला, कृशोदर, अल्पभोजी, पुत्रवान, अत्यंत पराक्रमी, अहंकारी, भोगी, तीक्ष्ण-बुद्धि, ढीठ, वीर, भ्रमणशील, गुणी, क्रोधी, बड़े हाथ-पांव तथा चौड़ी छाती वाला, उग्र स्वभाव का, वेदांत विद्या का ज्ञाता, की सवारी से प्रेम रखने वाला, अस्त्र शस्त्र चलाने में निपुण, तेज स्वभाव वाला, उदार साधु-संतों की सेवा करने वाला होता है।

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाला जातक प्रारंभिक अवस्था में सुखी, मध्यावस्था में दुखी तथा अवस्था में पूर्ण सुखी होता है। उसका भाग्योदय २१ से २८ वर्ष की आयु के बीच का है।

'सिंह' लग्न

५४४

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यत: दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म कालीन ग्रह स्थिति 'जन्म-कुंडली' में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'सिंह' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण कुंडली संख्या ६५५ के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य 'कन्या' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या ६५७ के अनुसार

उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, जब
वह 'कन्या' राशि से हटकर 'तुला' राशि में नहीं चला जाता। 'तुला' राशि में पहुंच
'तुला' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। अतः जिस जातक
कुंडली मे 'सूर्य' 'सिंह' राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुंडली संख्या
फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य कन्या राशि के द्वितीयभाव
हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ६५७ का फलादेश भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों
के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने वर्तमान समय पर प्रभाव
समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'सिंह' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित
ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ५४५ से ६५२ तक में किया गया है।
की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'सिंह' लग्न मे जन्म लेने वाले जातकों को किन
उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए—इसका
वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक स्थिति के
प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरान्त दोनों फलादेश के समन्वय-स्वरूप
निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश सहज
ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर
३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है,
वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णतः प्रभावहीन रहता है।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी
में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने के
से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा
ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव में
से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां पड़ती हैं,
जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में 'ग्रहों
युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है,
अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी
है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा
काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह
अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के
के जिस काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है,
कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव
से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और

...में किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर ...क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह गोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की ...दशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में ...गया है, अत: इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने ...वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का ...फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५४५ से ५५६ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' ...अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...संख्या ५५६ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

सिंह (५) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५५७ से ५६८ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६८ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

सिंह (५) जन्म लग्न वालों को अपनी जन्म कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५६९ से ५८० तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण ली संख्या ५७० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-ली संख्या ५७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-ली संख्या ५७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-ली संख्या ५७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-ली संख्या ५७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-ली संख्या ५८० के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८१ से ५९२ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ५८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९२ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९३ से ६०४ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ५९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या
के अनुसार समझना चाहिए।
(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या
के अनुसार समझना चाहिए।
(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या
के अनुसार समझना चाहिए।
(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या
के अनुसार समझना चाहिए।
(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या
के अनुसार समझना चाहिए।
(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०३ के अनुसार समझना चाहिए।
(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०४ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६०५ से ६१६ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह गोचर कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०५ के अनुसार समझना चाहिए।
(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०६ के अनुसार समझना चाहिए।
(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०७ के अनुसार समझना चाहिए।
(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-
कुंडली संख्या ६०८ के अनुसार समझना चाहिए।
(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६०९ के अनुसार समझना चाहिए।
(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६१० के अनुसार समझना चाहिए।
(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६११ के अनुसार समझना चाहिए।
(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली
६१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१६ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६१७ से ६२८ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए।

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६२० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२८ के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२९ से ६४० तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४० के अनुसार समझना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों के लिए
जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु ' का फलादेश

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४१ से ६५२ तक में देखना चाहिए।

सिंह (५) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५१ के अनुसार समझना चाहिए।
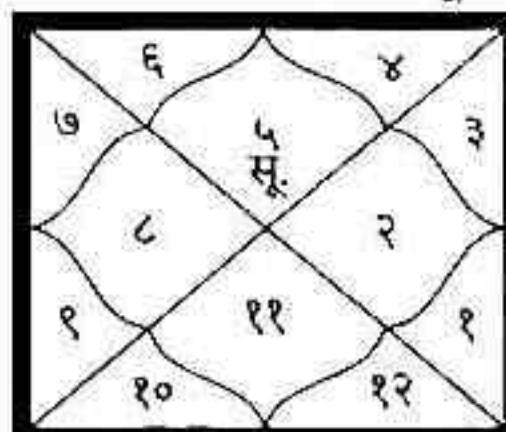
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५२ के अनुसार समझना चाहिए।

'सिंह' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर-स्थान में अपनी सिंह राशि पर स्थित ...वीत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की शारीरिक शक्ति, ...मान, स्वाभिमान, सौंदर्य, हिम्मत तथा प्रभाव में वृद्धि होती है। ऐसा जातक लंबे कद का होता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्रीपक्ष से असंतोष रहता है तथा दैनिक खर्च एवं व्यवसाय के मार्ग में भी कुछ बाधाएं आती रहती हैं।

सिंह लग्न: प्रथमभाव: सूर्य
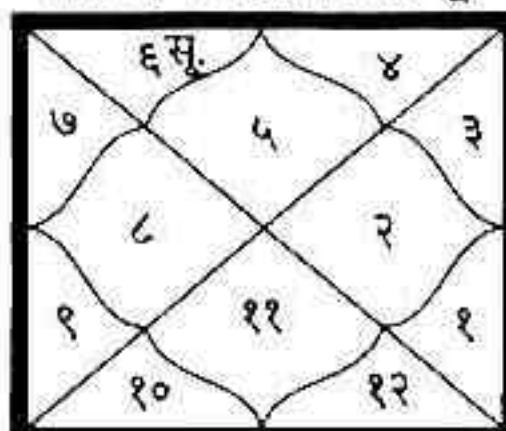
५४५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब के सुख में वृद्धि होती है, परंतु यह स्थान बंधन का होने के कारण कुछ परतंत्रता का-सा अनुभव भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है और वह प्रतिष्ठित व्यक्ति माना जाता है।

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: सूर्य
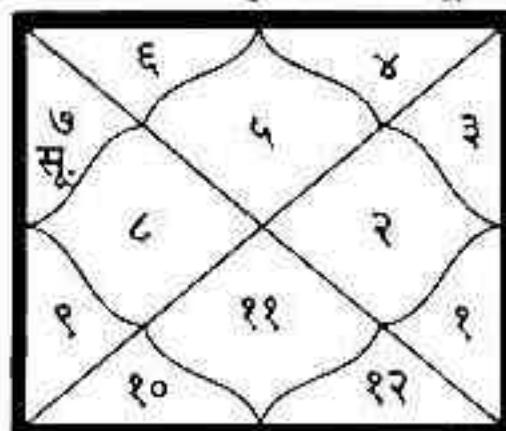
५४६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों के सुख में कमी तथा वैमनस्य मिलता है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी आती है, परंतु तृतीयभाव में बैठा हुआ क्रूर ग्रह अधिक प्रभावशाली होता है, इसलिए जातक बहुत हिम्मत वाला भी बना रहता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म में भी आस्था रखता है।
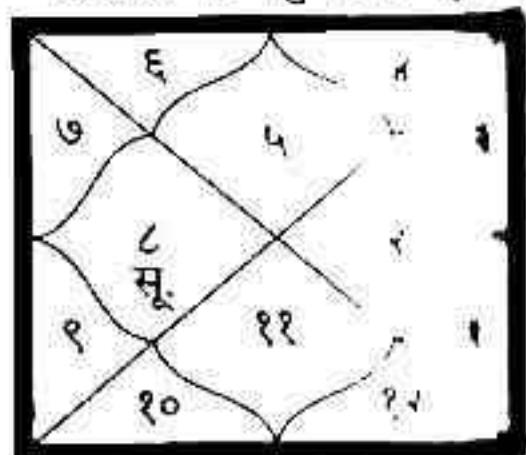
सिंह लग्न: तृतीयभाव: सूर्य

५४७

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य
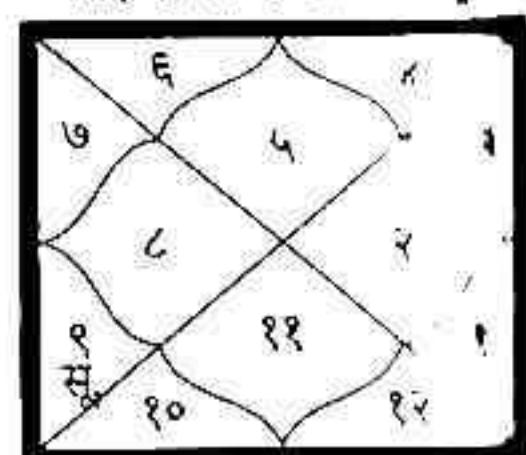
चौथे केंद्र, माता, भूमि, मकान एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है तथा शरीर आनंदित बना रहता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि की शुक्र की वृषभ राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक का पिता के साथ वैमनस्य रहता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में अधिक प्रयत्न द्वारा कुछ सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: पंचमभाव: सूर्य

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि की श्रेष्ठ शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति आत्मज्ञानी भी होता है, परंतु उसके मस्तिष्क में उग्रता रहती है। यहां से सूर्य अपने सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को बुद्धि-बल द्वारा पर्याप्त लाभ होता है तथा आमदनी के कई मार्ग खुलते हैं। ऐसा जातक अहंकारी भी होता है।
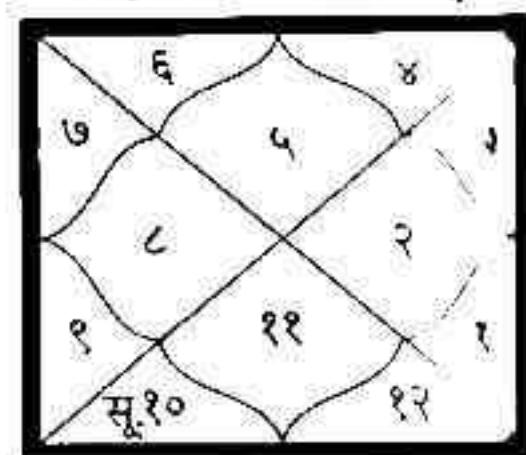
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

छठे शत्रु एवं रोग के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है और कठिनाइयों तथा मुसीबतों की चिंता नहीं करता। उसे शारीरिक सौंदर्य में कमी, रोग तथा परतंत्रता का योग भी रहता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्र-दृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च की अधिकता रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: सप्तमभाव: सूर्य

५५१

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को ... से वैमनस्य रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में ... परिश्रम के बाद सफलता प्राप्त होती है, परंतु ... के संबंध में जातक की आसक्ति रहती है। यहां सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में प्रथमभाव देखता है, अत: जातक शारीरिक शक्ति, प्रभाव एवं ...मान संपन्न होता है और अपने नाम को ऊंचा उठाने ... प्रयत्न करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' ... स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: अष्टमभाव: सूर्य

५५२
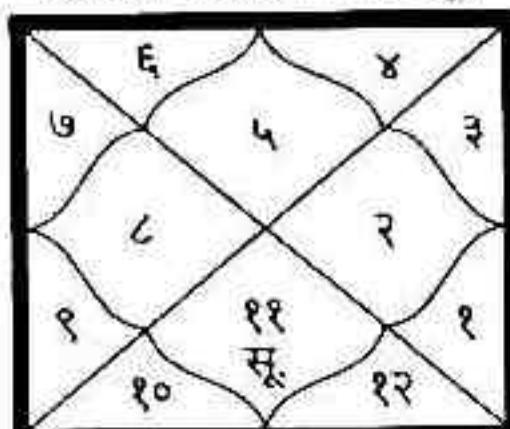
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु ... मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक आयु एवं ...तत्त्व का लाभ शारीरिक शक्ति एवं कुछ कठिनाइयों के ... प्राप्त करता है। साथ ही बाहरी स्थानों के संबंध से उसे ... मिलती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की ... राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन-...द्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है और उसे धन तथा ...टुंब का सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक स्वभाव का ...धी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: नवमभाव: सूर्य

५५३

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र ...गल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य की प्रबल शक्ति प्राप्त होती है तथा धर्म के पक्ष में भी रुचि बनी रहती है। ऐसा जातक ईश्वर-विश्वासी, भाग्यवान तथा स्थूल शरीर वाला होता है। यहां से सूर्य सातवीं नीच दृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: उसे भाई-बहन के द्वारा असंतोष मिलता है और वह पराक्रम के संबंध में लापरवाह ...ना रहता है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी छोटे-मोटे काम भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का पिता से वैमनस्य एवं राज्य के क्षेत्र से मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है और वह अपनी उन्नति के लिए प्रयत्नशील रहने वाला होता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि एवं भवन का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।
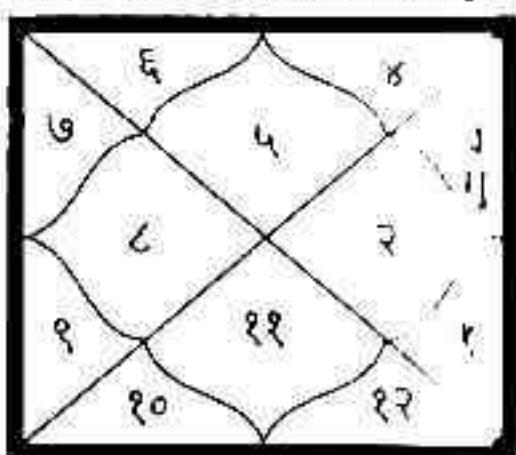
सिंह लग्न: दशमभाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को आमदनी के श्रेष्ठ साधन उपलब्ध होते हैं। उसकी शारीरिक शक्ति में वृद्धि होती है, अतः आय के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक को संतान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी होता है तथा उसकी बोली में भी कुछ उग्रता बनी रहती है।
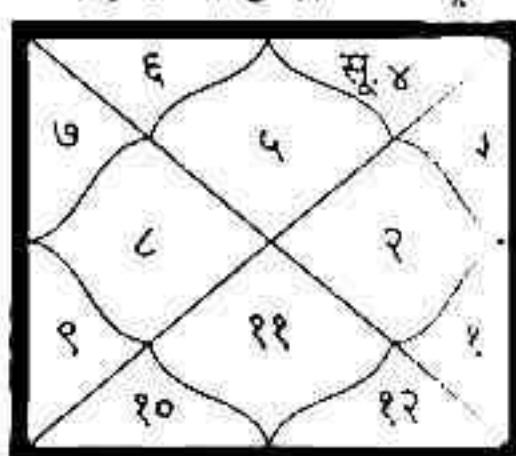
सिंह लग्न: एकादशभाव: सूर्य

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल बना रहता है। खर्च पर वह अपना प्रभाव रखता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। ऐसा व्यक्ति भ्रमणशील भी होता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रुपक्ष में प्रभाव रखता है और अनेक प्रकार की कठिनाइयों के बाद उन पर विजय भी पाता है।

सिंह लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

'सिंह' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए,

पहले केंद्र एवं शरीर-स्थान में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक का दुर्बल होता है, वह बाहरी स्थानों का भ्रमण करता वहां से सुंदर संबंध स्थापित करता है। ऐसा व्यक्ति खर्च के कारण मन में कुछ चिंतित भी बना रहता यहां से चंद्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि सप्तमभाव को देखता है, अतः उसे स्त्रीपक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों हानि का सामना करना पड़ता है।

सिंह लग्नः प्रथमभावः चंद्र

५५७

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
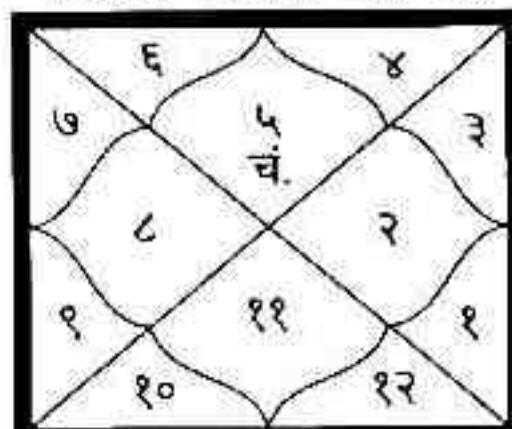
दूसरे धन तथा कुटुंब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक के धन में कुछ हानि होती है, परंतु उसके ठाट-बाट अमीरों जैसे होते हैं। साथ ही कुटुंब पक्ष से भी कुछ असंतोष रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु की शक्ति में वृद्धि होती है तथा कुछ कमजोरी के साथ पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति शानदार जीवन बिताता है।

सिंह लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

५५८

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों के सुख तथा पराक्रम के क्षेत्र में कुछ कमजोरी बनी रहती है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कुछ कमी के साथ जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा खर्च को सुंदर तरीके से चलाता है और जातक सुखी तथा धनी समझा जाता है।

सिंह लग्नः तृतीयभावः चंद्र

५५९
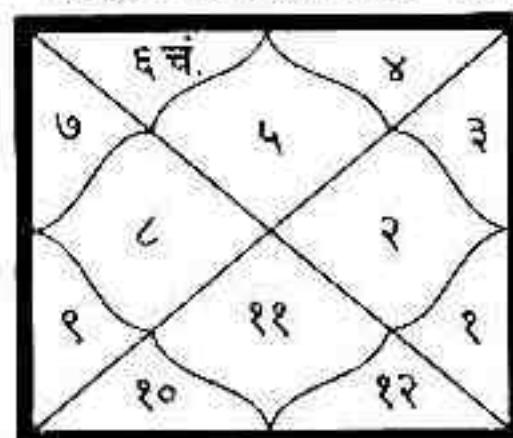
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
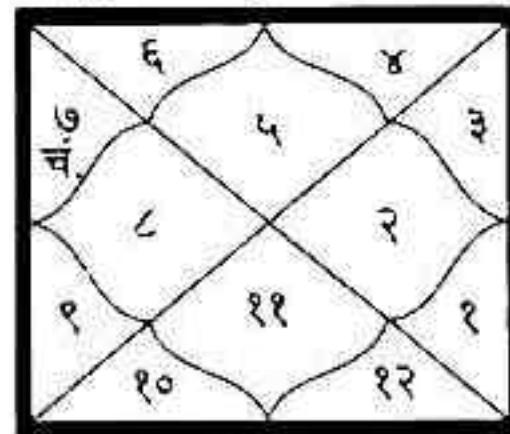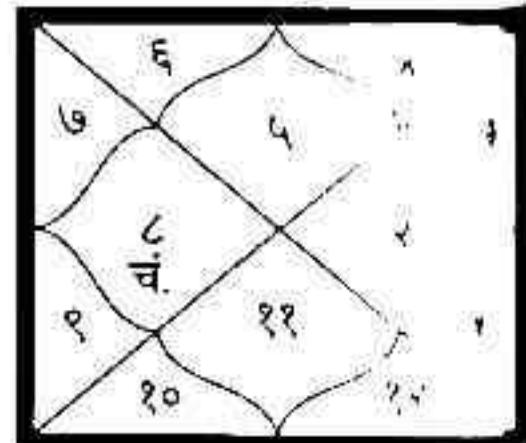
चौथे केंद्र, माता, भूमि, एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कमी तथा कष्ट की प्राप्ति होती है तथा घरेलू खर्चों के कारण भी परेशानी का सामना करना पड़ता है। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता से सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा भी सुख, सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्नः चतुर्थभावः चंद्र
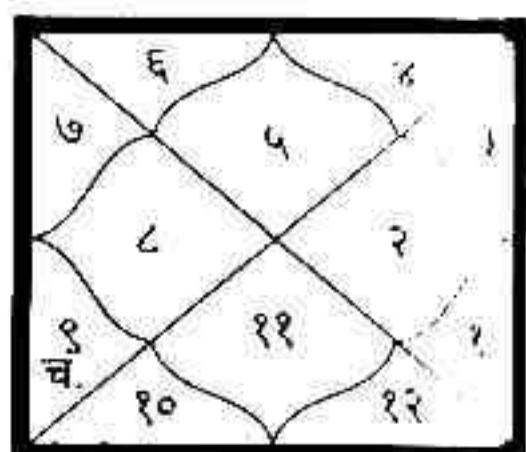
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष में बाधा आती है तथा विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती है। साथ ही खर्च की चिंता से दिमाग परेशान रहता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक बुद्धि के द्वारा लाभ के क्षेत्र में कुछ असंतोष के साथ सफलता प्राप्त करता है।

सिंह लग्नः पंचमभावः चंद्र
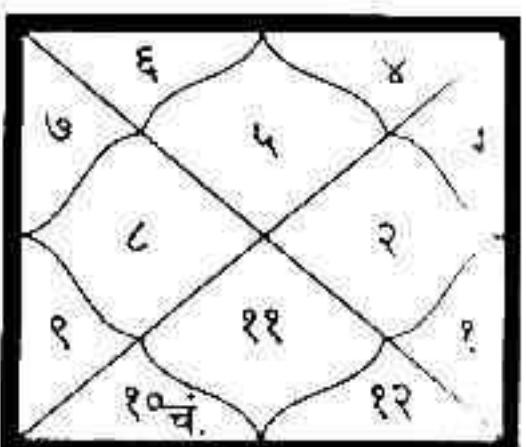
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष द्वारा उत्पन्न किए गए झगड़े-टंटे तथा रोग आदि में खर्च करना पड़ता है तथा खर्च की चिंता से मन चिंतित एवं दुखी बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से द्वादशभाव को अपनी ही कर्क राशि में देखता है, अतः जातक खर्च जुटाने की परेशानी रहते हुए भी अधिक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। खर्च के द्वारा ही उसे शत्रुपक्ष में भी सफलता मिलती है।

सिंह लग्नः षष्ठभावः चंद्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु राशि में स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक तथा व्यवसाय के पक्ष में हानि उठानी पड़ती है तथा चलाने में कुछ असंतोष एवं कठिनाइयों का होता है। साथ ही उसे बाहरी स्थानों के संबंध से होता है, परंतु मन में कमजोरी एवं चिंता बनी रहती से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह प्रथमभाव को देखता है, अत: शरीर में भी दुर्बलता जाती है।

सिंह लग्न: सप्तमभाव: चंद्र

५६३

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
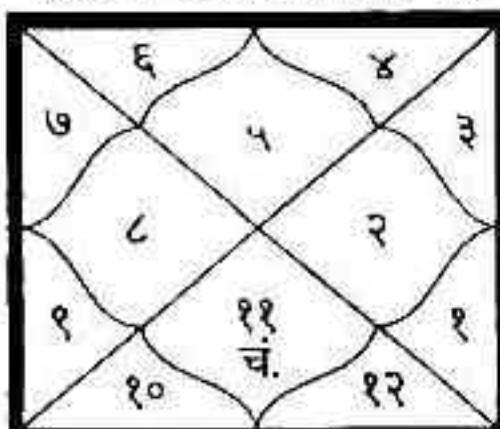
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र की मीनराशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से को आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में चिंता एवं हानि प्राप्त होते हैं तथा पेट में भी कुछ विकार बना है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे लाभ होता यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि तृतीयभाव को देखता है, अत: धन के स्थान में भी हानि होती है तथा कुटुंब का सुख भी कम मिल है।

सिंह लग्न: अष्टमभाव: चंद्र

५६४

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र की मेष राशि पर स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है तथा मनोबल द्वारा खर्च करने की शक्ति प्राप्ति होती है। धर्मपालन के क्षेत्र में भी त्रुटियां बनी रहती हैं। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं दृष्टि से सामान्य मित्र शुक्र की तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा जातक प्रसन्न रहते हुए भी मानसिक दुर्बलता का शिकार रहता है।
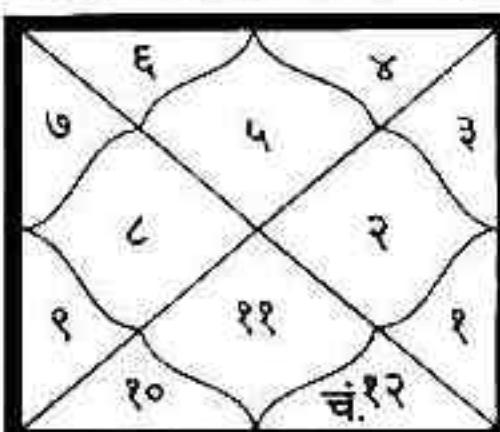
सिंह लग्न: नवमभाव: चंद्र

५६५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
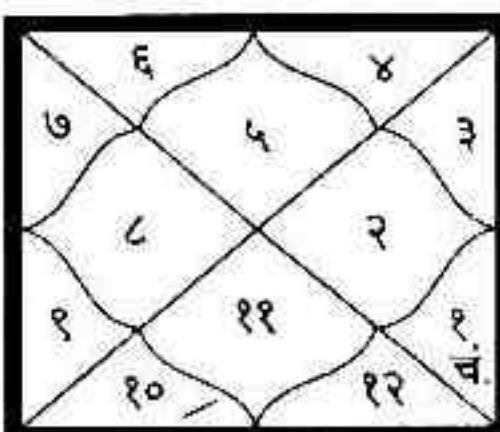
दसवें केंद्र, राज्य व पिता के भवन में अपने सामान्य मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित व्ययेश तथा उच्च के चंद्रमा के प्रभाव से जातक पैतृक संपत्ति का अधिक व्यय करता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता पाता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं नीचदृष्टि से अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि तथा भवन के सुख में कमी आती है और खर्च की अधिकता के कारण मन अशांत बना रहता है।
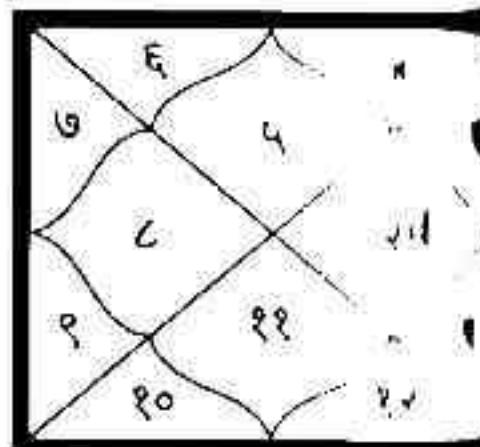
सिंह लग्नः दशमभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि में स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त करता है, परंतु खर्च अधिक बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः संतान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में भी कुछ कमजोरी बनी रहेगी। ऐसा जातक कुछ चिंताओं के साथ अपना खर्च चलाता है, परंतु बाहरी तौर पर धनी मालूम होता है।
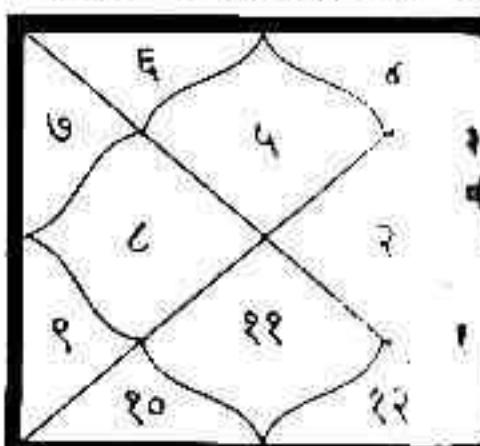
सिंह लग्नः एकादशभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्ययभाव में अपनी ही कर्क राशि में स्थित व्ययेश चंद्रमा के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे सुख, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। यहां से चंद्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक अपने मनोबल एवं खर्च की शक्ति से शत्रु पक्ष पर प्रभाव एवं विजय प्राप्त करता है, परंतु रोग, झगड़े, मुकदमें आदि में उसे अधिक खर्च करना पड़ता है।
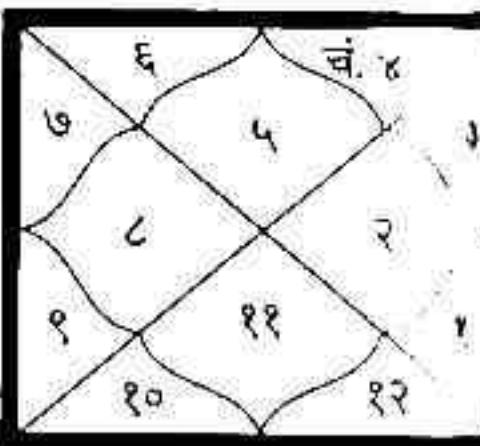
सिंह लग्नः द्वादशभाव

'सिंह' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शरीर से बड़ा होता है। वह भाग्यशाली, धर्मात्मा तथा भाग्य करने वाला होता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि के चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को भूमि, भवन आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा के पक्ष में कठिनाइयों के साथ सुख मिलता है तथा मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा की वृद्धि होती है।

सिंह लग्न: प्रथमभाव: मंगल

५६९

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
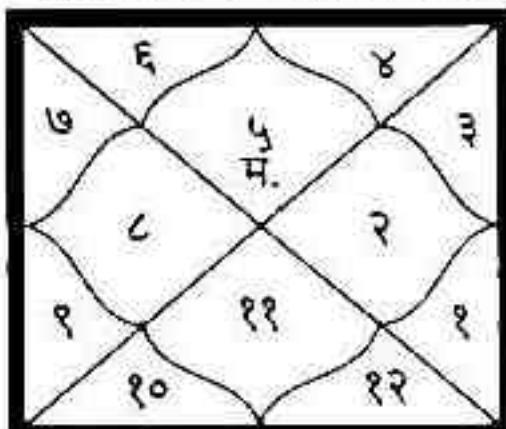
दूसरे धन व कुटुंब के स्थान में अपने मित्र बुध की राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को धन कुटुंब का सुख प्राप्त होता है, परंतु माता एवं भूमि के में कुछ कमी रहेगी। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से भाव को देखता है, अतः संतान, विद्या एवं बुद्धि के में सफलता मिलेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव देखने से आयु तथा पुरातत्त्व की वृद्धि होती है तथा दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने के कारण एवं धर्म की वृद्धि होती है। ऐसा जातक धनी, सुखी, तथा प्रतिष्ठित होता है।

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

५७०

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में ' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु शुक्र तुला राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को वाहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम की वृद्धि है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान का सुख भी मिलता यहां से मंगल चौथी उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखता अतः शत्रु पक्ष में सफलता, प्रभाव एवं विजय की प्राप्ति है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखने से एवं धर्म की उन्नति होती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से भाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के में सफलता, सुख, सम्मान एवं उन्नति की प्राप्ति होती है।
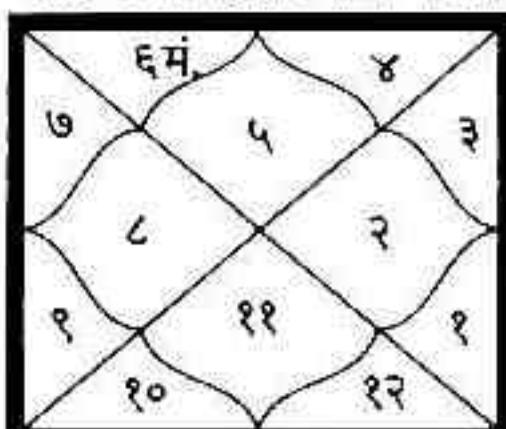
सिंह लग्न: तृतीयभाव: मंगल

५७१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में ' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: चतुर्थभाव [illegible]
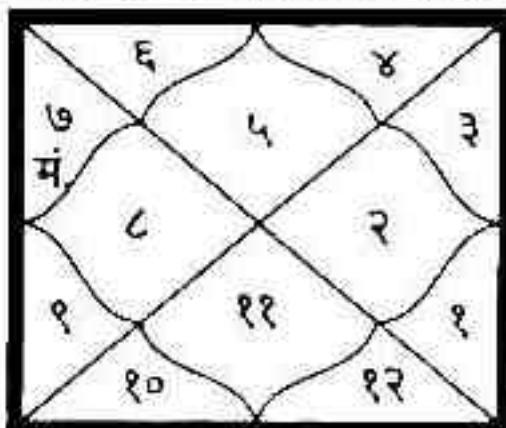
चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपनी ही वृश्चिक राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता एवं राज्य द्वारा शक्ति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी के पक्ष में पर्याप्त सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के '[illegible]' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना [illegible]
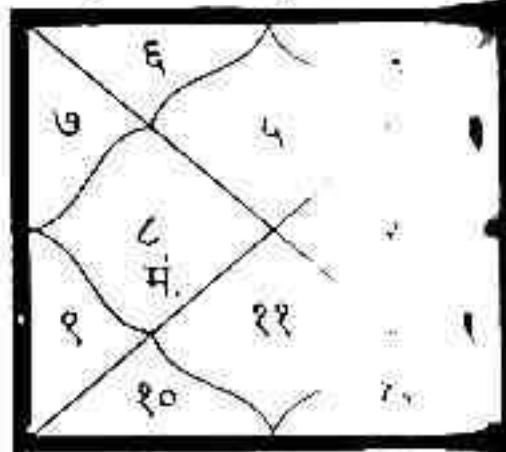
पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि [illegible] मंगल के प्रभाव से जातक को संतान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सुख, सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है। उसे माता तथा मातृभूमि से भी स्नेह मिलता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व के क्षेत्र में लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ खूब होता है तथा आठवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च के कारण कुछ परेशानी बनी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में भी निर्बलता रहती है।

सिंह लग्न: पंचमभाव [illegible]

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'षष्ठभाव' [illegible] की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
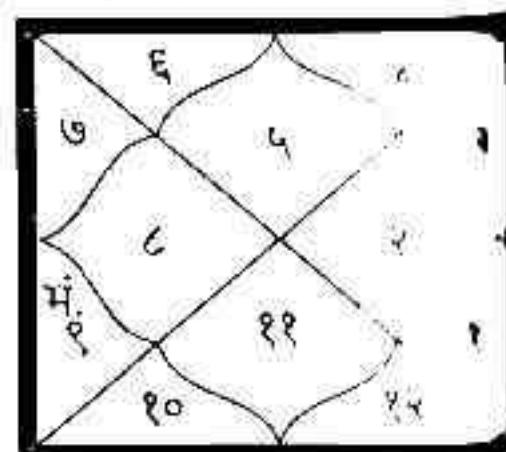
छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित उच्च के मंगल के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त होती है तथा भाग्य की शक्ति से सुख भी मिलता है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से स्वराशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति करता है। साथ ही धर्म का पालन भी करता है। सातवीं नीचदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के मामले में कुछ परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों के संबंध में कमजोरी आती है एवं आठवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक प्रभाव, सुख एवं सौंदर्य की वृद्धि होती है।

सिंह लग्न: षष्ठभाव: [illegible]

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तम[illegible]' 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए
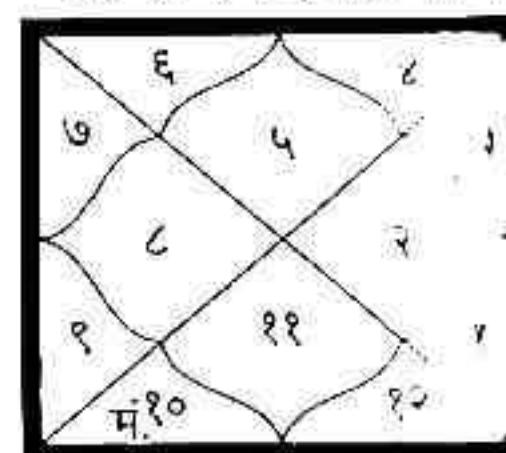
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को कठिनाइयों के साथ स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः कुछ मतभेद के साथ पिता एवं राज्य के द्वारा सुख, सम्मान तथा प्रभाव एवं व्यवसाय में सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सौंदर्य एवं सौभाग्य की प्राप्ति होती है तथा आठवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन एवं कुटुंब का सुख भी मिलता है।

सिंह लग्न: सप्तमभाव: मंगल

५७५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
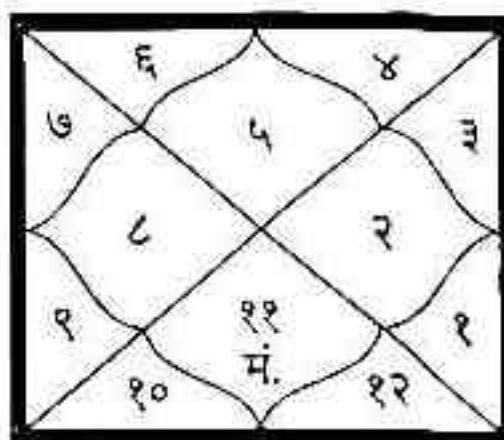
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति का लाभ होता है, परंतु भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कमजोरी आती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी कम होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब के सुख का लाभ होता है। आठवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन का सुख मिलता है एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी भी होता है।

सिंह लग्न: अष्टमभाव: मंगल

५७६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म स्थान में अपनी ही मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में सफलता मिलती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च में कमी के कारण कष्ट प्राप्त होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी परेशानी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन का सुख असंतोषयुक्त रहता है, परंतु पराक्रम में वृद्धि होती है। आठवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि, मकान आदि का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है।

सिंह लग्न: नवमभाव: मंगल

५७७
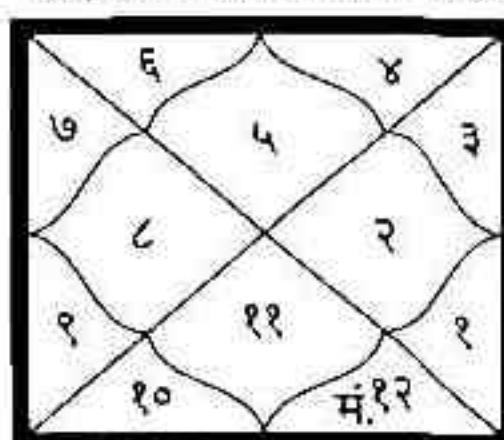
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
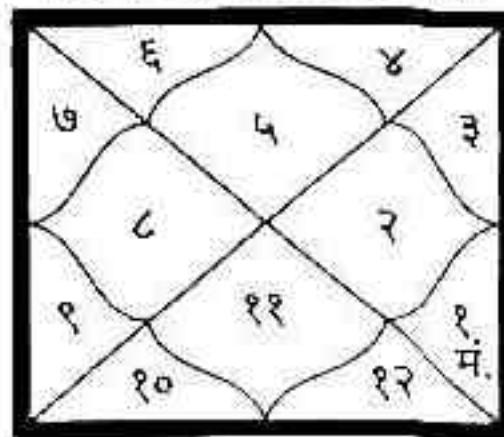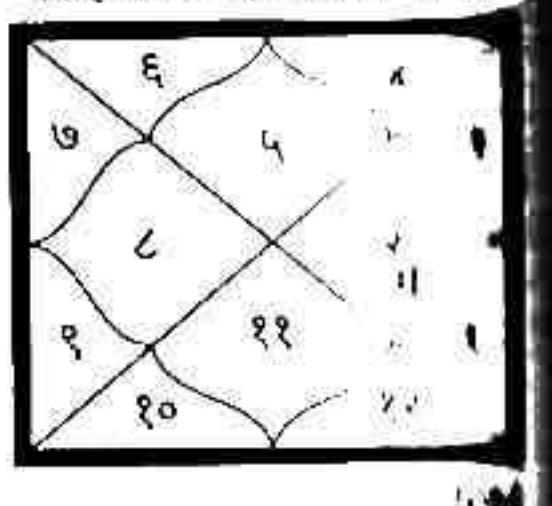
सिंह लग्नः दशमभाव: मंगल

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में उन्नति, सफलता, सम्मान एवं लाभ के योग प्राप्त होते हैं। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अत: शरीर में प्रभाव रहता है और सौभाग्य की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख मिलता है और आठवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति मधुरभाषी, विनम्र तथा सज्जन होता है।
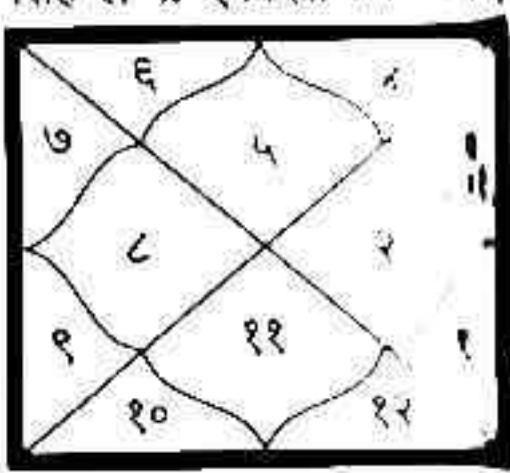
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सिंह लग्नः एकादशभाव: मंगल

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अत: धन की प्राप्ति होती है एवं कुटुंब द्वारा सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान तथा विद्या-बुद्धि के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुओं, रोगों तथा झंझटों पर विजय प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति अत्यंत प्रभावशाली, शत्रुजयी, धनी तथा ननिहाल का भी सुख प्राप्त करने वाला होता है।
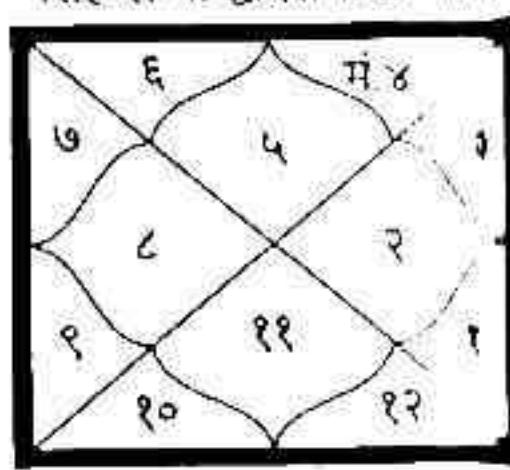
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सिंह लग्नः द्वादशभावः मंगल

बारहवें व्ययभाव में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को खर्च के मामले में कठिनाई उठानी पड़ती है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कष्ट प्राप्त होता है। वह भाग्य, माता एवं भूमि के पक्ष से भी हानि उठाता है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहन के सुख एवं पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रुओं पर विजय मिलती है तथा आठवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय द्वारा सुख एवं लाभ होता है, परंतु ऐसा जातक धर्म के पक्ष में लापरवाह होता है।

'सिंह' लग्न में 'बुध' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: प्रथमभाव: बुध

५८१

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक विवेकी, चतुर, भोगी तथा धनी होता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से शनि की कुंभ राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से भी अत्यंत सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। ऐसा जातक धनी तथा प्रतिष्ठित भी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: बुध

५८२
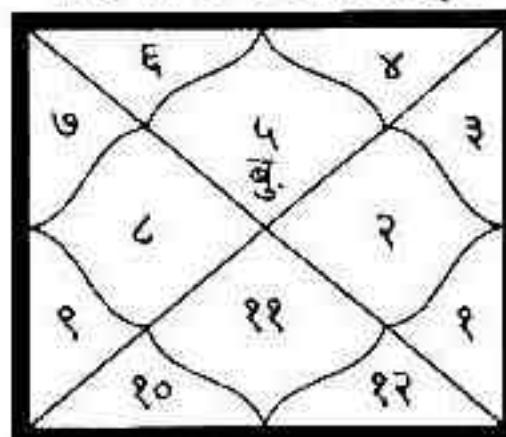
दूसरे धन, कुटुंब के स्थान में अपनी ही कन्या राशि पर स्थित उच्च के बुध के प्रभाव से जातक भाई-बहन तथा कुटुंब के सुख को यथेष्ट मात्रा में प्राप्त करता है, साथ ही उसके धन और प्रतिष्ठा की वृद्धि भी होती है। यहां से बुध सातवीं नीचदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्व के संबंध में अनेक प्रकार की चिंताओं, कठिनाइयों एवं कमियों का शिकार बनना पड़ता है। उसके दैनिक जीवन में कुछ असंतोष बना रहता है तथा पेट में भी खराबी रहती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: तृतीयभाव: बुध

५८३

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। वह पुरुषार्थ द्वारा धन भी कमाता है तथा विवेक द्वारा लाभ के मार्ग में उन्नति करता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, हिम्मती, धर्मात्मा, तथा यशस्वी होता है।
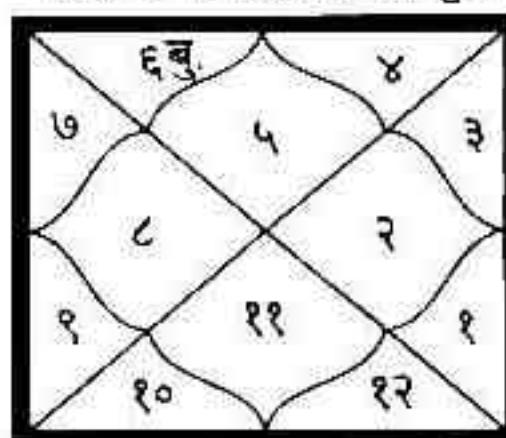
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
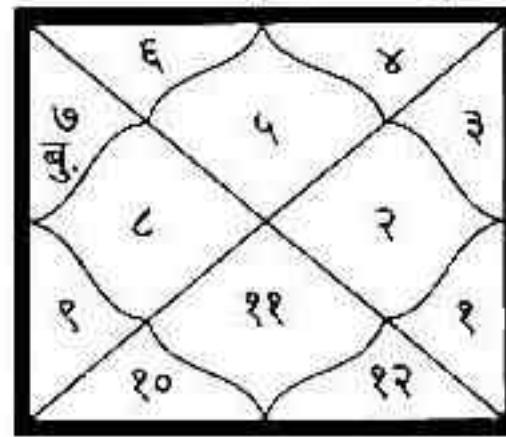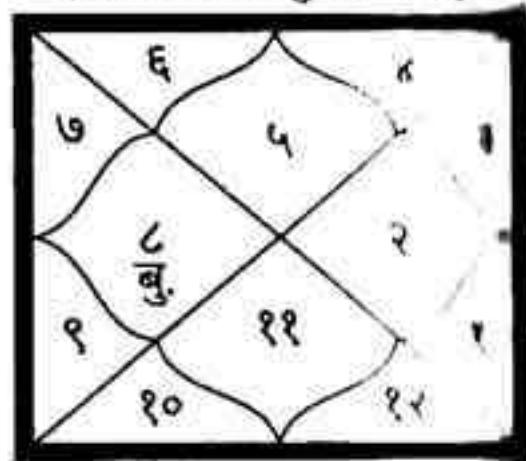
चौथे केंद्र, माता, भूमि, एवं सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि, मकान आदि का पर्याप्त सुख प्राप्त होता है और वह धन का संचय भी करता है। यहां से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता के स्थान से उन्नति मिलती है एवं राज्य तथा व्यवसाय के द्वारा भी सहयोग, सुख, सम्मान, यश तथा लाभ की प्राप्ति होती है।
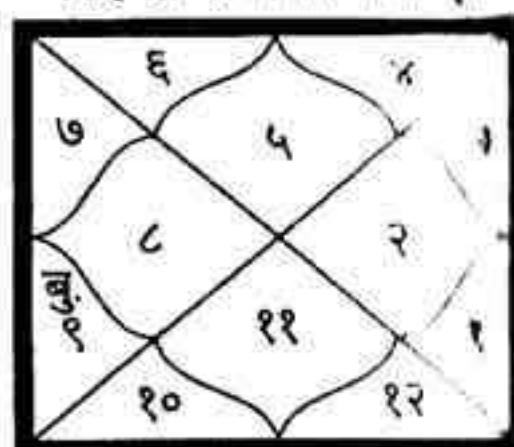
सिंह लग्न: चतुर्थभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में पर्याप्त सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के द्वारा धन की उन्नति भी होती है। उसे कुटुंब का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को अच्छा लाभ प्राप्त होता है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी, बुद्धिमान, विद्वान, संततिवान, सज्जन तथा स्वार्थी होता है।
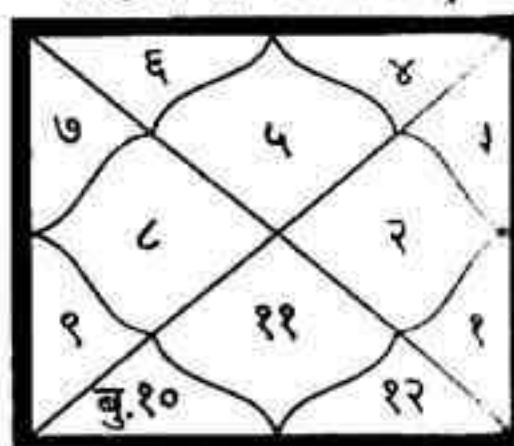
सिंह लग्न: पंचमभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में नम्रता एवं धन के खर्च की शक्ति से काम लेता है, परंतु उसे धन की कुछ हानि भी उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से शक्ति एवं लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को कौटुंबिक सुख भी कम ही मिल पाता है।

सिंह लग्न: षष्ठभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' **की स्थिति हो**, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: सप्तमभाव: बुध

५८७

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र **की कुंभ** राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को **सफलता मिलती है** तथा स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ **होता है**। उसे धन एवं कुटुंब का सुख तथा प्रतिष्ठा की **प्राप्ति भी होती** है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की **राशि में** प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को **शारीरिक सौंदर्य**, विवेकशक्ति, आत्मिक बल तथा यश भी **प्राप्त होता है**। संक्षेप में ऐसा जातक धनी, सुखी, विवेकी **तथा प्रतिष्ठित** होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' **की स्थिति हो**, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: अष्टमभाव: बुध

५८८

आठवें आयु एवं पुरातत्व के भवन में अपने मित्र गुरु **की मीन राशि** पर स्थित नीच के बुध के प्रभाव से जातक **को आयु के** पक्ष में कभी-कभी घोर संकटों का सामना **करना पड़ता** है तथा पुरातत्व की हानि होती है। ऐसा व्यक्ति **धन तथा कुटुंब** के संबंध में भी चिंतित और परेशान रहता **है। यहां से** बुध सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि **में द्वितीयभाव** को देखता है, इसलिए धन की कमी रहते हुए **भी जातक** अपने दैनिक खर्चों की पूर्ति करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और **जन्म-कुंडली** के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार **समझना चाहिए**—

सिंह लग्न: नवमभाव: बुध

५८९

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र **मंगल की** मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के **भाग्य तथा** धर्म की उन्नति होती है और वह धन, ऐश्वर्य **एवं सुखों** को प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति ईमानदार, **ईश्वर-भक्त** तथा सज्जन होता है। उसे कुटुंब का सुख भी **पर्याप्त मिलता** है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की **तुला राशि** में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को **भाई-बहन** का सुख भी मिलता है और उसके पराक्रम में **वृद्धि होती है**। ऐसी ग्रह स्थिति वाले जातक यशस्वी होते **तथा** निरंतर उन्नति करते जाते हैं।
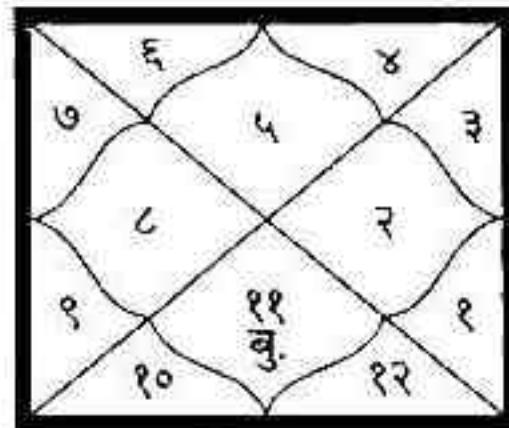
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' **की स्थिति** हो, उसे 'बुध' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
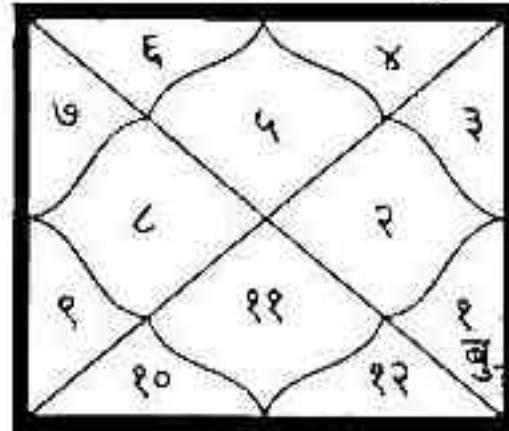
दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा लाभ प्राप्त होता है तथा राज्य के क्षेत्र में सम्मान एवं सफलता मिलती है। वह अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बहुत सफल होता है तथा पर्याप्त धन एवं प्रतिष्ठा अर्जित करता है। उसे धन तथा कुटुंब का पूर्ण सहयोग एवं सुख रहता है। यहां से बुध सातवीं मित्र-दृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है।

सिंह लग्न: दशमभाव ५१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए
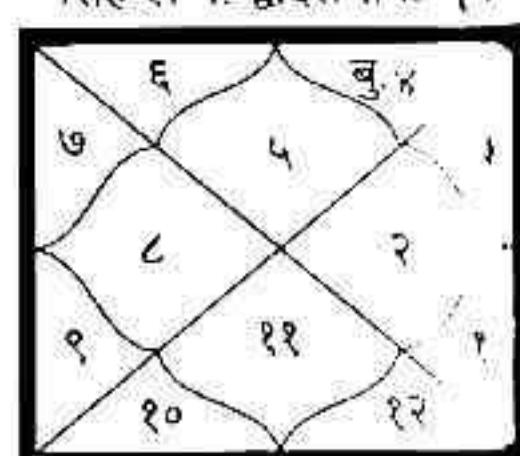
ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी विवेक-बुद्धि द्वारा यथेष्ट लाभ अर्जित करता है तथा धन की वृद्धि के साथ ही सुख तथा कीर्ति की वृद्धि भी होती रहती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः उसे संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक विद्वान, संततिवान, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

सिंह लग्न: एकादशभाव ५५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण उसे कष्ट का अनुभव होता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध में कुछ लाभ भी होता है। ऐसे जातक के कौटुंबिक सुख में कमी बनी रहती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि से षष्ठभाव को देखता है, अतः जातक शत्रु पक्ष में खर्च, धन एवं विवेक द्वारा अपना काम निकालता है, परंतु झगड़े-झंझटों में फंसकर उसे हानि भी उठानी पड़ती है।

सिंह लग्न: द्वादशभाव ५५

'सिंह' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: प्रथमभाव: गुरु

५९३

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित अष्टमेश गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव तथा दीर्घायु प्राप्त होती है। यहां से गुरु पांचवी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखता है, अतः विद्या, बुद्धि, संतान के पक्ष में शक्ति, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष में कुछ असंतोष रहता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है तथा पुरातत्त्व का भी कुछ लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अमीरी ढंग का जीवन व्यतीत करता है।
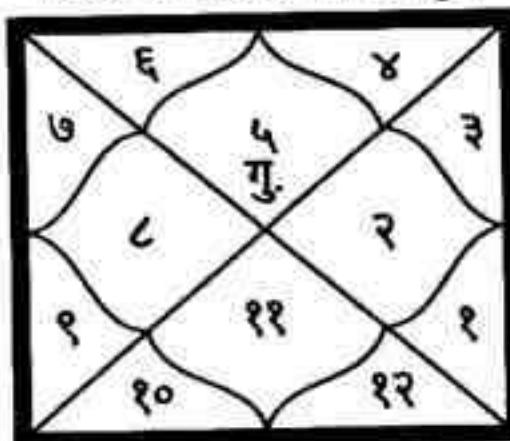
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: गुरु

५९४

दूसरे धन एवं कुटुंब स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुंबिक सुख की प्राप्ति होती है, परंतु संतानपक्ष से कुछ कष्ट होता है। यहां से गुरु पांचवीं नीच-दृष्टि से षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष से परेशानी तथा ननिहाल से हानि का योग बनता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से मतभेद रहता है तथा राजकीय संपर्कों से असंतोष मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपने सम्मान की वृद्धि के लिए प्रयत्न करता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: तृतीयभाव: गुरु

५९५
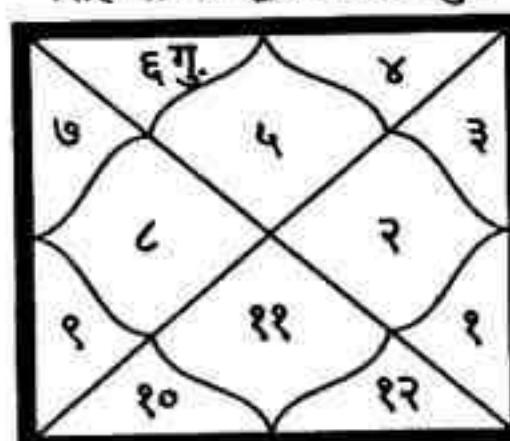
तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का भाई-बहनों से मतभेद रहता है तथा पराक्रम की शक्ति प्राप्त होती है। उसे कुछ कठिनाइयों के साथ संतान का सुख मिलता है तथा आयु की वृद्धि होती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कठिनाई का सामना करना पड़ता है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धियोग द्वारा भाग्य तथा धर्म की उन्नति होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण लाभ की शक्ति प्राप्त होती है। ऐसा जातक प्रत्येक क्षेत्र में साहस से काम लेता है।
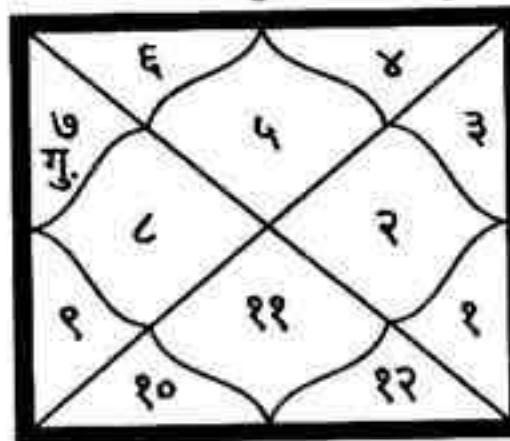
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: गुरु

५९६

चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान के सुख में कमी प्राप्त होती है, परंतु संतान एवं विद्या के पक्ष से लाभ होता है। यहां से गुरु के पांचवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता से वैमनस्य रहता है तथा राज्य के क्षेत्र से भी पूर्ण लाभ नहीं होता एवं नवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक होता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।
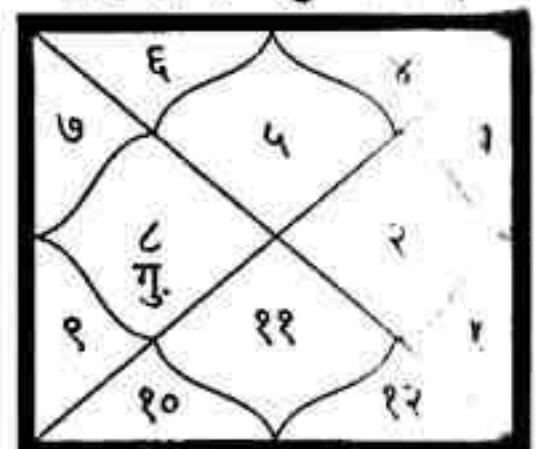
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: पंचमभाव: गुरु

५९७

पांचवें त्रिकोण एवं विद्या-बुद्धि-संतान के भवन में अपनी धनु राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में सुख एवं सफलता प्राप्ति होती है, परंतु गुरु के अष्टमेश होने के कारण कुछ कठिनाइयां भी आती हैं। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म की भी उन्नति रहती है। साथ ही पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से लाभ अच्छा होता है तथा नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शारीरिक सुख, मनोबल, प्रभाव एवं स्वाभिमान की प्राप्ति होती है, परंतु गुरु के अष्टमेश होने के कारण सुख-दु:ख दोनों का ही अनुभव होता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: षष्ठभाव: गुरु

५९८
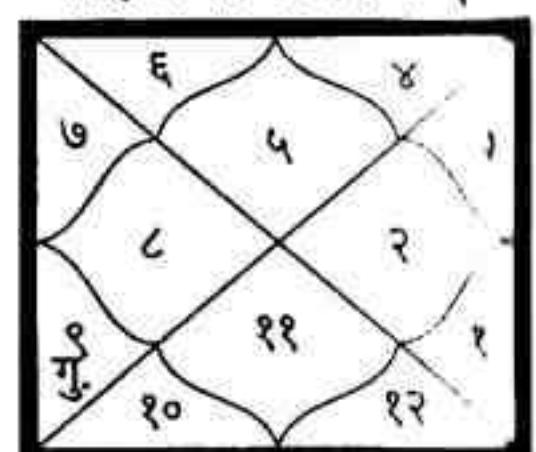
छठे शत्रु स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष से चिंता रहेगी तथा संतान एवं विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में भी कमजोरी बनी रहेगी। पुरातत्त्व की हानि तथा दैनिक जीवन के सुख में भी कमी आती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष में भी थोड़ी सफलता मिलती है। पिता से वैमनस्य भी रहता है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से व्यय अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों से अच्छी शक्ति मिलती है। नवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन एवं कुटुंब की सामान्य वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' **स्थित हो**, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः सप्तमभावः गुरु

५९९

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु **शनि की कुंभ** राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को **स्त्री से वैमनस्य तथा** दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ **कठिनाइयों का अनुभव** होता है। साथ ही विद्या तथा संतानपक्ष **से सामान्य शक्ति** प्राप्त होती है। आयु की वृद्धि तथा **पुरातत्त्व का** साधारण लाभ होता है। यहां से गुरु पांचवीं **मित्रदृष्टि से** एकादशभाव को देखता है, अतः लाभ अच्छा **होता है। सातवीं** मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से मान, **प्रतिष्ठा एवं सौंदर्य** की प्राप्ति होती है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से **तृतीयभाव को** देखने के कारण भाई-बहनों से वैमनस्य **रहता है**, परंतु पराक्रम की वृद्धि के लिए जातक प्रयत्नशील रहता है।
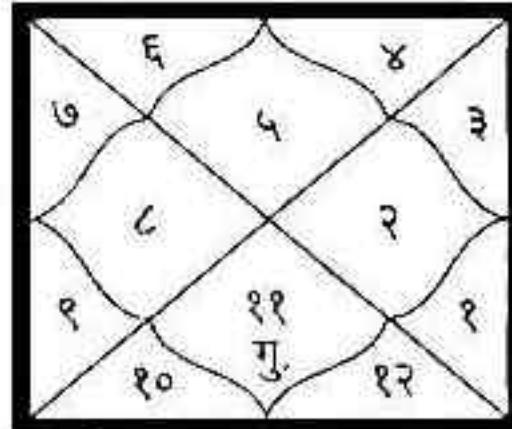
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' **स्थित हो**, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः अष्टमभावः गुरु

६००

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपनी राशि मीन **पर स्थित गुरु** के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व में वृद्धि **होती है।** अपने दैनिक जीवन में वह प्रभावशाली रहता है, **परंतु संतानपक्ष** से कष्ट पाता है और विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में **कुछ कमी** रहती है। यहां से गुरु पांचवीं उच्चदृष्टि से **द्वादशभाव** को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा **बाहरी स्थानों** का संबंध लाभदायक रहता है। सातवीं मित्र**दृष्टि से द्वितीय**भाव को देखने से जातक धन-वृद्धि के लिए **प्रयत्नशील** बना रहता है तथा कुटुंब का सामान्य सुख प्राप्त **होता है एवं** नवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण **माता तथा** भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' **स्थित हो**, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
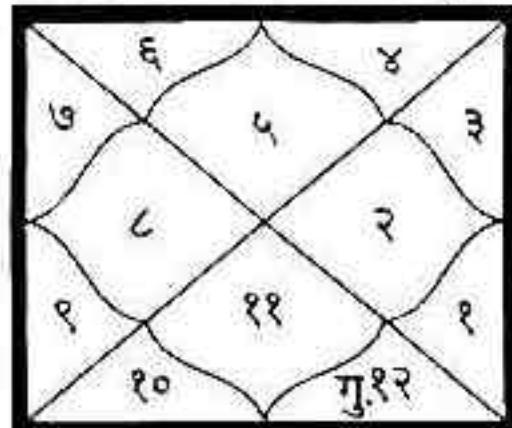
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु **के प्रभाव से** जातक अपनी बुद्धि के द्वारा भाग्य एवं धर्म के **क्षेत्र में सफलता** प्राप्त करता है। उसे आयु एवं पुरातत्त्व की **शक्ति भी** मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से **प्रथमभाव** को देखता है, अतः शरीर में प्रभाव, मनोबल एवं **सम्मान की प्राप्ति** होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को **देखने से** भाई-बहनों का संबंध असंतोषजनक रहता है, **परंतु पराक्रम** की वृद्धि होती है। नवीं दृष्टि से स्वराशि में **पंचमभाव** को देखने से संतान एवं विद्या-बुद्धि की यथेष्ट **उपलब्धि** होती है, परंतु गुरु के अष्टमेश होने के कारण **दैनिक क्षेत्र** में कुछ कमी का अनुभव भी होता है।
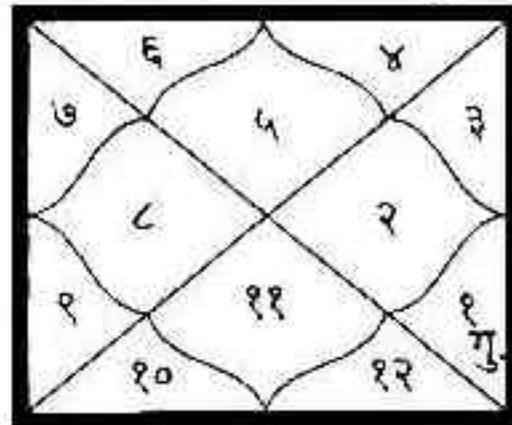
सिंह लग्नः नवमभावः गुरु

६०१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः दशमभावः गुरु

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को पिता के पक्ष से कुछ हानि मिलती हैं, परंतु राज्य के क्षेत्र में सम्मान प्राप्त होता है। वह पुरातत्त्व, आयु, संतान एवं विद्या-बुद्धि की शक्ति भी अर्जित करता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन एवं कुटुंब का सुख मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का सामान्य सुख उपलब्ध होता है। नवीं नीचदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से कुछ परेशानी होती है तथा झगड़े-टंटों के कारण चिंता बनी रहती है।
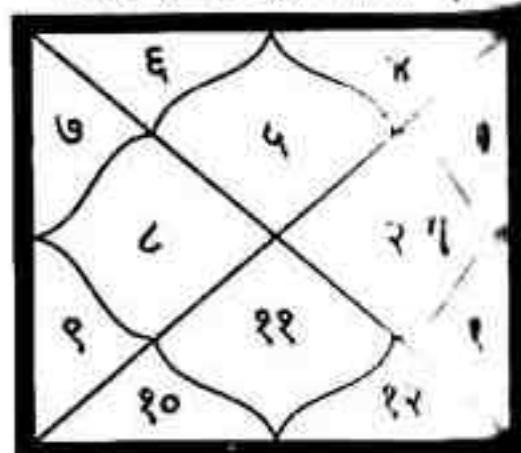
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः एकादशभावः गुरु

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी के पक्ष में सफलता मिलती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति में वृद्धि होती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन से मतभेद रहता है तथा पुरुषार्थ की वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में पंचमभाव को देखने के कारण संतान, विद्या एवं बुद्धि का लाभ मिलता है, परंतु ग्रह के अष्टमेश होने के कारण कुछ परेशानी रहती है। नवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा दैनिक रोजगार के क्षेत्र में कुछ वैमनस्य तथा परेशानियां बनी रहती हैं।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः द्वादशभावः गुरु
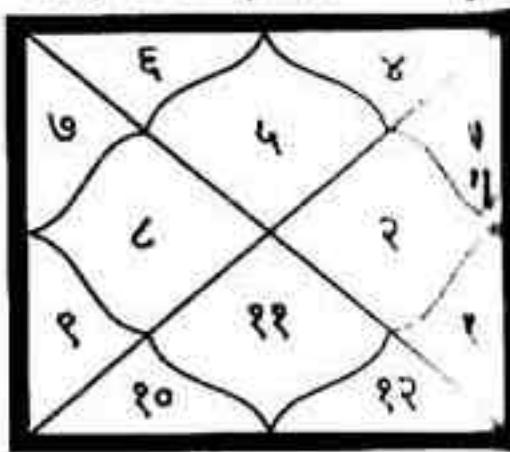
बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है तथा बाहरी स्थानों से लाभदायक संबंध स्थापित करता है। उसे विद्या, बुद्धि तथा संतान के पक्ष में कुछ असंतोषपूर्ण शक्ति मिलती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः जातक को माता, भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। सातवीं
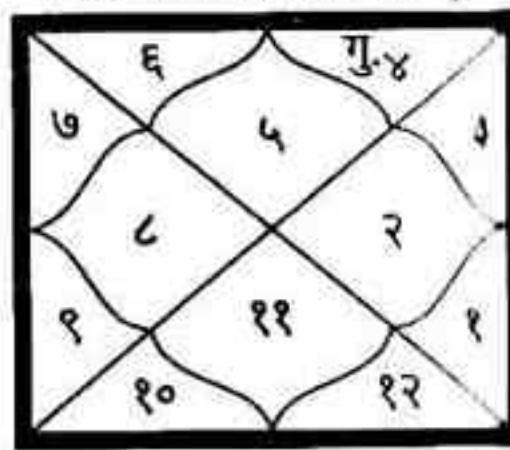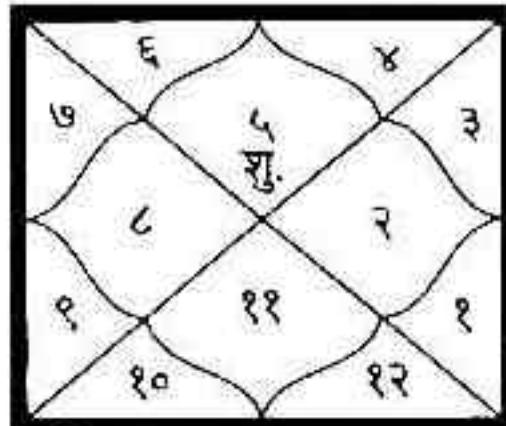
दृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष से परेशानी होती है। तथा नवीं दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है।

'सिंह' लग्न में 'शुक्र' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' स्थित हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव के जातक को सौंदर्य, श्रृंगार, मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती भाई-बहन एवं पिता के साथ कुछ मतभेद रहते भी सुख प्राप्त होता है। ऐसा जातक अपनी उन्नति बहुत परिश्रम करता है तथा चातुर्य का सहारा है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को कुंभ राशि में देखता है, अतः जातक को स्त्रीपक्ष सफलता, शक्ति तथा प्रतिष्ठा मिलती है दैनिक व्यवसाय में भी लाभ एवं सुख की प्राप्ति होती है।

सिंह लग्न: प्रथमभाव: शुक्र
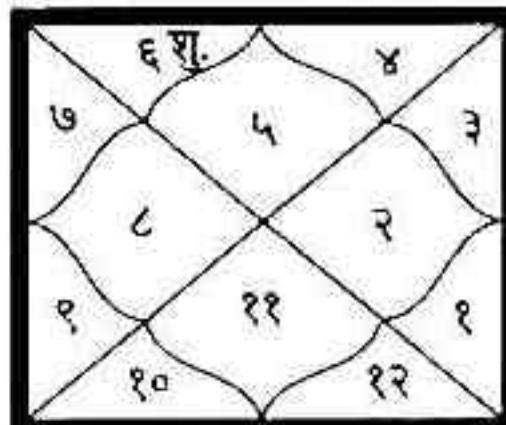
६०५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन तथा कुटुंब के भवन में बुध की कन्या में स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक की धन-की शक्ति में कमी आती है तथा कुटुंब का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। साथ ही पराक्रम, भाग्य, पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी कमी बनी रहती यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। ऐसा व्यक्ति अपना जीवन बड़े ठाट-बाट से बिताता है।

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: शुक्र

६०६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है, साथ ही पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा भी लाभ मिलता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक पुरुषार्थ द्वारा अपने भाग्य तथा धर्म की वृद्धि करता है। वह बहुत बड़े व्यवसाय का संचालन करता है तथा बड़ा हिम्मती, परिश्रमी, चतुर तथा योग्य होता है।

सिंह लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
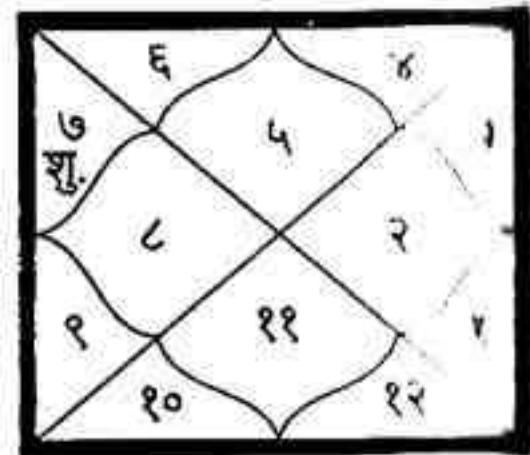
चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक माता के द्वारा सामान्य मतभेद के साथ सुख एवं शक्ति प्राप्त करता है और उसे भूमि, भवन आदि का लाभ भी होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी वृष राशि में दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से सुख, धन, सफलता, सहयोग एवं सम्मान का लाभ होता है। ऐसे जातक को भाई-बहन का सुख भी मिलता है तथा उसका रहन-सहन रईसी का होता है।

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या-बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि के पक्ष में सफलता प्राप्त होती है। वह अपनी योग्यता एवं चातुर्य के द्वारा प्रभावशाली तथा सम्मानित होता है और उसे भाई-बहन तथा पिता का सुख भी मिलता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: परिश्रम द्वारा उसे लाभ भी खूब होता है, साथ ही राज्य के पक्ष में भी उसे सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति चतुर, राजनीतिज्ञ, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है।
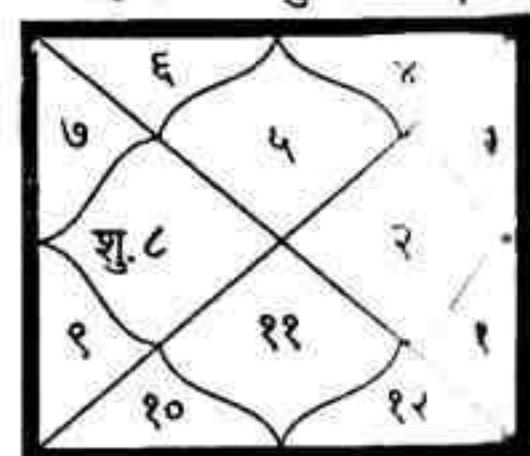
सिंह लग्न: पंचमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

६१०
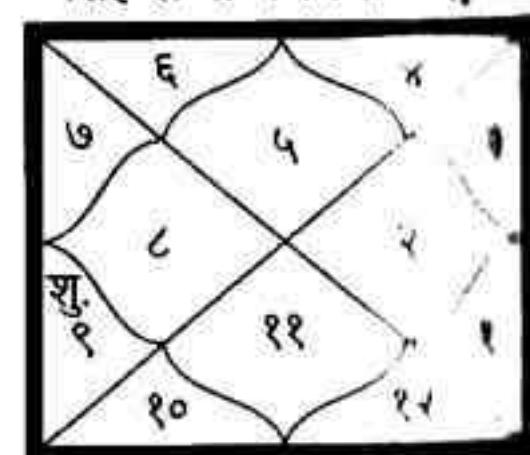
छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक अत्यंत चतुर तथा प्रभावशाली होता है तथा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। पिता के साथ कुछ मतभेद रहता है तथा राज्य के परिश्रम द्वारा उन्नति एवं प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। यहां से सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में व्ययभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है और स्थानों के संबंध से सुख मिलता है। ऐसा जातक गुप्त युक्तियों के बल पर सफलता पाता रहता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

६११
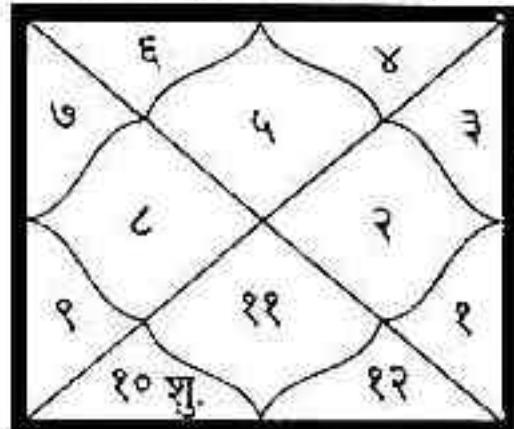
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक स्त्री व्यवसाय के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त करता है उसे भाई-बहन एवं पिता का सुख भी मिलता है। वह स्त्री के कार्यों का कुशलतापूर्वक संचालन करता है तथा होता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से सूर्य की राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक को शारीरिक शक्ति, प्रभाव, हिम्मत, पुरुषार्थ तथा मनोबल की प्राप्ति होती है। वह हुकूमत करने वाला, न्यायी, हिम्मती बहादुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

६१२

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ मिलता है। भाई-बहन तथा पिता के सुख में कुछ त्रुटिपूर्ण सफलता प्राप्त होती है तथा जीवन में बड़ा प्रभाव बना रहता है। उसे राज्य के क्षेत्र में भी सफलता एवं शक्ति मिलती है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: धन-संचय तथा कुटुंब के सुख में कुछ कमी रहती है।
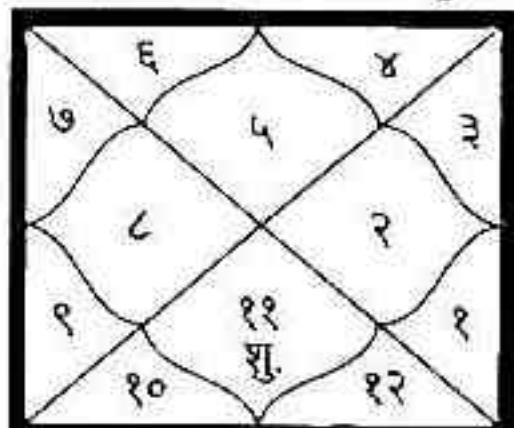
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता, सहयोग एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही तुला राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई–बहन की श्रेष्ठ शक्ति मिलती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक परिश्रमी, सद्‌गुणी, सुखी, हिम्मतवर, धनी, यशस्वी तथा चतुर होता है।
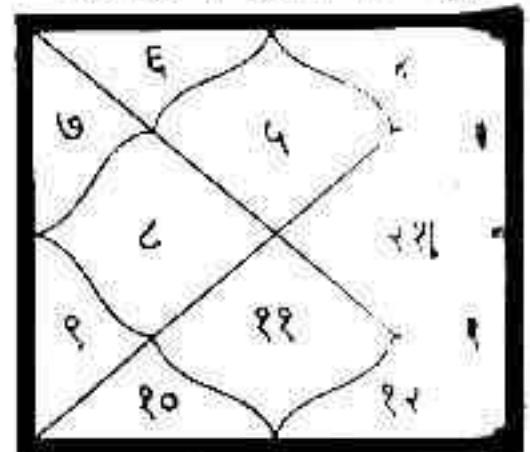
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से अत्यधिक शक्ति, सफलता, सहयोग, सम्मान एवं सुख की प्राप्ति होती है, साथ ही भाई-बहन का सुख भी मिलता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता, मकान तथा भूमि के सुख का श्रेष्ठ लाभ होता है। ऐसा जातक चतुर, परिश्रमी, उन्नतिशील, भाग्यवान तथा प्रभावशाली होता है।
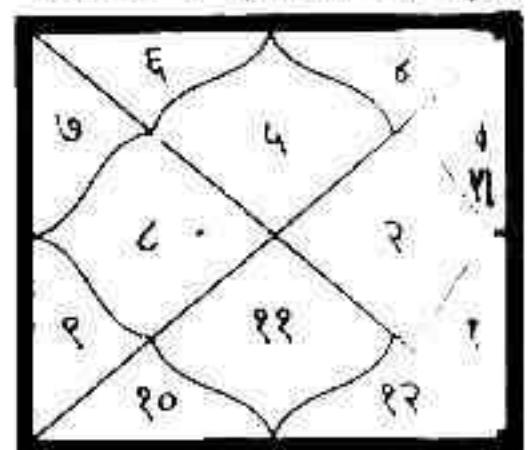
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी के साधनों में वृद्धि होती है तथा भाई-बहन एवं पिता का सुख भी प्राप्त होता है। वह राज्य के क्षेत्र से भी लाभ एवं सम्मान प्राप्त करता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से गुरु की धनु राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को विद्या-बुद्धि एवं संतान का विशेष लाभ होता है। ऐसा जातक अपनी वाणी द्वारा प्रभाव स्थापित करने वाला, सुखी, यशस्वी, सम्मानित तथा धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: द्वादशभाव: शुक्र

६१६

बारहवें व्यय तथा बाहरी संबंधों के भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सफलता मिलती है। उसे पिता तथा भाई बहन के सुख में कुछ हानि उठानी पड़ती है तथा शारीरिक पुरुषार्थ में भी कमजोरी रहती है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक अपने चातुर्य द्वारा शत्रु पक्ष में प्रभावशाली बना रहता है तथा अपनी हिम्मत के द्वारा झगड़े-झंझटों में विजय प्राप्त करता है।

'सिंह' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: प्रथमभाव: शनि

६१७
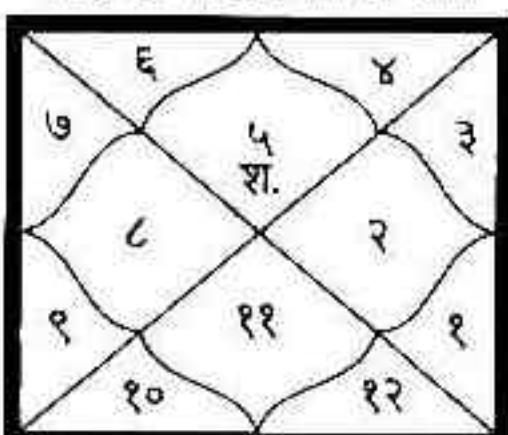
पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर के संबंध में परेशानी, रोग आदि का सामना करना पड़ता है, परंतु शत्रु पक्ष पर कुछ प्रभाव रहता है। यहां से शनि तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अत: भाई-बहन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने से कुछ परेशानियों के साथ स्त्री तथा व्यवसाय का सुख एवं लाभ मिलता है। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ सफलता, यश एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है।

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: द्वितीयभाव: शनि

६१८

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को धन के संबंध में हानि-लाभ तथा कुटुंब के पक्ष में सुख-दु:ख दोनों की ही प्राप्ति होती है। स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में बाधाएं आती हैं। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अत: माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी बनी रहती है तथा विघ्न उपस्थित होते रहते हैं। सातवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में भी असंतोष रहता है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण आमदनी में वृद्धि होती है। संक्षेप में ऐसा जातक सुख-दु:खपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।
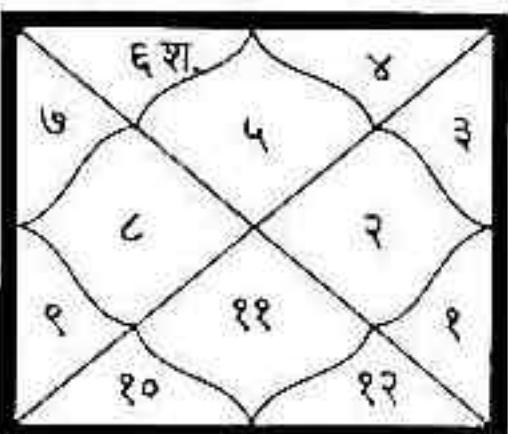
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम में बहुत वृद्धि होती है तथा भाई-बहन का सुख भी प्राप्त होता है। वह शत्रु पक्ष पर विजय पाता है तथा स्त्री के पक्ष में भी बहुत प्रभाव रखता है। दैनिक खर्च के मार्ग में परिश्रम द्वारा विशेष उन्नति करता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखता है, अत: संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में कुछ परेशानी रहती है। सातवीं नीचदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी आती है तथा परेशानी रहती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है, जिसके कारण परेशानी भी बनी रहती है।

सिंह लग्न: तृतीयभाव: शनि

६.१९
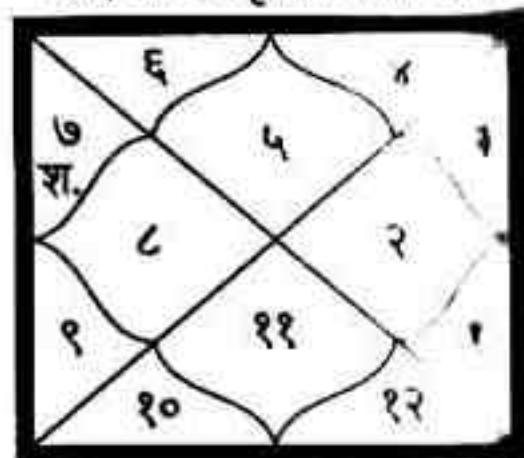
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केतु, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता के सुख तथा भूमि-भवन के संबंध में कुछ अशांति एवं परेशानियों के बाद सफलता मिलती है। साथ ही स्त्री तथा दैनिक खर्च के संबंध में भी असंतोष रहता है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है और कुछ कठिनाइयों के साथ सफलता मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता, सम्मान तथा सुख प्राप्त होता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में रोग एवं चिंताओं का निवास रहता है तथा शारीरिक सौंदर्य में भी कुछ त्रुटि रहती है।

सिंह लग्न: चतुर्थभाव: शनि

६.२०

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
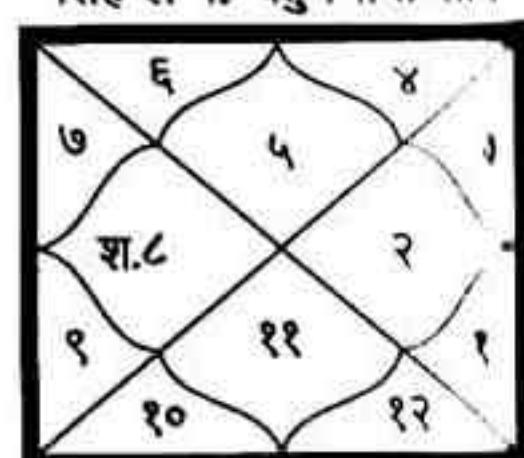
पांचवें त्रिकोण, विद्या, बुद्धि एवं संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को विद्या, बुद्धि एवं संतान के पक्ष से कुछ परेशानी एवं कमी बनी रहती है। यहां से शनि तीसरी दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री तथा व्यवसाय का सुख तो मिलता है, परंतु कुछ चिंताएं भी बनी रहती हैं। स्त्री बुद्धिमती होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी में वृद्धि होती है तथा दसवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुंब का सामान्य सुख भी प्राप्त करता है। साथ ही जातक विषयी भी अधिक होता है।

सिंह लग्न: पंचमभाव: शनि
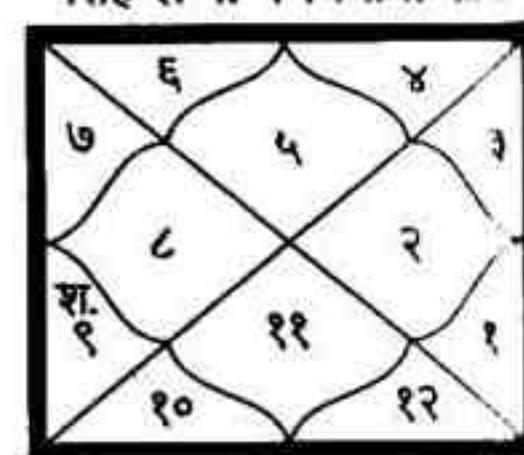
६.२१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' स्थित हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु भवन में अपनी ही मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष में प्रभावशाली रहता है। उसे अपनी ननिहाल से भी शक्ति प्राप्त होती तथा खर्च के संचालन में कुछ कठिनाई रहती है तथा से कुछ असंतोष बना रहता है। यहां से शनि शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः पुरातत्त्व लाभ होता है तथा आयु के क्षेत्र में कुछ अशांति है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण अधिक होता है और उसके कारण परेशानी रहती है। उच्चदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक परिश्रम तथा हिम्मत के द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाते उन्नति करता है।
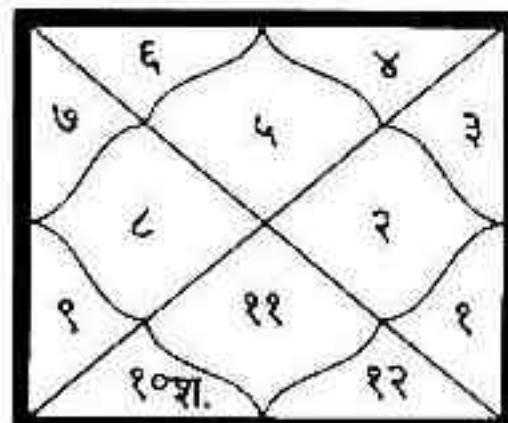
सिंह लग्न: षष्ठभाव: शनि

६२२

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' स्थित हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी ही राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शनि के प्रभाव से जातक को पक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा व्यवसाय में भी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। शत्रु पक्ष में प्रभाव है। यहां से शनि तीसरी नीचदृष्टि से नवमभाव को है, अतः भाग्य तथा धर्म की कुछ हानि होती है। यश आती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने शारीरिक सौंदर्य एवं शांति का ह्रास होता है तथा दसवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि, भवन के सुख में भी कमी बनी रहती है।

सिंह लग्न: सप्तमभाव: शनि

६२३

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
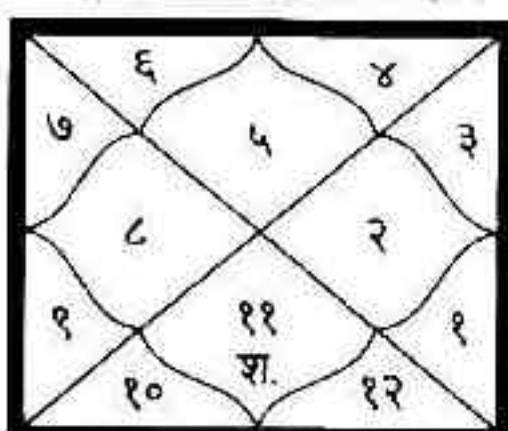
आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परंतु स्त्री पक्ष से अशांति, शत्रु पक्ष से परेशानियों तथा दैनिक व्यवसाय के पक्ष से मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता, राज्य एवं व्यवसाय में कुछ लाभ की प्राप्ति होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण जातक धन-वृद्धि के लिए प्रयत्नशील रहता है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। दसवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि पक्ष में कमी तथा संतानपक्ष से कष्ट होता है।

सिंह लग्न: अष्टमभाव: शनि
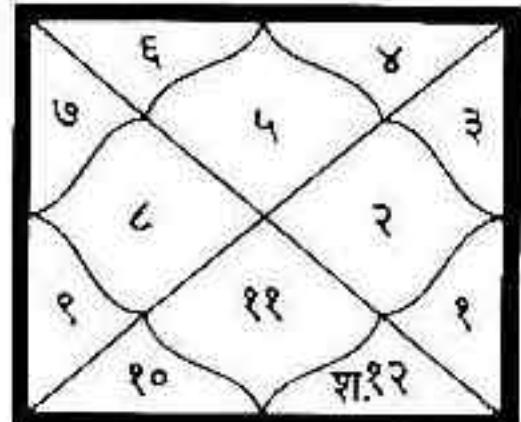
६२४

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में शनि की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

सिंह लग्नः नवमभाव : शनि

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कमी रहती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी की शक्ति प्राप्त होती है। सातवीं उच्च-दृष्टि से तृतीयभाव को देखने के कारण भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। दसवीं दृष्टि से स्वयं अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष से प्रभाव प्राप्त होता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों से कुछ हानि और कुछ लाभ रहता है। शनि के सप्तमेश होने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के क्षेत्र में ... मिलती है।
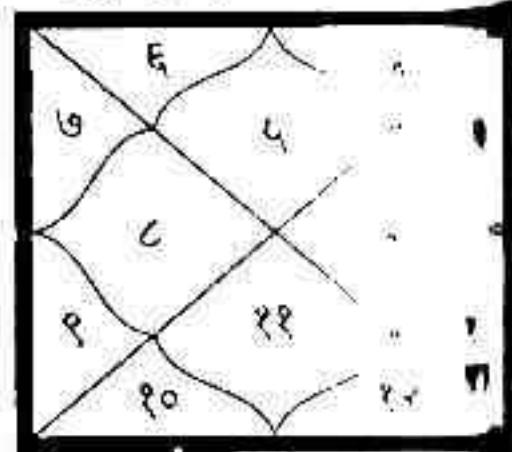
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में शनि की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः दशमभाव : शनि

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से परिश्रम द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है। साथ ही शत्रु पक्ष में भी प्रभाव रहता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के साथ वैमनस्य रहता है तथा भूमि-भवन का सुख कम मिलता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने से स्त्री तथा व्यवसाय का सुख तो मिलता है, पर शनि के षष्ठेश होने के कारण कुछ परेशानी भी रहती है।
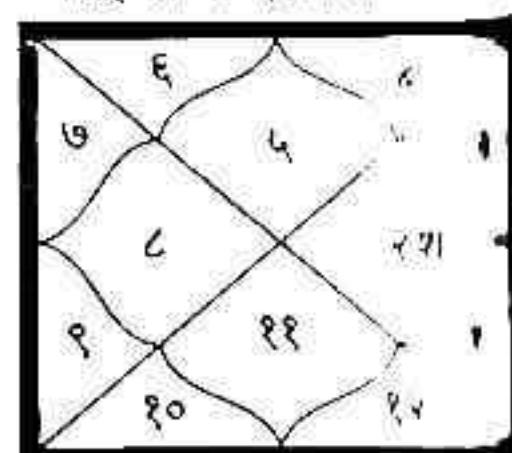
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्नः एकादशभावः शनि

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में सफलता मिलती है। विशेषकर शत्रु पक्ष से लाभ होता है। स्त्री का सुख कुछ परेशानियों के साथ मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा अच्छी सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आती है तथा
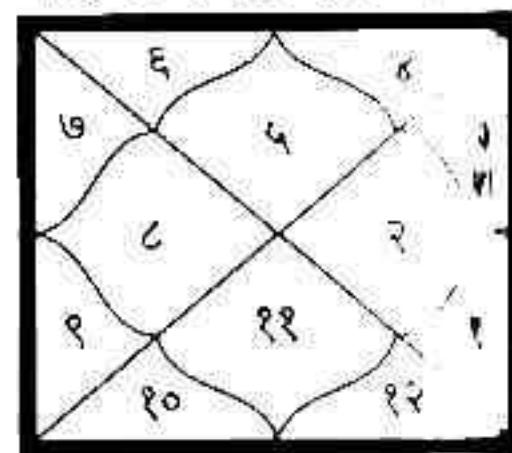
...भी होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से पंचमभाव को देखने के कारण संतान एवं विद्या के पक्ष ... रहती है तथा दसवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखने से पुरातत्त्व के लाभ में कमी ... तथा जीवन के संबंध में भी चिंताएं बनी रहती हैं।

...जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' ...स्थित हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

...बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि ... शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता ... बाहरी स्थानों के संबंध से कुछ लाभ होता है, साथ ... पक्ष से परेशानी मिलती है। यहां से शनि तीसरी ... से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन ... सुख की वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करता है। ...दृष्टि से षष्ठभाव को अपनी ही राशि में देखने से ...पर प्रभाव बना रहता है। दसवीं नीचदृष्टि से नवम ...को देखने के कारण भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती ... धर्म की भी हानि होती है, ऐसा जातक रोगी, ...ी, स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट पाने वाला भी होता है।

सिंह लग्न: द्वादशभाव: शनि

६२८

'सिंह' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' स्थित हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
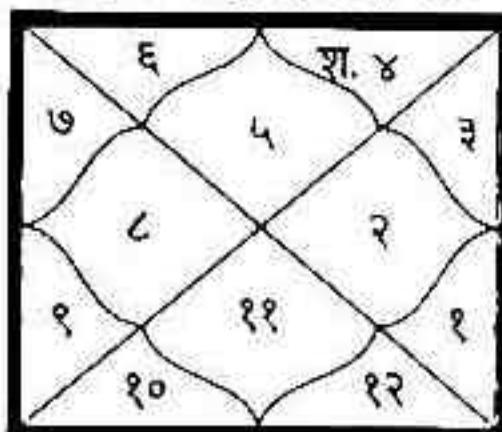
पहले केंद्र एवं शरीर के स्थान में अपने शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के शारीरिक ... में कमी आती है तथा सुख-शांति में बाधा पड़ती है। शरीर में कभी-कभी बड़े कष्ट का सामना करना पड़ता ... भीतरी चिंताओं से चिंतित बना रहता है। ऐसा व्यक्ति उच्च पद पर पहुंचने अथवा किसी विशेष कार्य को ...के लिए गुप्तयुक्ति, परिश्रम एवं साहस का सहारा ... और सफलता की ओर बढ़ता भी है।

सिंह लग्न: प्रथमभाव: राहु

६२९

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और ...कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे ...सार समझना चाहिए—

दूसरे धन कुटुंब भवन में अपने मित्र बुध की कन्या ...पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धन तथा कुटुंब के ...में कुछ परेशानियों के साथ उन्नति प्राप्त करता है। कभी उसे घोर आर्थिक कष्ट उठाना पड़ता है और ...होना पड़ता है, तो कभी कभी उसे अकस्मात ही जैसे धन की प्राप्ति भी हो जाती है। ऐसा व्यक्ति धन की ...के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों एवं गंभीरता से ...होता है। वह चतुर तथा चालाक भी होता है।
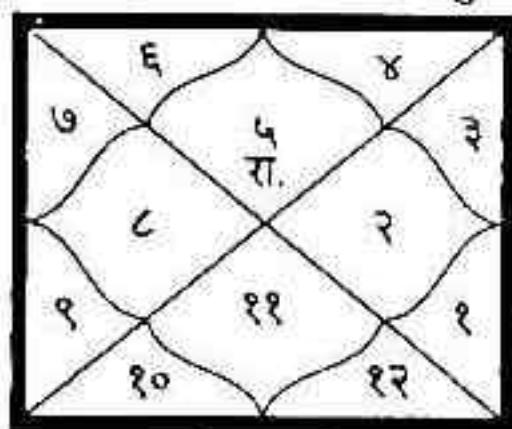
सिंह लग्न: द्वितीयभाव: राहु

६३०

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' ...स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
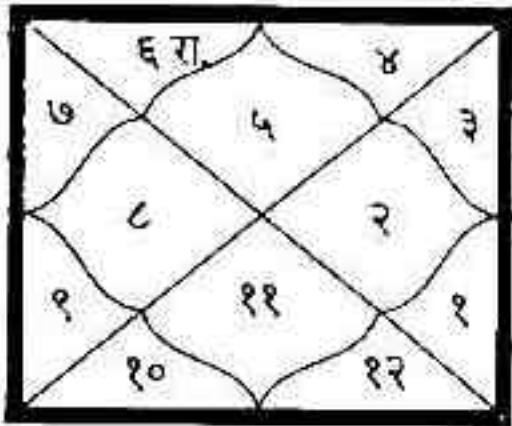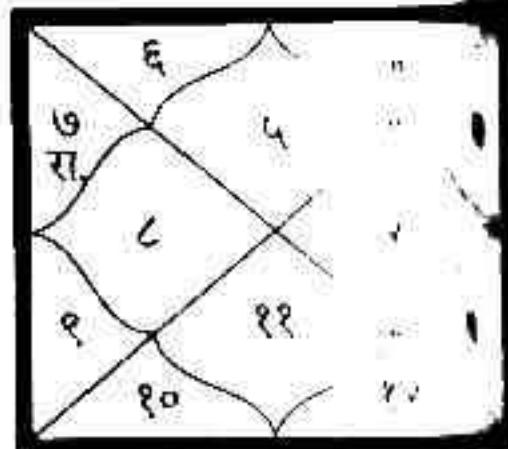
तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन की ओर से कुछ कष्ट प्राप्त होता है, परंतु पराक्रम में विशेष वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति गुप्त चातुर्य, धैर्य, साहस एवं परिश्रम का पुतला होता है। वह बड़ी गंभीरतापूर्वक अपने स्वार्थ को सिद्ध करता है। भीतर से कभी कमजोरी अनुभव करने पर भी प्रकट रूप से साहस का प्रदर्शन करता है तथा दृढ़ निश्चयी होता है।
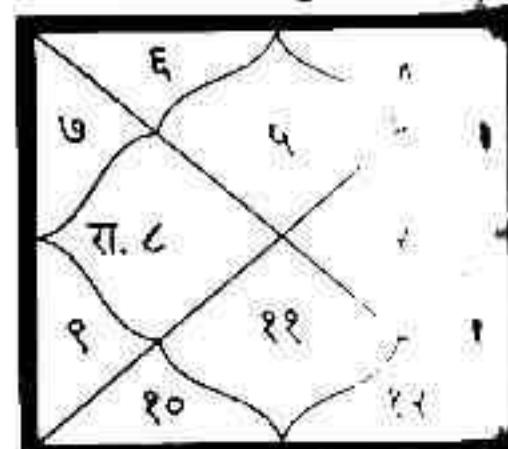
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' ... की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक माता के पक्ष से कष्ट पाता है। उसे भूमि, मकान आदि के सुख में भी बाधा मिलती है तथा घरेलू सुख-शांति में भी कमी रहती है। उसे अपनी मातृभूमि से दूर जाकर भी रहना पड़ता है। कभी-कभी उसे अपने घर के भीतर कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु भाग्य की शक्ति एवं हिम्मत के द्वारा वह सुख के साधनों को जुटाता रहता है तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।
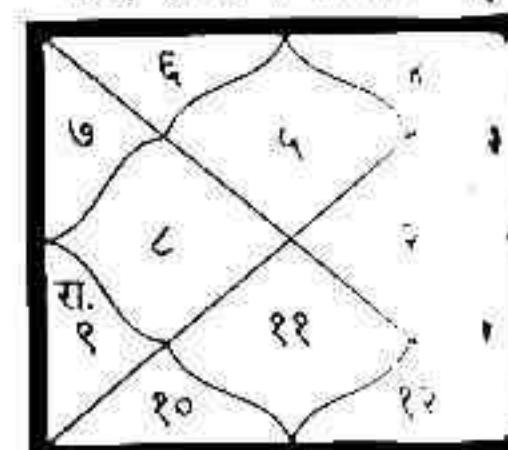
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' ... की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष में कष्ट मिलता है तथा विद्या की भी कमी रहती है। वह अपने बुद्धि-बल से अपनी अयोग्यताओं को छिपाता है, परंतु बोलचाल में शिष्टाचार, विनम्रता एवं सत्य का पालन नहीं कर पाता। वह गुप्त युक्तियों से स्वार्थ सिद्ध करने वाला होता है तथा कभी-कभी अपने मन में घबरा भी जाता है।
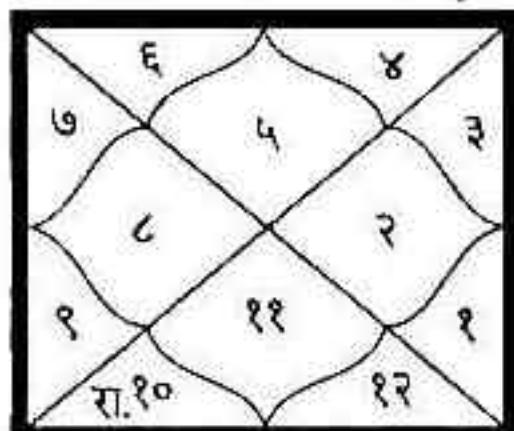
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' ... की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए–

छठे रोग तथा शत्रु के घर में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक युक्ति-बल के द्वारा शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है, परंतु कभी-कभी उसे शत्रुओं द्वारा प्राप्त परेशानी का भी विशेष रूप से अनुभव करता है। उसमें गुप्तधैर्य एवं साहस की शक्ति होती है, वह बड़ा हिम्मती होता है, अतः किसी समय झगड़े में अपनी बहादुरी का प्रदर्शन भी करता है। उसे ननिहाल पक्ष से कुछ हानि उठानी पड़ती है।

सिंह लग्न: षष्ठभाव: राहु
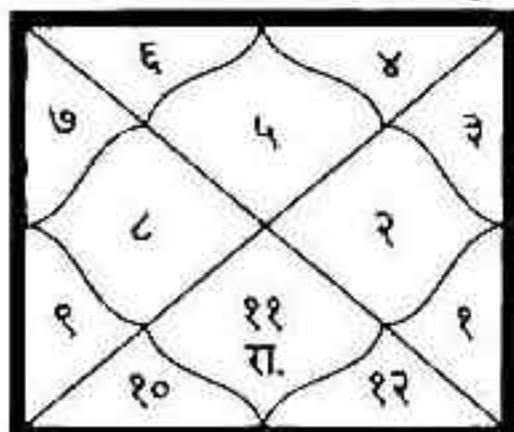
६३४

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी घोर कठिनाइयां आती हैं, परंतु यह बड़े परिश्रम, गुप्त-युक्ति, एवं हिम्मत के साथ अपने व्यवसाय एवं गृहस्थी का संचालन करता तथा स्त्री पक्ष के सुख की वृद्धि करता है। ऐसे व्यक्ति को कभी-कभी घोर संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु बाद में किसी प्रकार गृह-संचालन की शक्ति उसे प्राप्त हो जाती है।

सिंह लग्न: सप्तमभाव: राहु
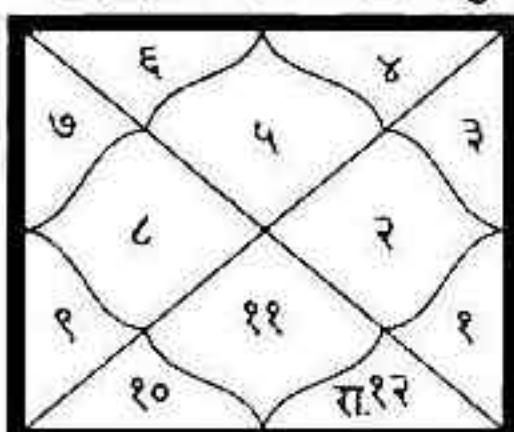
६३५

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य कष्ट का सामना करना पड़ता है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है तथा दैनिक कार्यों में भी चिंताएं एवं परेशानियां बनी रहती हैं। उसे पुरातत्त्व की हानि उठानी पड़ती है। किसी प्रकार गुप्त युक्तियों का आश्रय लेकर वह जैसे-तैसे अपने जीवन का निर्वाह करता है।

सिंह लग्न: अष्टमभाव: राहु
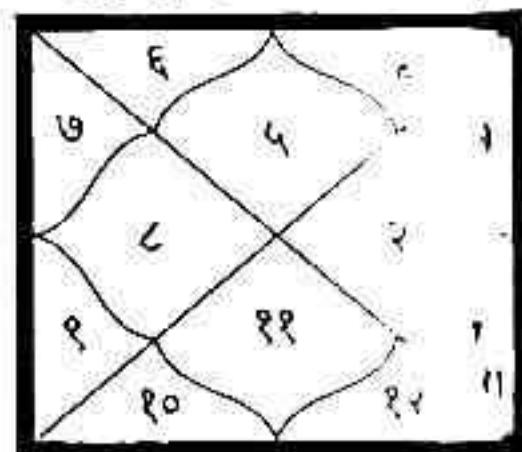
६३६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति में अनेक बार रुकावटें आती हैं तथा परेशानियां उठ खड़ी होती हैं। धर्म के पालन में भी उसे अरुचि रहती है। वह अपने भाग्य की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम, गुप्त युक्तियों, धैर्य तथा साहस का आश्रय लेता है और अनेक परेशानियों को पार करने के बाद थोड़ी-सी सफलता भी पा लेता है।

सिंह लग्न: नवमभाव: राहु
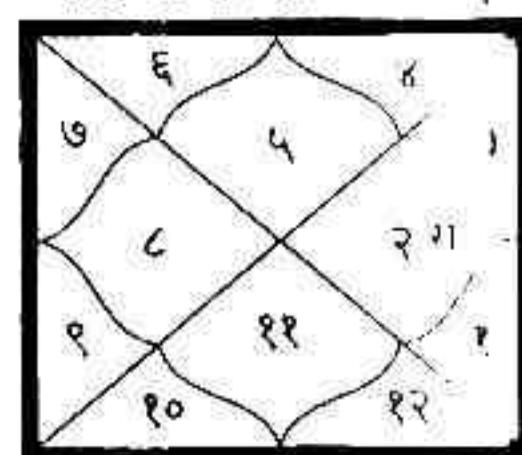
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने पिता के सुख में कमी रहती है तथा व्यावसायिक उन्नति में रुकावटें आती रहती हैं। उसे राज्य द्वारा भी परेशानी का योग प्राप्त होता है। परंतु राहु के मित्र राशिस्थ होने के कारण जातक अनेक कठिनाइयों के बाद गुप्त युक्तियों के बल पर व्यवसाय में थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है।

सिंह लग्न: दशमभाव: राहु
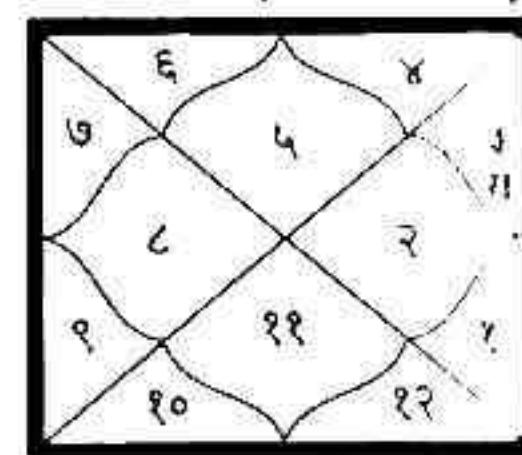
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक को आमदनी के मार्ग में विशेष सफलता प्राप्त होती है और कभी-कभी उसे आकस्मिक धन की प्राप्ति भी होती है। वह गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा परिश्रम के बल पर लाभ के क्षेत्र को बढ़ाता रहता है, परंतु कभी-कभी उसे हानि तथा परेशानी भी उठानी पड़ती है।

सिंह लग्न: एकादशभाव: राहु
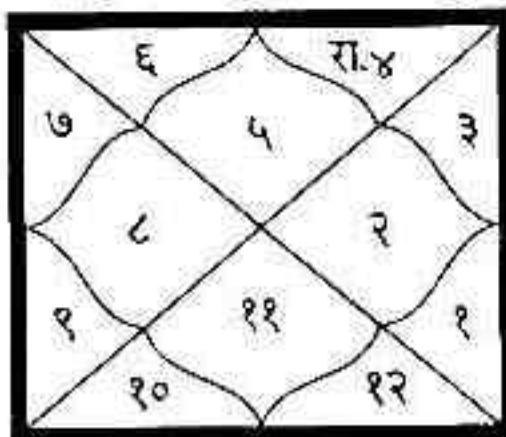
जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपना खर्च चलाने के लिए हर समय चिंतित रहना पड़ता है तथा कभी-कभी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से भी हानि उठानी पड़ती है। मन की प्रबल शक्ति तथा विचार के प्रयत्न, परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर अंत में उसे थोड़ी बहुत सफलता मिलती है।

सिंह लग्नः द्वादशभावः राहु

६४०

'सिंह' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' स्थित हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
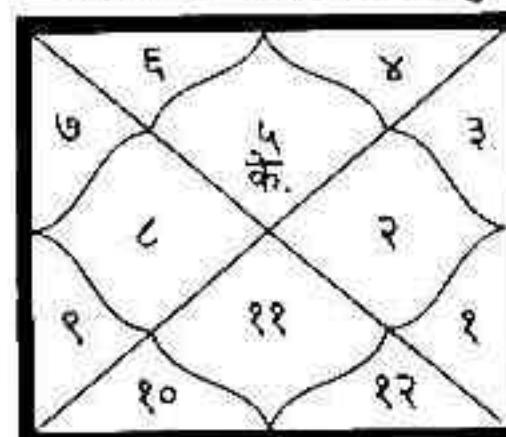
पहले केंद्र तथा शरीर स्थान के अपने शत्रु सूर्य की राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में कमी आती है तथा कभी कोई चोट भी लगती है अथवा घाव होता है। ऐसा व्यक्ति स्वयं भी चिंतित रहते हुए भी गुप्त धैर्य से काम लेता है तथा सुख की प्राप्ति के लिए विशेष परिश्रम करता है।

सिंह लग्नः प्रथमभावः केतु

६४१

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन एवं कुटुंब के स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को धन संचय के क्षेत्र में दुर्बलता प्राप्त होती है तथा धन की कमी के कारण अनेक प्रकार की चिंताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। वह धन-वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे ऋण भी लेना पड़ता है। वह गुप्त युक्तियों के बल पर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने का प्रयत्न करता है। उसे कुटुंब का पूर्ण सुख नहीं मिलता।

सिंह लग्नः द्वितीयभावः केतु

६४२

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के पक्ष में परेशानी एवं कष्ट का योग बनता है, परंतु पराक्रम की बहुत अधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थी, परिश्रमी, निडर, बड़ी हिम्मतवाला, चतुर तथा शक्तिशाली होता है। वह प्रत्येक काम को अपने बाहुबल के द्वारा पूरा करता है और लापरवाह तथा हठी होता है।

सिंह लग्न: तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के घर में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी माता के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग हटकर परदेश में जाकर रहने का योग भी बनता है। उसके घरेलू सुख में अशांति बनी रहती है। वह कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, परंतु अधिकतर परेशान ही रहता है।

सिंह लग्न: चतुर्थभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष से शक्ति मिलती है, परंतु कभी-कभी कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। वह विद्या के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परंतु विद्या बुद्धि में कुछ कमी ही बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान समझता है, परंतु उसकी वाणी अधिक प्रभावशाली नहीं होती।

सिंह लग्न: पंचमभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक अपने परिश्रम द्वारा शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है तथा कठिनाइयों को बड़ी हिम्मत एवं धैर्य के साथ पार करता है। वह बड़ी-बड़ी मुसीबतें आने पर भी घबराता नहीं है तथा गुप्त युक्तियों एवं आंतरिक साहस के बल पर निरंतर आगे बढ़ते रहने का प्रयत्न करता है। उसे ननिहाल के पक्ष से कुछ हानि प्राप्त होती है।
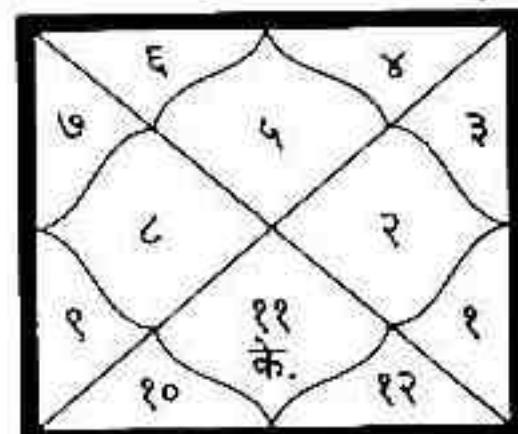
६४६

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: सप्तमभाव: केतु

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री के सुख में कमी एवं व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह गुप्त धैर्य एवं साहस के साथ अपनी गृहस्थी का पालन करता है तथा कभी-कभी भारी मुसीबतों में भी फंस जाता है, परंतु अपना धैर्य और साहस नहीं छोड़ता। अंततः उसे सफलता प्राप्त होती है। उसकी मूत्रेंद्रिय में विकार भी होता है।
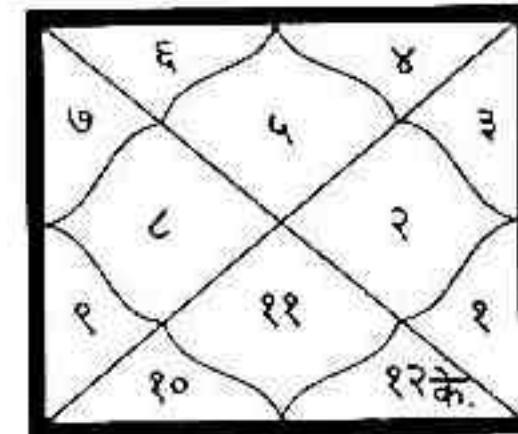
६४७

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सिंह लग्न: अष्टमभाव: केतु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को जीवन में अनेक बार मृत्यु-तुल्य संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व के संबंध में भी हानि उठानी पड़ती है। उसके पेट के निचले भाग में विकार रहता है वह हर समय चिंताओं से घिरा रहता है, परंतु अपने साहस और धैर्य को नहीं छोड़ता। अंततः उसे कठिनाइयों पर घोर परिश्रम एवं गुप्त युक्तियों के बल पर विजय भी प्राप्त होती है।

६४८

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्योन्नति में कठिनाइयां आती रहती हैं और उसे घोर परिश्रम करना पड़ता है। इसी प्रकार धर्म के पक्ष में भी कमजोरी बनी रहती है। भाग्यहीनता एवं धर्महीनता के कारण उसके यश को भी धब्बा लगता है। उसे कभी-कभी बड़े संकटों का शिकार भी होना पड़ता है। परंतु अंत में वह अपने गुप्त धैर्य, परिश्रम एवं साहस के बल पर सफलता एवं शक्ति प्राप्त करता है।

सिंह लग्नः नवमभाव: केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
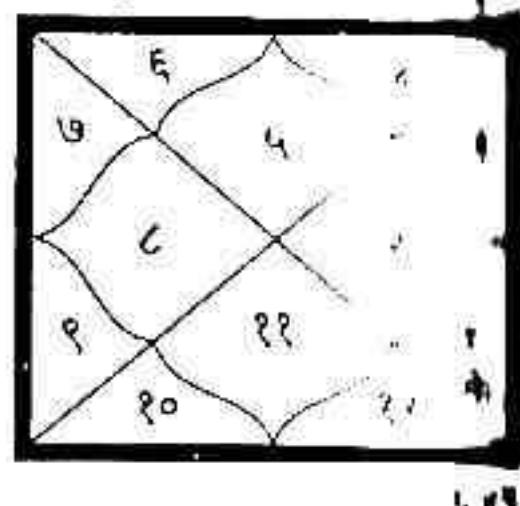
दसवें केंद्र, माता, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता-स्थान से कुछ कष्ट प्राप्त होता है तथा राज्य क्षेत्र में सफलता एवं मान पाने के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे व्यावसायिक क्षेत्र में भी कठिनाइयां प्राप्त होती हैं तथा प्रतिष्ठा के ऊपर भी संकट आ बनता है, परंतु वह गुप्त धैर्य, साहस, बुद्धि, चतुराई एवं परिश्रम के बल पर उन सबको पार करके उन्नति पाता है।

सिंह लग्नः दशमभाव: केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
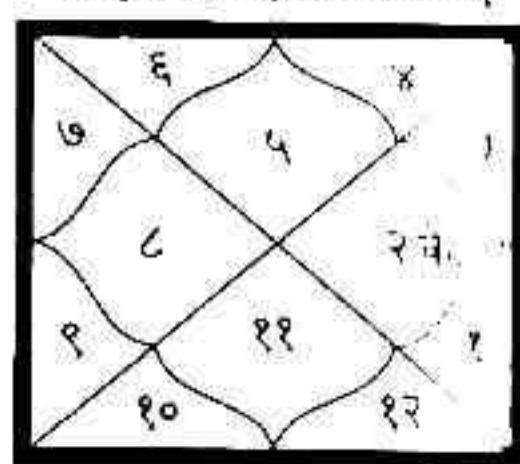
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपनी आय के क्षेत्र में घोर कठिनाइयों एवं संघर्षों का सामना करना पड़ता है। धनोपार्जन में कमी के कारण उसे दुःख का अनुभव होता है तथा कभी-कभी धन की कमी से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है, परंतु वह अपनी गुप्त युक्ति, धैर्य, परिश्रम तथा साहस के बल पर उन सब कठिनाइयों को पार करता है और लाभ उठाने के लिए उचित-अनुचित का विचार नहीं करता है।

सिंह लग्नः एकादशभाव: केतु

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
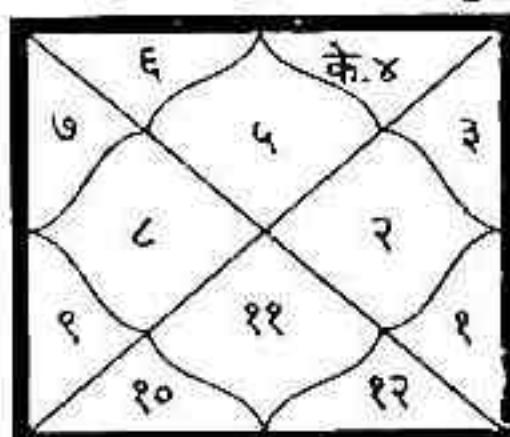
सिंह लग्न: द्वादशभाव: केतु
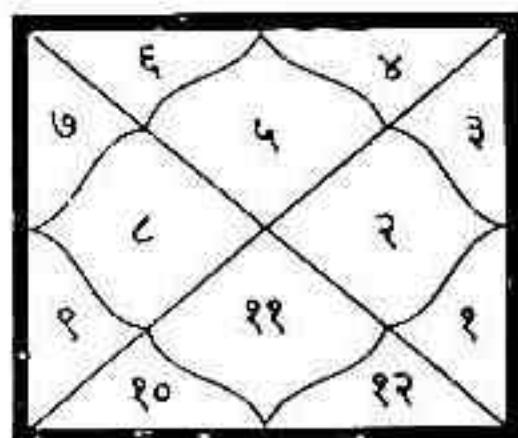
बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने खर्च के कारण कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। मानसिक चिंताएं घेरे रहती हैं। कई बार उसे हानि, एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है। परंतु अंत में अपने गुप्त धैर्य, साहस, युक्ति-बल तथा परिश्रम के द्वारा कठिनाइयों पर विजय पाता है और अपने काम को धीरे-धीरे चलाता रहता है।
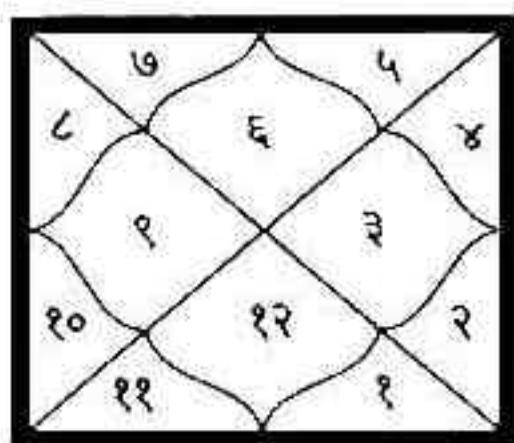
६५२

'सिंह' लग्न का फलादेश समाप्त

६५३

कन्या लग्न

६५४
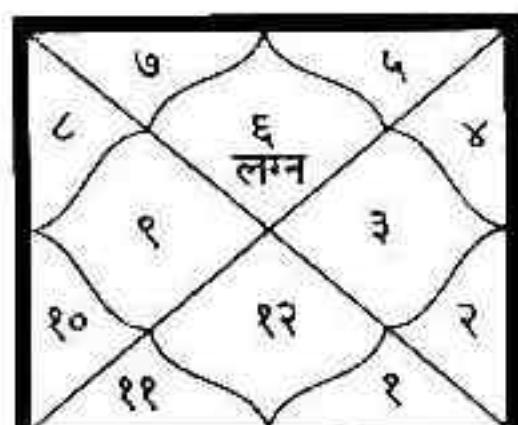
कन्या लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'कन्या' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातक कफ एवं पित्त प्रकृति वाला, सौंदर्यवान, शील, संतान से युक्त, स्त्री द्वारा पराजित, डरपोक, मायावी, काम-वासना से दुःखी शरीर, कामक्रीड़ा में निपुण, अनेक प्रकार के गुणों तथा कौशलों से युक्त, सदैव प्रसन्न रहने, सुंदर स्त्री प्राप्त करने वाला, श्रृंगार प्रिय, स्थूल तथा सामान्य शरीर वाला, बड़ी आंखों, प्रियवादी, अल्पभाषी, भ्रातृ द्रोही, गणित तथा धर्म में रुचि रखने वाला, गंभीर, अधिक और संतति वाला, यात्राप्रेमी, चतुर, नाजुक मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, अवस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा अंतिम अवस्था में दुःख प्राप्त करने वाला है। २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच उसकी भाग्योन्नति होती है। इस काल में वह अपने ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

'कन्या' लग्न

६५५

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'कन्या' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या

६५६ के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय ... राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या ... उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, ... वह 'कन्या' राशि से हटकर 'वृश्चिक' राशि में नहीं चला जाता। 'वृश्चिक' राशि ... वह 'वृश्चक' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः ... जन्म-कुंडली मे 'सूर्य' 'कन्या' राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण ... ६५६ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'तुला' ... द्वितीय भाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ७६८ का फलादेश भी देखना ... इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने ... पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों ... विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ से ८७४ तक ... है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों ... किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए ... विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक ... के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के ... स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश ... ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ... ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त ... वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णतः प्रभावहीन ...

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी ... में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने ... से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा ... ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तत्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव ... से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां ... जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में '... युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया गया है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी ... है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा ... काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पाते ... अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक ...

...में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-...-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव ...रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और ...जीवन में किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ...क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया ...

...प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की ...—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में ...है, अत: इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने ...मान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

...कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' ...संबंधी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५६ से ६६७ तक में देखना चाहिए।

...कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित ...का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना ...

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-...संख्या ६५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६५९ के अनुसार समझना चाहिए।
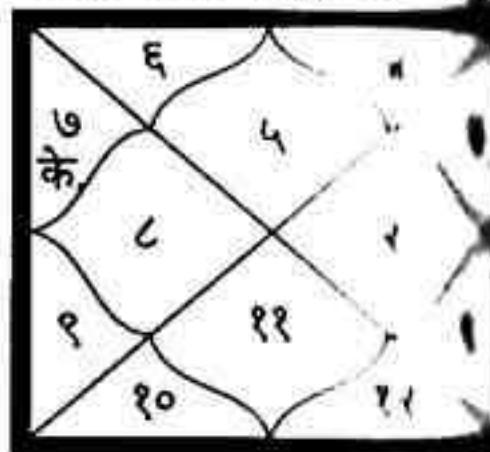
(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६६० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ...६६३ के अनुसार समझना चाहिए।

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के पक्ष में परेशानी एवं कष्ट का योग बनता है, परंतु पराक्रम की बहुत अधिक वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति पुरुषार्थी, परिश्रमी, निडर, बड़ी हिम्मतवाला, चतुर तथा शक्तिशाली होता है। वह प्रत्येक काम को अपने बाहुबल के द्वारा पूरा करता है और लापरवाह तथा हठी होता है।

सिंह लग्न: तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के घर में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपनी माता के सुख में कमी रहती है तथा मातृभूमि से अलग हटकर परदेश में जाकर रहने का योग भी बनता है। उसके घरेलू सुख में अशांति बनी रहती है। वह कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों के बल पर सुख प्राप्त करने का प्रयत्न करता है, परंतु अधिकतर परेशान ही रहता है।

सिंह लग्न: चतुर्थभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष से शक्ति मिलती है, परंतु कभी-कभी कष्ट का सामना भी करना पड़ता है। वह विद्या के क्षेत्र में सफलता पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है, परंतु विद्या-बुद्धि में कुछ कमी ही बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति स्वयं को बुद्धिमान समझता है, परंतु उसकी वाणी अधिक प्रभावशाली नहीं होती।

सिंह लग्न: पंचमभाव

जिस जातक का जन्म 'सिंह' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६७८ के अनुसार समझना चाहिए।
(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६७९ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८० से ६९१ तक में देखना चाहिए।
कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८० के अनुसार समझना चाहिए।
(२) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८१ के अनुसार समझना चाहिए।
(३) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८२ के अनुसार समझना चाहिए।
(४) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८३ के अनुसार समझना चाहिए।
(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८४ के अनुसार समझना चाहिए।
(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८५ के अनुसार समझना चाहिए।
(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८६ के अनुसार समझना चाहिए।
(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८७ के अनुसार समझना चाहिए।
(९) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली ६८८ के अनुसार समझना चाहिए।
(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८९ के अनुसार समझना चाहिए।
(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६९० के अनुसार समझना चाहिए।
(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६९१ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण- कुंडली संख्या ६९२ से ७०३ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०३ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०४ से ७१५ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७११ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१५ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१६ से ७२७ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२७ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या लग्न

६५४

कन्या लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४० से ७५१ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७५० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७५१ के अनुसार समझना चाहिए।

'कन्या' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातक कफ एवं पित्त प्रकृति वाला, सौंदर्यवान, [illegible]शील, संतान से युक्त, स्त्री द्वारा पराजित, डरपोक, मायावी, काम-वासना से दुःखी शरीर [illegible], कामक्रीड़ा में निपुण, अनेक प्रकार के गुणों तथा कौशलों से युक्त, सदैव प्रसन्न रहने [illegible], सुंदर स्त्री प्राप्त करने वाला, श्रृंगार प्रिय, स्थूल तथा सामान्य शरीर वाला, बड़ी आंखों [illegible], प्रियवादी, अल्पभाषी, भ्रातृ द्रोही, गणित तथा धर्म में रुचि रखने वाला, गंभीर, अधिक [illegible] और संतति वाला, यात्राप्रेमी, चतुर, नाजुक मिजाज, अपने मन की बात को छिपाने वाला, [illegible]वस्था में सुखी, मध्यमावस्था में सामान्य तथा अंतिम अवस्था में दुःख प्राप्त करने वाला [illegible] है। २४ से ३६ वर्ष की आयु के बीच उसकी भाग्योन्नति होती है। इस काल में वह अपने [illegible] ऐश्वर्य की वृद्धि करता है।

'कन्या' लग्न

६५५

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव मुख्यतः दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्म-कालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के अनुसार।

जातक की जन्म-कालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस भाव में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग द्वारा दी जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ लेना चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक के पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर-गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना प्रभाव डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'कन्या' राशि पर 'प्रथमभाव' में बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या

६५६ के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय [illegible] राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा है, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या [illegible] उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा, [illegible] वह 'कन्या' राशि से हटकर 'वृश्चिक' राशि में नहीं चला जाता। 'वृश्चिक' राशि [illegible] वह 'वृश्चिक' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरम्भ कर देगा, अतः जिस [illegible] जन्म-कुंडली मे 'सूर्य' 'कन्या' राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, उसे उदाहरण-कुं[illegible] ६५६ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों ग्रह-गोचर में सूर्य 'तुला' [illegible] द्वितीय भाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ७६८ का फलादेश भी देखना [illegible] इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को अपने [illegible] पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह के विषय में जान लेना चाहिए।

'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों [illegible] विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ से ८७४ तक में [illegible] है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'कन्या' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों [illegible] किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए [illegible] विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अतः उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालि[illegible] के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेशों के [illegible] स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश [illegible] ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ऊपर [illegible] ३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से अस्त होता है, वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णतः प्रभावहीन [illegible]।

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा अपनी [illegible] में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने [illegible] से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा अथवा [illegible] ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तत्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी भाव [illegible] से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां [illegible] जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में '[illegible] युति का प्रभाव' शीर्षक के अन्तर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया [illegible] है, अतः इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की मानी [illegible] है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों का दशा काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं रह पाते, अतः वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक के जीवन

काल में जिस ग्रह की दशा—जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, जन्म-ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष के प्रभाव रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और जीवन में किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रहगोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की —इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में गया है, अत: इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५६ से ६६७ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६७ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६६८ से ६७९ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६७८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६७९ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८० से ६९१ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए-

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६९० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६९१ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ६९२ से ७०३ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ६९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७०३ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०४ से ७१५ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१० के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७११ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१५ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१६ से ७२७ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२० के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२७ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२८ से ७३९ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३० के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७३९ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४० से ७५१ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४० के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५० के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५१ के अनुसार समझना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५२ से ७६३ तक में देखना चाहिए।

कन्या (६) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६० के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६२ के अनुसार समझना चाहिए।
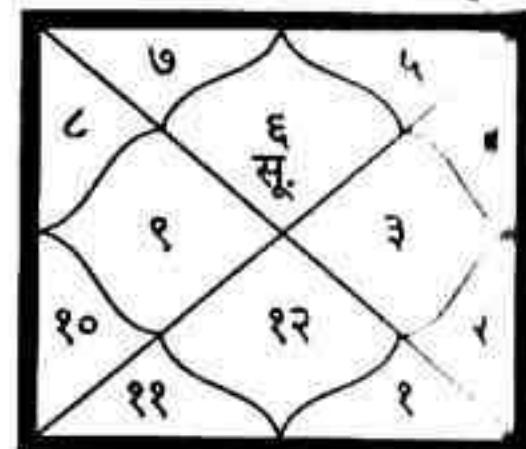
(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६३ के अनुसार समझना चाहिए।

'कन्या' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: प्रथमभाव: सूर्य

६५६

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह शानदार खर्च करने वाला होता है, परंतु कभी-कभी खर्च के कारण कुछ परेशानी का अनुभव भी होता है। बाहरी स्थानों के संपर्क से उसे विशेष लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: उसे स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष में कुछ असंतोष एवं हानि का भी सामना करना पड़ता है।
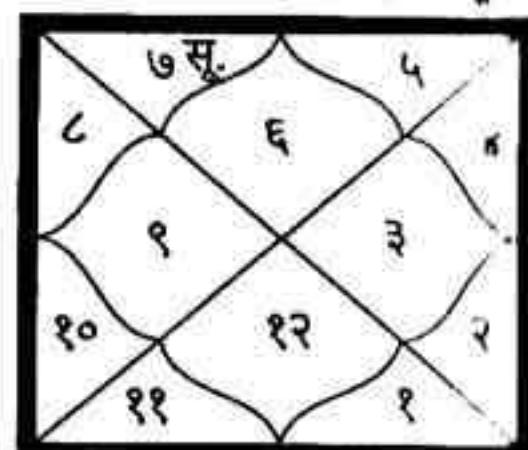
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: द्वितीयभाव: सूर्य

६५७

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के सूर्य के प्रभाव से जातक को धन तथा कौटुंबिक सुख की बहुत हानि होती है। बाहरी स्थानों का संबंध भी आर्थिक दृष्टि से दुर्बल बना रहता है तथा खर्च के मामले में परेशानी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से अपने मित्र मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक दीर्घायु होता है और उसे पुरातत्त्व का लाभ भी प्राप्त होता है।
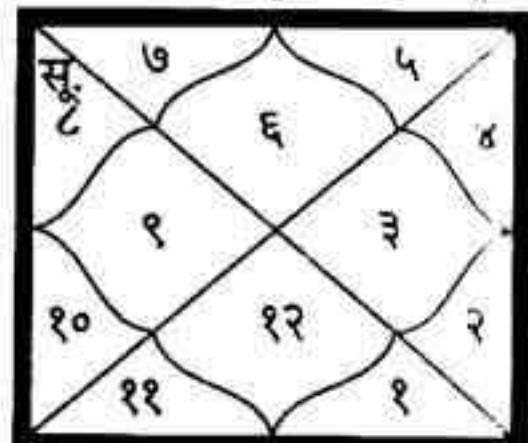
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: तृतीयभाव: सूर्य

६५८

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के पराक्रम की सामान्य-वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के सुख में कमी आती है। ऐसा जातक अपने पुरुषार्थ द्वारा खर्च भली-भांति चलाता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी लाभ उठाता है। वह बड़ा हिम्मती एवं प्रभावशाली भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक को भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में भी कमी का अनुभव होता है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: चतुर्थभाव: सूर्य

६५९

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के भवन में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को मातृ-सुख तथा भूमि, भवन आदि के लाभ में कमी रहती है। वह बाहरी स्थानों के संबंध से सुख प्राप्त करता है तथा खर्च को चलाता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में दशमभाव को देखता है, अतः जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से भी कुछ कमी तथा असंतोष का अनुभव होता है।
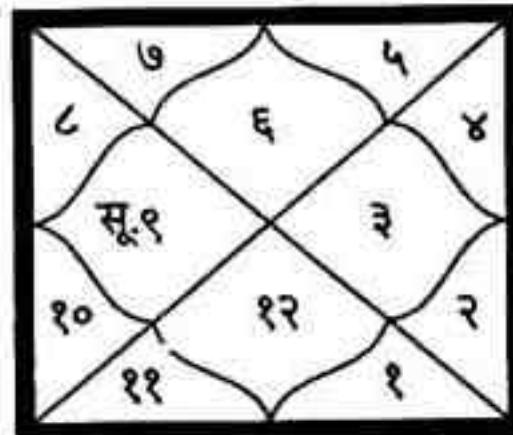
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: पंचमभाव: सूर्य

६६०

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि में स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के पक्ष में हानि प्राप्त होती है तथा खर्च के कारण दिमाग में परेशानी बनी रहती है। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से भी सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को कुछ कमियों के साथ लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ी घुमाव-फिराव की बातें करने वाला तथा चंचल-बुद्धि का होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: षष्ठभाव: सूर्य

६६१
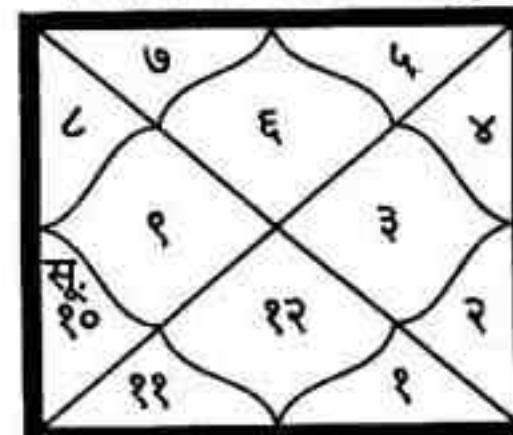
छठे शत्रु एवं रोग के भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को शत्रु-पक्ष से परेशानी रहेगी तथा खर्च अधिक पड़ेगा, परंतु वह उन पर अपना प्रभाव स्थापित करने में सफलता प्राप्त करेगा, क्योंकि छठे स्थान पर क्रूर ग्रह की राशि पर क्रूर ग्रह की स्थिति विशेष प्रभावशाली होती है। ऐसा व्यक्ति परिश्रम द्वारा अपना खर्च चलाता है और उसे बाहरी स्थानों के संबंध से सामान्य लाभ प्राप्त होता है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च की अधिकता बनी रहती है।
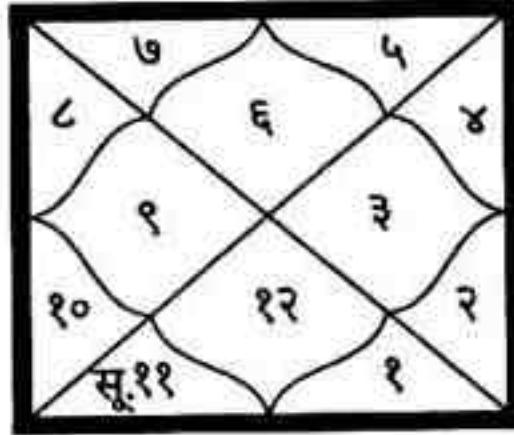
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः सप्तमभावः सूर्य

६६२

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित व्ययेश सूर्य के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ कमी एवं हानि का योग प्राप्त होता है। वह व्यवसाय द्वारा ही अपना खर्च चलाता है, तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ प्राप्त करता है, परंतु सूर्य के व्ययेश होने के कारण कभी-कभी व्यवसाय में नुकसान भी उठाना पड़ता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक का शरीर दुर्बल होता है। वह स्वभाव से चंचल, क्रोधी तथा खर्च के कारण चिंतित भी रहता है।
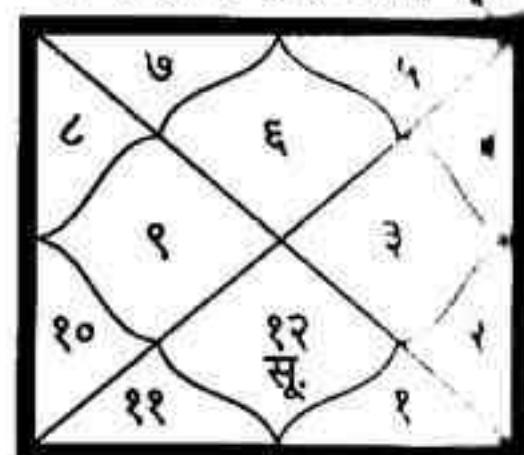
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः अष्टमभावः सूर्य

६६३

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में कुछ परेशानियों के साथ वृद्धि एवं सफलता प्राप्त होती है। खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी होता है। यहां से सूर्य सातवीं नीचदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन की अधिक हानि होती है तथा कुटुंब के सुख में भी कमी आती है। ऐसा व्यक्ति धन की ओर से चिंतित बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः नवमभावः सूर्य

६६४
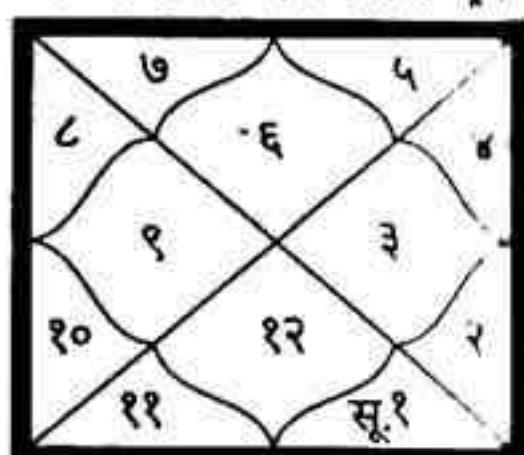
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म-स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाग्य एवं धर्म के क्षेत्र में कुछ कमी एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह भाग्य द्वारा ही खर्च-संचालन की शक्ति प्राप्त करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। ऐसे व्यक्ति प्रायः नास्तिक भी होते हैं। यहां से सूर्य अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन के सुख में कमी रहती है तथा पराक्रम की भी अधिक वृद्धि नहीं हो पाती।
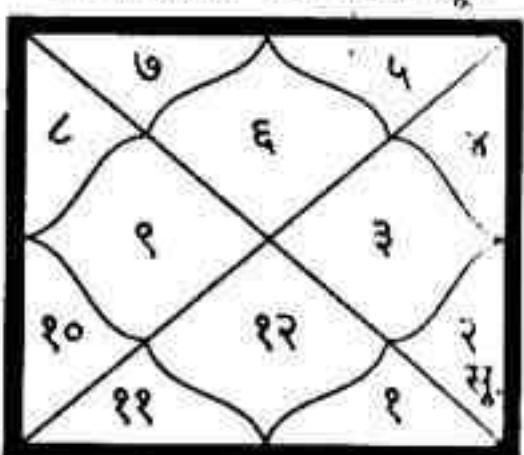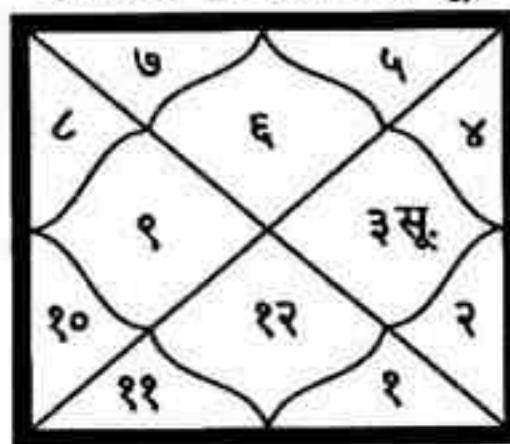
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः दशमभावः सूर्य

६६५

दसवें केंद्र, पिता एवं राज्य भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में हानि तथा कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह खर्च खूब करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ भी उठाता है। यहां से सूर्य अपनी मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि, मकान आदि के सुख में कुछ कमी रहती है। ऐसा व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।
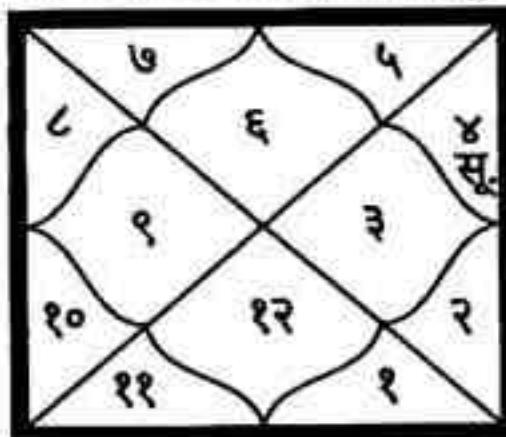
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः एकादशभावः सूर्य

६६६

ग्यारहवें लाभ भवन के अपने मित्र चंद्रमा को कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को लाभ तो खूब होता है, परंतु सूर्य के व्ययेश होने के कारण खर्च भी अत्यधिक बना रहता है। अतः आमदनी में वृद्धि होते हुए भी जातक को खर्च चलाने के संबंध में कुछ चिंता बनी रहती है। परंतु बाहरी स्थानों के संपर्क से उसे लाभ, सुख तथा सम्मान की प्राप्ति होती है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः संतानपक्ष से कुछ परेशानी रहती है तथा विद्या-बुद्धि का पक्ष भी कमजोर रहता है।
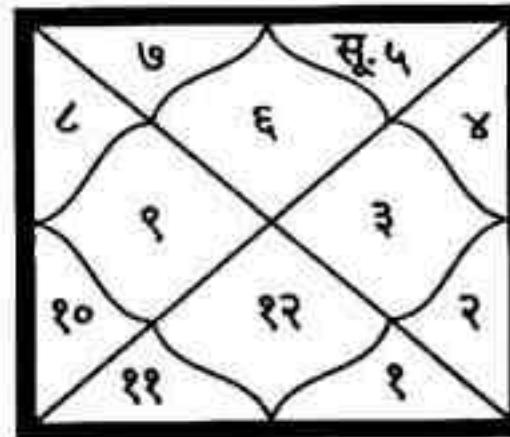
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वादशभावः सूर्य

६६७

बारहवें व्यय भवन में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक खर्च अधिक करता है, परन्तु बाहरी स्थानों के संबंध से पर्याप्त लाभ एवं सम्मान भी अर्जित करता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष एवं रोग आदि के कारण उसे कुछ परेशानी उठानी पड़ती है तथा खर्च भी करना पड़ता है, परंतु वह समस्त कठिनाइयों के समय साहस बनाए रखता है और शत्रु पक्ष पर प्रभाव स्थापित करने में सफल होता है।

'कन्या' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्या लग्न: प्रथमभाव

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य, मनोबल एवं प्रसन्नता की प्राप्ति होती है। वह शारीरिक-श्रम द्वारा धन का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त करता है तथा यशस्वी एवं प्रभावशाली भी बना रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः जातक को सुंदर स्त्री मिलती है और उसके पक्ष से लाभ भी होता है। इसी प्रकार व्यवसाय के द्वारा भी यथेष्ट लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति का गृहस्थ जीवन सुख एवं संतोषपूर्ण बना रहता है।
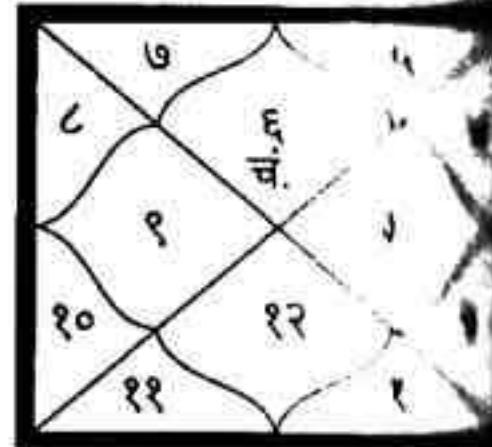
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्या लग्न: द्वितीयभाव

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुंब की शक्ति प्राप्त होती है, जिसके कारण उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है और वह खूब धन कमाता है। वह धन का संग्रह भी करता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति शान-शौकत का जीवन बिताता है तथा यशस्वी और प्रतिष्ठित होता है।
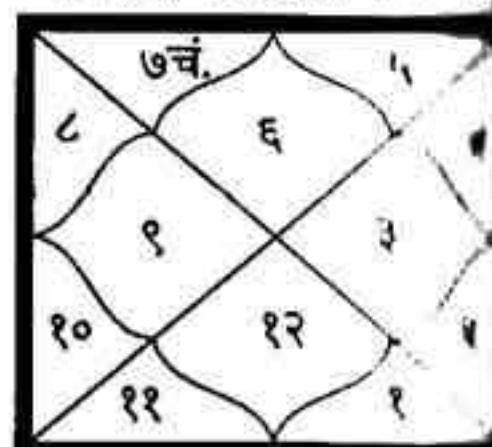
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्या लग्न: तृतीयभाव

तीसरे सहोदर एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के पक्ष से परेशानी होती है तथा पराक्रम में भी कुछ कमी बनी रहती है। वह मानसिक चिंताओं से ग्रस्त रहता है तथा धनोपार्जन के क्षेत्र में कठिनाइयों का सामना करता है। यहां से चंद्रमा सातवीं उच्चदृष्टि से अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः कठिन परिश्रम द्वारा उसके भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म-पालन में भी विशेष रुचि बनी रहती है।

कन्या लग्नः अष्टमभावः बुध

६९९

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौंदर्य में कमी आ जाती है। उसे पिता से भी अल्प सुख प्राप्त होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है। वह विदेश तथा घर से बाहर के अन्य स्थानों में रहकर भी जीविका चलाता है। ऐसे व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक अपने कुटुंब से प्रेम करता है तथा धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः नवमभावः बुध

७००

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। वह पिता से सहयोग एवं सुख प्राप्त करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सफलता एवं धन की प्राप्ति होती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन का सुख मिलता तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, सज्जन, यशस्वी, तथा धार्मिक होता है। उसकी उन्नति स्वयमेव होती रहती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः दशमभावः बुध

७०१

दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता, यश व लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति सुंदर शरीर वाला, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन शांति, सुख एवं वैभवपूर्ण बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: एकादशभाव: बुध

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक आमदनी के श्रेष्ठ योग को प्राप्त करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता एवं सम्मान पाता रहता है। उसे शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति भी होती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः जातक संततिवान होता है तथा उसे विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विद्वान, बुद्धिमान, वाणी का धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: द्वादशभाव: बुध

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परंतु उसे बाहरी स्थानों के संपर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति देश विदेश की यात्राएं करता है, परंतु उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से असंतोष बना रहता है तथा कभी कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में देखता है, अतः वह अपने शारीरिक-बल एवं अन्य युक्तियों द्वारा शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी भी होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: प्रथमभाव: गुरु

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वह माता, भूमि, मकान आदि के सुख को भी पाता है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अतः संतान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष में

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से पूर्ण सफलता, सहयोग, स्नेह, सुख, सम्मान और लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति धनी, सुखी, प्रतिष्ठित और यशस्वी होता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अत: जातक को माता के पक्ष से लाभ होता है तथा भूमि, मकान आदि का सुख भी मिलता है। संक्षेप में, ऐसा व्यक्ति सुखी, धनी तथा यशस्वी होता है।

कन्या लग्न: दशमभाव: चंद्र
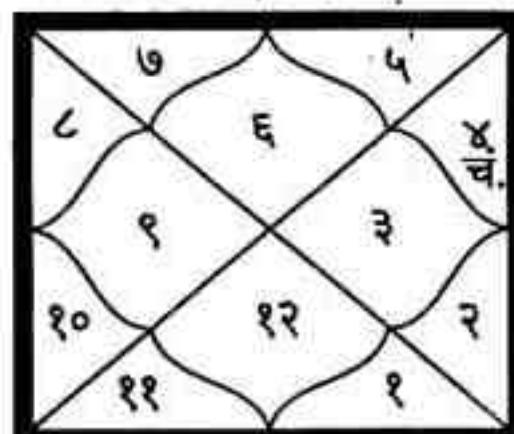
६७७

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपनी ही कर्क राशि पर स्थित स्वक्षेत्री चंद्रमा के प्रभाव से जातक को लाभ के क्षेत्र में विशेष सफलता मिलती है। वह अपने मनोबल द्वारा पर्याप्त धन कमाता है तथा प्रसन्न रहता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष में वैमनस्य तथा विद्या के पक्ष में कमी बनी रहती है। परंतु वह अपनी चतुराई द्वारा सभी क्षेत्रों में उन्नति करता चला जाता है।

कन्या लग्न: एकादशभाव: चंद्र
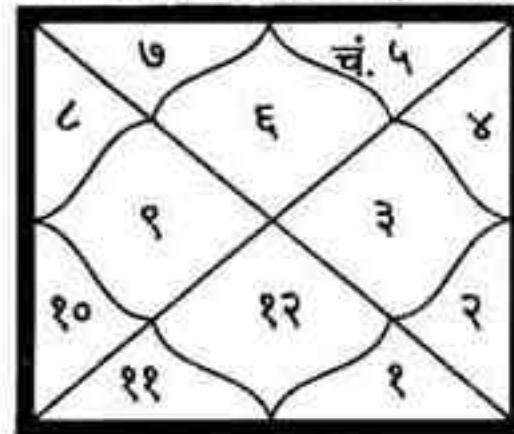
६७८

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक खर्च करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से पर्याप्त लाभ भी उठाता है। आमदनी और खर्च बराबर रहने के कारण उसके मन में कभी-कभी चिंताएं भी घर कर लेती हैं। यहां से चंद्रमा सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: वह खर्च एवं नम्रता की शक्ति द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता प्राप्त करता है। बीमारी अथवा अन्य प्रकार के झंझटों में भी उसका धन खर्च होता है।

कन्या लग्न: द्वादशभाव: चंद्र

६७९

'कन्या' लग्न में 'मंगल' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: प्रथमभाव: मंगल

पहले, केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आ जाती हैं, साथ ही भाई-बहन के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता एवं भूमि-मकान के सुख में कुछ कमी आती है। सातवीं मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयां आती हैं तथा आठवीं दृष्टि से अपनी ही मेष राशि में अष्टमभाव को देखने से आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति अपने ... प्रत्येक क्षेत्र में संघर्षों से मुकाबला करते हुए आगे बढ़ता है।
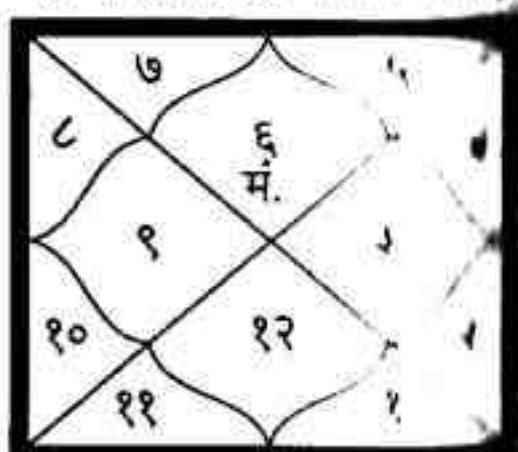
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: द्वितीयभाव: मंगल

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कुछ कमी मिलती है और वह कठिन पुरुषार्थ करता है। चौथी उच्चदृष्टि से शत्रु राशि में पंचमभाव को देखने से विद्या-बुद्धि की उन्नति के लिए अधिक प्रयत्न करता है तथा संतानपक्ष से कुछ कष्ट के साथ उन्नति मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में अष्टमभाव को देखने से आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति प्राप्त होती है तथा रहन-सहन ठाट-बाट का होता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति तथा धर्मपालन में कुछ कमी तथा असंतोष रहता है।
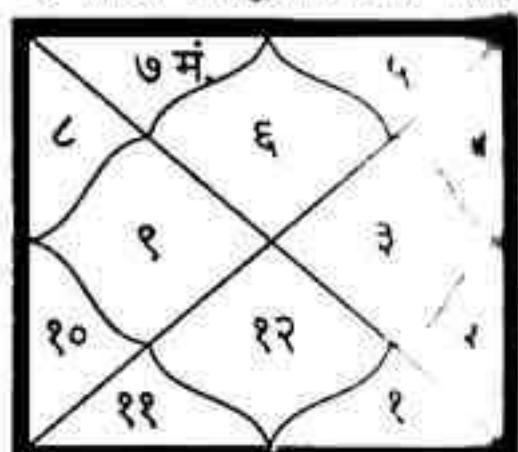
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: तृतीयभाव: मंगल

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपनी वृश्चिक राशिगत व्ययेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के सुख में कमी प्राप्त होती है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही आयु तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। चौथी शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से
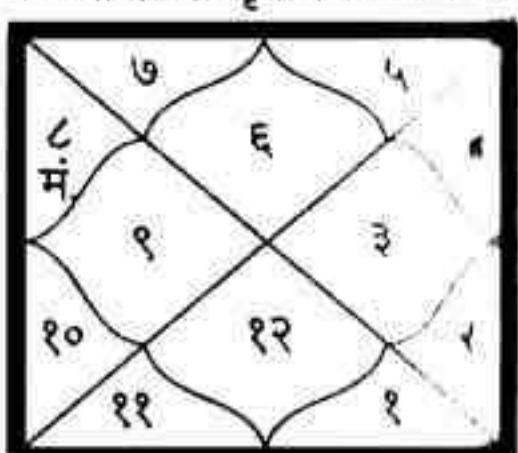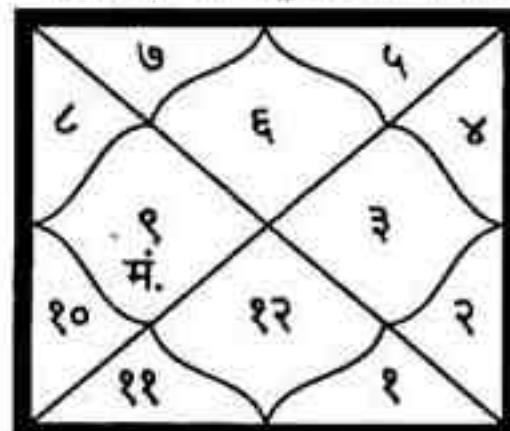
[illegible] तथा धर्म पालन के मार्ग में कठिनाइयां आती हैं एवं आठवीं मित्र-दृष्टि से [illegible] को देखने के कारण पिता के सुख में कमी आती है तथा राज्य एवं व्यवसाय के [illegible] विशेष परिश्रम करने पर भी थोड़ी सफलता मिलती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में [illegible]' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः चतुर्थभावः मंगल

६८३

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने मित्र [illegible] की धनु राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से माता, भूमि [illegible] मकान के सुख में कमी आती है। भाई-बहन का सुख [illegible] मिलता है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता [illegible] यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से सप्तमभाव को देखता [illegible] अतः स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ परेशानी के [illegible] शांति मिलती है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को [illegible] से पिता, राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता [illegible] लिए अधिक परिश्रम करना पड़ता है तथा आठवीं नीच-[illegible] से मित्र चंद्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को [illegible] से लाभ के मार्ग में कुछ कठिनाइयों का अनुभव होता है।
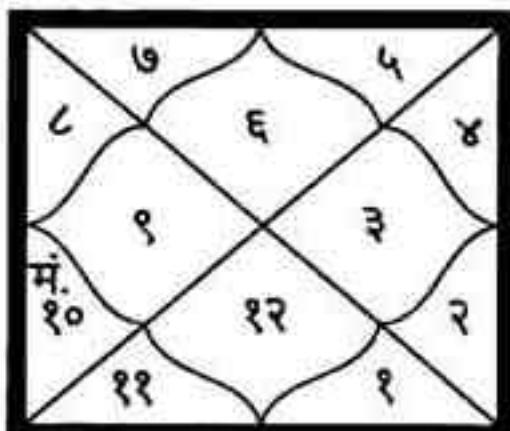
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में [illegible]' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः पंचमभावः मंगल

६८४

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के स्थान में अपने [illegible] शनि की मकर राशि पर स्थित अष्टमेश तथा उच्च के [illegible] के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष में कुछ परेशानी [illegible] साथ शक्ति मिलती है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में [illegible] प्राप्त होती है। यहां से मंगल चौथी दृष्टि से [illegible] में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं [illegible] शक्ति की वृद्धि होती है। सातवीं नीचदृष्टि से [illegible]भाव देखने से आमदनी के मार्ग में कठिनाइयां [illegible] हैं तथा आठवीं मित्रदृष्टि से व्यवसाय को देखने के [illegible] खर्च अधिक रहता है और बाहरी स्थानों के संपर्क [illegible] लाभ प्राप्त होता है व प्रभाव में वृद्धि होती है।
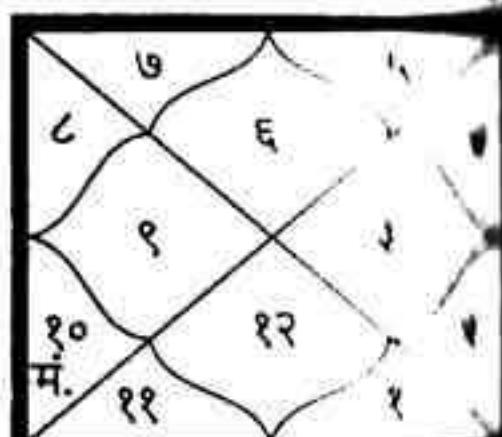
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में [illegible]' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु एवं रोग स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर विजय प्राप्त करता है। वह पुरुषार्थी तथा परिश्रमी होता है एवं भाई-बहन से कुछ विरोध प्राप्त करता है। आयु एवं पुरातत्त्व के संबंध में उसे शक्ति मिलती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्य एवं धर्म के पक्ष में कुछ कमी बनी रहती है। सातवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों से कम संबंध रहता है। आठवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी रहती है और रक्तविकार आदि रोग होते हैं।
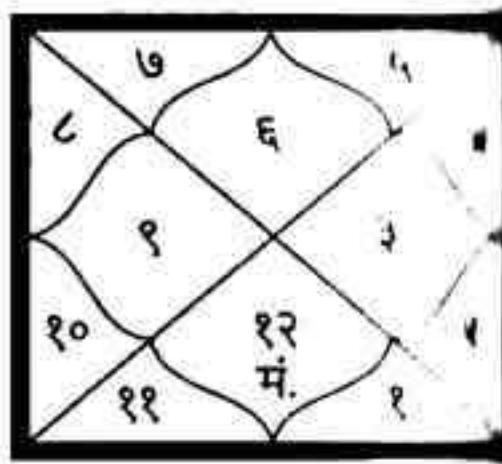
कन्या लग्न: षष्ठभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष से कष्ट मिलता है तथा आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ होता है। भाई-बहन के सुख में उतार-चढ़ाव आता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पुरुषार्थ द्वारा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ परेशानी के साथ उन्नति प्राप्त होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखने से शरीर में कुछ परेशानी के साथ हिम्मत की शक्ति मिलेगी एवं आठवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-संचय एवं कुटुंब के सुख में कमी बनी रहेगी।

कन्या लग्न: सप्तमभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
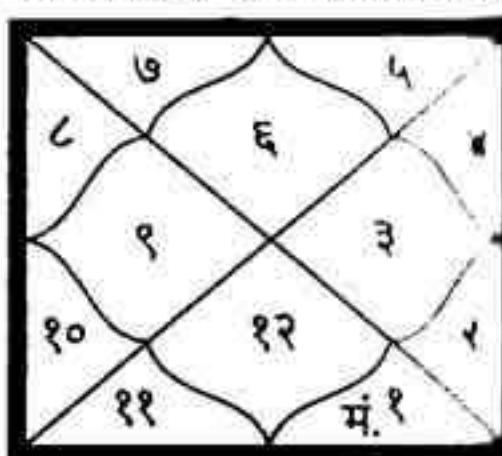
आठवें आयु तथा पुरातत्त्व के स्थान में अपनी मेष राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होता है तथा भाई-बहन के सुख में कमी आती है। यहां से मंगल चौथी नीचदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अत: आमदनी के पक्ष में कुछ कमी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय तथा कुटुंब के सुख में कुछ असंतोष रहता है। आठवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में तृतीयभाव को देखने के कारण पराक्रम तथा भाई-बहन के सुख में कुछ वृद्धि होती है तथा गुप्त हिम्मत अधिक बनी रहती है।

कन्या लग्न: अष्टमभाव: मंगल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः नवमभावः मंगल

६८८

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित अष्टमेश मंगल के प्रभाव से जातक को भाग्य तथा धर्म के पक्ष में कुछ कमी प्राप्त होती है, परंतु आयु एवं पुरातत्त्व की वृद्धि होती है। यहां से मंगल चौथी मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में तृतीयभाव को देखने से कुछ कठिनाइयों के साथ भाई-बहनों की शक्ति प्राप्त होती है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। आठवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने के कारण माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी का अनुभव होता है, परंतु सामान्यतः जीवन ठाट-बाट के साथ व्यतीत होता है।
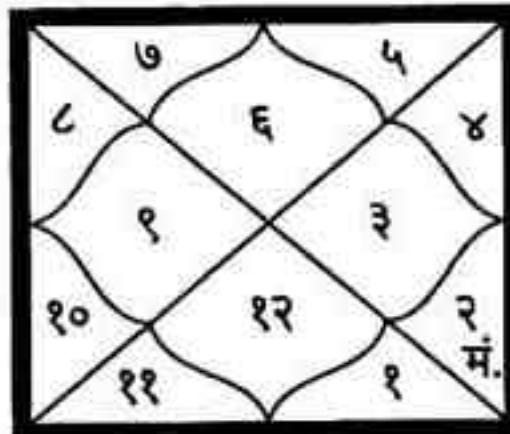
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपने शत्रु बुध की मिथुन राशि पर स्थित मंगल के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में कुछ कठिनाइयों के साथ सम्मान, सुख एवं सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही आयु एवं पुरातत्त्व की शक्ति भी मिलती है, परंतु भाई-बहन के संबंध में कुछ कमी बनी रहती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ विकार बना रहता है, परंतु हिम्मत अधिक होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का त्रुटिपूर्ण सुख मिलता है तथा आठवीं उच्चदृष्टि से पंचमभाव को देखने से शत्रु पक्ष में भी कुछ कमी के साथ सफलता मिलती है तथा विद्या-बुद्धि की अधिक वृद्धि होती है।

कन्या लग्नः दशमभावः मंगल

६८९

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'मंगल' की स्थिति हो, उसे 'मंगल' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
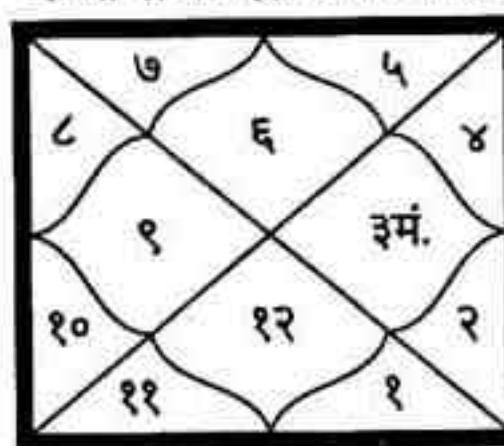
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्कराशि पर स्थित नीच के मंगल के प्रभाव से जातक को आमदनी के क्षेत्र में कुछ कठिनाई आती है तथा आयु एवं पुरातत्त्व के पक्ष में भी कुछ कमी रहती है। यहां से मंगल चौथी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-संचय में कुछ कमी तथा कौटुंबिक पक्ष में कुछ क्लेश उत्पन्न
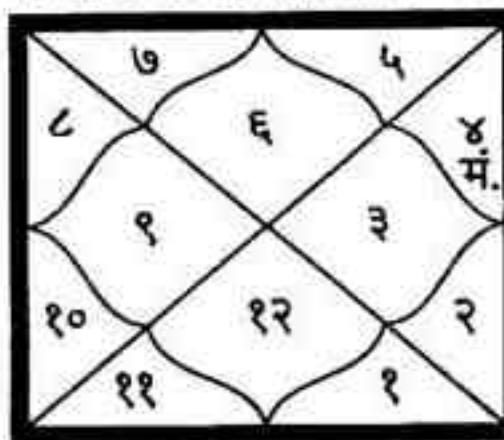
कन्या लग्नः एकादशभावः मंगल

६९०

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पराक्रम के द्वारा वह अपने धन एवं कुटुंब की वृद्धि भी करता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य एवं धर्म की बहुत वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी धार्मिक तथा भाग्यवान होता है।

कन्या लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है और धन तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अतः पिता की शक्ति मिलती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के पक्ष में लाभ होता है। वह धर्म का पालन भी करता है।

कन्या लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को संतान द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ ही धन, भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की मकर लग्न में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर निरंतर उन्नति करता चला जाता है।

कन्या लग्न: पंचमभाव: शुक्र

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपने बल से धन का विशेष संग्रह करता है तथा कुटुंब का भी पाता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय पक्ष से भी मान, सहयोग, सफलता एवं लाभ की प्राप्ति होती है। से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक को आयु एवं की शक्ति प्राप्त होती है। उसका रहन-सहन रईसी का होता है और वह धनी तथा सुखी भी होता है।

कन्या लग्नः द्वितीयभावः बुध
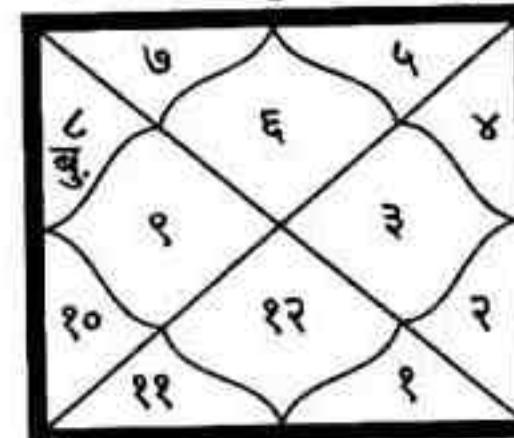
६९३

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के भवन में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। उसे पिता, राज्य व व्यवसाय के पक्ष से भी सफलता मिलती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य की उन्नति होती है तथा वह धर्म का पालन भी करता है। ऐसा व्यक्ति सुखी, यशस्वी, धनी, धार्मिक, पराक्रमी तथा प्रभावशाली होता है।

कन्या लग्नः तृतीयभावः बुध
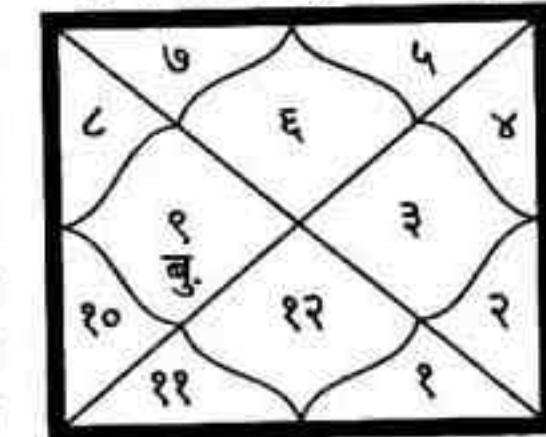
६९४

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान आदि का श्रेष्ठ सुख प्राप्त होता है। साथ ही उसे शारीरिक सौंदर्य एवं शांति-सुखपूर्ण वातावरण मिलता है। यहां से बुध सातवीं दृष्टि से अपनी ही मिथुन राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक को पिता की ओर से सुख मिलता है, राज्य की ओर से सम्मान की प्राप्ति होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता एवं उन्नति प्राप्त होती रहती है।

कन्या लग्नः चतुर्थभावः बुध

६९५

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह अपनी विद्या-बुद्धि के बल पर उच्च पद को पाता है तथा अनेक प्रकार के प्रशंसनीय कार्य करता है। यहां से बुध सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में एकादशभाव को देखता है, अतः जातक की आमदनी में वृद्धि होती रहती है। वह व्यवसाय, पिता एवं राज्य के द्वारा भी सहयोग एवं लाभ प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति सुंदर, स्वाभिमानी, सुखी तथा धनी होता है।

कन्या लग्न: पंचमभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
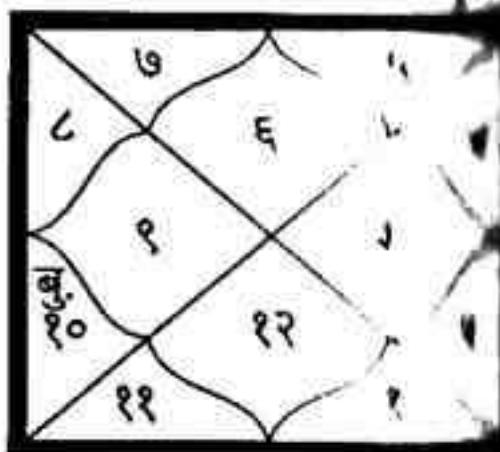
छठे शत्रु एवं रोग भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष में विवेक तथा अनेक प्रकार की युक्तियों द्वारा काम निकालता है। उसे अपनी ननिहाल के पक्ष से कुछ शक्ति मिलती है। ऐसे जातक को शारीरिक सौंदर्य में कमी तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ असंतोष बना रहता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से सूर्य की सिंह राशि में द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक का खर्च अधिक रहता है, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से उसे यथेष्ट लाभ एवं सुख प्राप्त होता रहता है।

कन्या लग्न: षष्ठभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
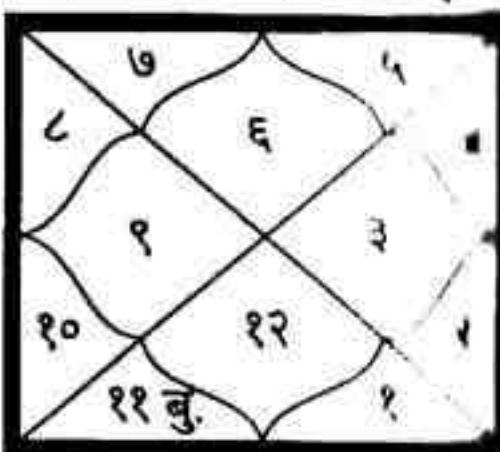
सातवें केंद्र, स्त्री एवं व्यवसाय के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक अपनी स्त्री के व्यक्तित्व के सम्मुख स्वयं को कुछ हीन-सा अनुभव करता है तथा व्यवसाय के पक्ष में भी कठिन परिश्रम करना पड़ता है। उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सामान्य सफलता एवं लाभ तथा सहयोग प्राप्त होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं उच्चदृष्टि से अपनी ही कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अतः जातक के शारीरिक सौंदर्य, मान, प्रभाव एवं सुख-शांति में भी सुख की कमी बनी रहती है।

कन्या लग्न: सप्तमभाव: बुध

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
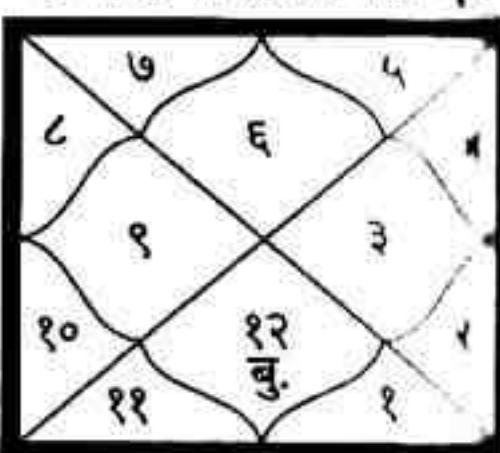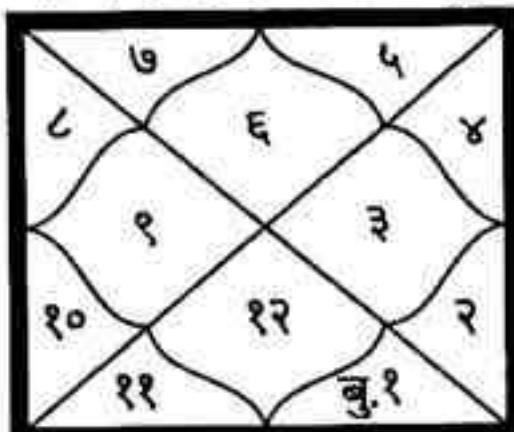
आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के शारीरिक सुख एवं सौंदर्य में कमी आ जाती है। उसे पिता का भी अल्प सुख प्राप्त होता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में भी कठिनाइयों का अनुभव होता है। वह विदेश तथा घर से बाहर के अन्य स्थानों में रहकर भी जीविका कमाता है। ऐसे व्यक्ति की आयु में वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शुक्र की तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक अपने कुटुंब से प्रेम करता है तथा धन की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम तथा गुप्त युक्तियों का आश्रय लेता है।

कन्या लग्नः अष्टमभावः बुध

६९९

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक के भाग्य एवं धर्म की उन्नति होती है। वह पिता से सहयोग एवं सुख प्राप्त करता है। राज्य तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी सम्मान, सफलता एवं धन की प्राप्ति होती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अतः जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी, सज्जन, यशस्वी, तथा धार्मिक होता है। उसकी उन्नति स्वयमेव होती रहती है।

कन्या लग्नः नवमभावः बुध
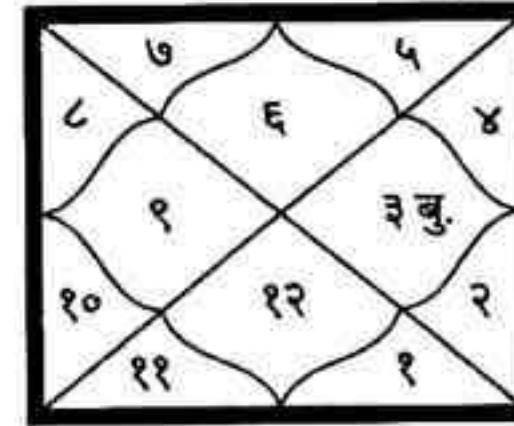
७००

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, राज्य एवं पिता के स्थान में अपनी ही मिथुन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री बुध के प्रभाव से जातक को पिता द्वारा शक्ति एवं सुख की प्राप्ति होती है। वह राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में यथेष्ट सफलता, यश व लाभ अर्जित करता है। ऐसा व्यक्ति सुंदर शरीर वाला, प्रभावशाली, स्वाभिमानी, सुखी तथा उन्नतिशील होता है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है, अतः उसे माता, भूमि एवं मकान आदि का भी पूर्ण सुख प्राप्त होता है। उसका घरेलू जीवन शांति, सुख एवं वैभवपूर्ण बना रहता है।

कन्या लग्नः दशमभावः बुध

७०१

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: एकादशभाव: बुध

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक आमदनी के श्रेष्ठ योग को प्राप्त करता है तथा पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से भी सुख, सफलता एवं सम्मान पाता रहता है। उसे शारीरिक सौंदर्य, प्रभाव, मनोबल एवं सुख की प्राप्ति भी होती है। यहां से बुध अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक संततिवान होता है तथा उसे विद्या एवं बुद्धि के क्षेत्र में भी विशेष उन्नति प्राप्त होती है। ऐसा व्यक्ति विद्वान, बुद्धिमान, वाणी का धनी, सुखी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'बुध' की स्थिति हो, उसे 'बुध' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: द्वादशभाव: बुध

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित बुध के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, परंतु उसे बाहरी स्थानों के संपर्क से सम्मान तथा लाभ की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति देश-विदेश की यात्राएं करता है, परंतु उसे पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र से असंतोष बना रहता है तथा कभी-कभी हानि भी उठानी पड़ती है। यहां से बुध सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में देखता है, अत: वह अपने शारीरिक-बल एवं अन्य युक्तियों द्वारा शत्रु पक्ष पर सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति विवेकी, बुद्धिमान तथा दूरदर्शी भी होता है।

'कन्या' लग्न में 'गुरु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: प्रथमभाव: गुरु

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शारीरिक सौंदर्य एवं स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वह माता, भूमि, मकान आदि के सुख को भी पाता है। यहां से गुरु पांचवीं नीचदृष्टि से अपने शत्रु शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: संतान एवं विद्या-बुद्धि के पक्ष में

परेशानियां बनी रहती हैं। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में देखने के कारण स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में सुख एवं लाभ प्राप्त होता है तथा नवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने से भाग्योन्नति में सामान्य बाधाएं आती हैं तथा धर्म के पक्ष में भी कुछ कमी बनी रहती है, परंतु सामान्यतः ऐसा जातक धनी तथा सज्जन होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वितीयभावः गुरु

७गु. ५ ८ ६ ४ ९ ३ १० १२ २ ११ १

७०५

दूसरे धन-कुटुंब के भवन में अपने सामान्य शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को धन एवं कुटुंब का सुख प्राप्त होता है, परंतु माता एवं स्त्री के सुख में कुछ परेशानियां आती हैं, जबकि व्यवसाय के पक्ष में उन्नति होती रहती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में प्रभाव स्थापित होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु की वृद्धि होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ होता है। नवीं मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से पिता द्वारा सुख मिलता है तथा राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, प्रतिष्ठा, सम्मान, प्रभाव-लाभ एवं धन की प्राप्ति होती रहती है।
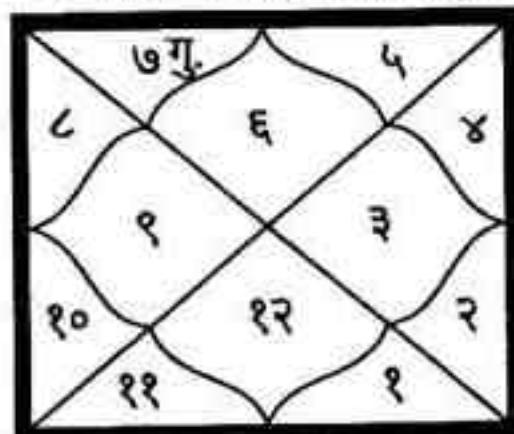
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः तृतीयभावः गुरु

७०६

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। साथ ही माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख भी प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं दृष्टि से स्वराशि में सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कुछ सफलता मिलती है। स्त्री सुंदर होती है तथा घरेलू सुख में वृद्धि बनी रहती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण भाग्य तथा धर्म के क्षेत्र में कुछ रुकावटों के साथ उन्नति होती रहती है। नवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के पक्ष में विशेष सफलता प्राप्त होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
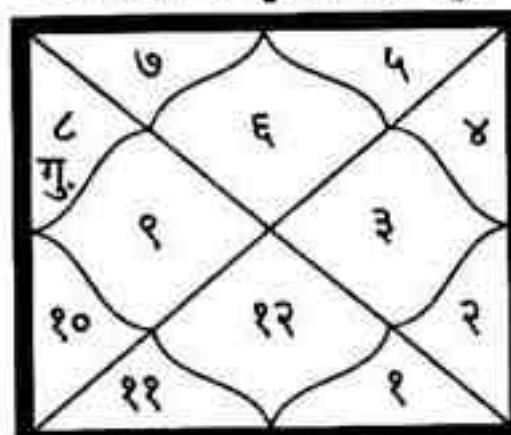
चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपनी ही धनु राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव

से जातक को माता, भूमि एवं मकान का यथेष्ट सुख प्राप्त होता है। उसे अपनी गृहस्थी का पूर्ण सुख मिलता है तथा स्त्री एवं व्यवसाय के क्षेत्र में निरंतर सफलता एवं आनंद की उपलब्धि होती रहती है। यहां से गुरु अपनी पांचवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने के कारण पिता से सुख, राज्य से सम्मान तथा व्यवसाय से लाभ एवं उन्नति की प्राप्ति होती है। नवीं मित्र-दृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध सुखकर एवं लाभदायक बना रहता है।
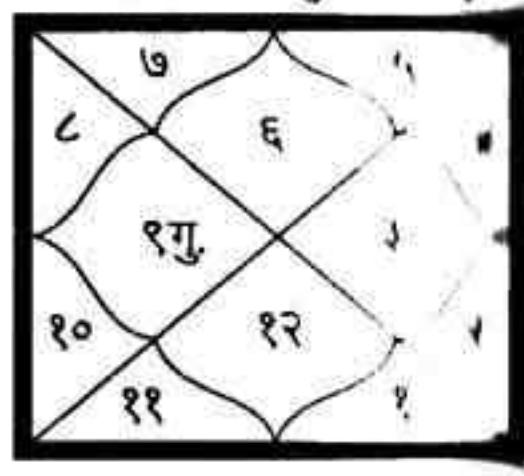
कन्या लग्न: चतुर्थभाव: गु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के स्थान में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित नीच के गुरु के प्रभाव से जातक संतानपक्ष से कष्ट का अनुभव करता है तथा विद्या-बुद्धि के क्षेत्र में त्रुटि प्राप्त करता है। उसे स्त्री तथा माता के पक्ष से भी कमजोरी रहती है। यहां से गुरु पांचवीं शत्रुदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: भाग्य एवं धर्म की सामान्य वृद्धि होती है। सातवीं उच्चदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण जातक अपनी दिमागी शक्ति से आय को बढ़ाने का प्रयत्न करता रहता है तथा लाभ में वृद्धि भी होती है, परंतु मस्तिष्क में परेशानियां बनी रहती हैं। नवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक-शक्ति, मान, प्रभाव तथा कार्य-कुशलता प्राप्त होती है। संक्षेप में जातक ... और सामान्य धनी होता है।
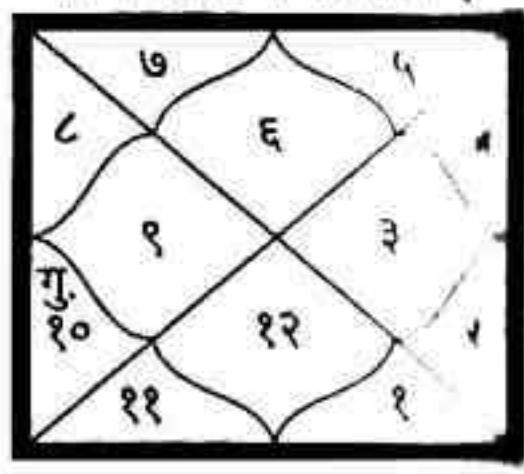
कन्या लग्न: पंचमभाव: गु

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को शत्रु पक्ष में नम्रता द्वारा अपना काम निकालना पड़ता है तथा स्त्री, माता, भूमि, एवं मकानादि के सुख-संबंध में कमजोरी तथा कठिनाइयां बनी रहती हैं। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखता है, अत: पिता, राज्य एवं व्यवसाय के पक्ष से कुछ सफलता, सुख एवं यश मिलता है। सातवीं मित्रदृष्टि से व्ययभाव को देखने के कारण खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। नवीं
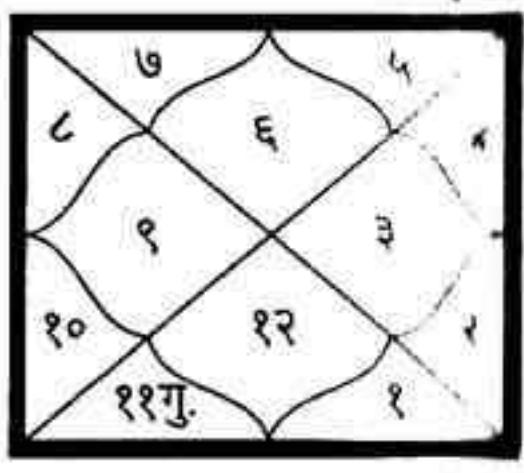
कन्या लग्न: षष्ठभाव: गु
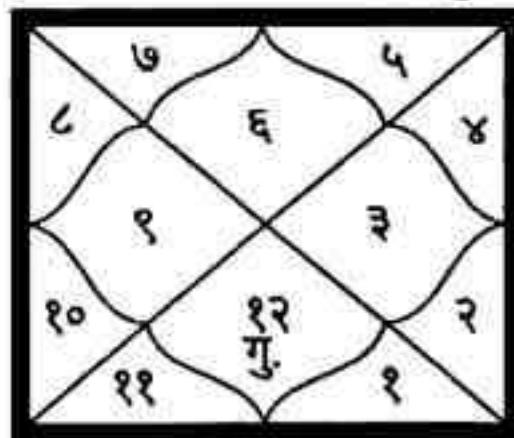
दृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन-संचय के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुंब का सामन्य सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः सप्तमभावः गुरु

७१०

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपनी मीन राशि पर स्थित स्वक्षेत्री गुरु के प्रभाव से जातक को स्त्री एवं व्यवसाय के पक्ष से पर्याप्त सुख एवं लाभ प्राप्त होता है। उसे माता, भूमि, मकान आदि का सुख भी यथेष्ट मिलता है। यहां से गुरु पांचवीं उच्च दृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः आमदनी में बहुत वृद्धि होती है तथा बाहरी स्थान पर रहकर ही सुखपूर्वक लाभ प्राप्त होता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शारीरिक सम्मान एवं सौंदर्य की प्राप्ति होती है तथा नवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। संक्षेप में, ऐसा जातक धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः अष्टमभावः गुरु

७११

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक को आयु एवं पुरातत्त्व का अल्प लाभ होता है, परंतु स्त्री, एवं व्यवसाय के सुख में भी कमी आ जाती है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ होता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने के कारण धन-वृद्धि के लिए विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कुटुंब का सुख भी कम मिलता है। नवीं दृष्टि से चतुर्थभाव को स्वराशि में देखने से माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है, परंतु उसमें कुछ परेशानियां भी आती हैं।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक की भाग्योन्नति कुछ कठिनाइयों के साथ होती है तथा साथ ही स्त्री तथा व्यवसाय के सुख में सामान्य कमी आती है, परंतु भूमि, मकान एवं माता का सुख तथा लाभ प्राप्त होता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शारीरिक सुख एवं सम्मान की वृद्धि होगी तथा भोगेच्छा प्रबल रहेगी। सातवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों आदि के सुख तथा पराक्रम की वृद्धि होगी तथा नवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान तथा विद्या के पक्ष में [illegible] बनी रहेगी।

कन्या लग्नः नवमभाव
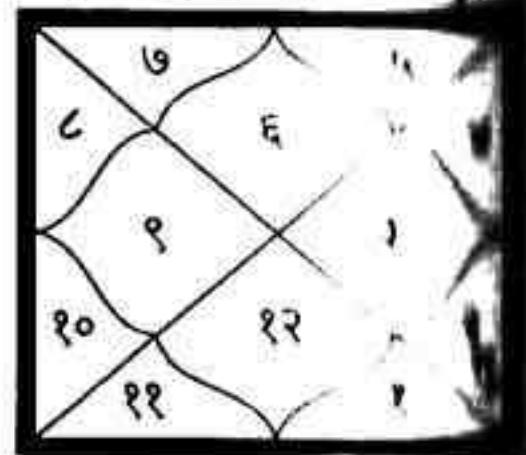
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दसवें केंद्र, माता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से पिता का सुख मिलेगा, राज्य से सम्मान एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा व्यवसाय से लाभ होगा, साथ ही स्त्री सुंदर तथा प्रभावशाली होगी। यहां से गुरु पांचवी शत्रुदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः धन-कुटुंब का सामान्य सुख मिलेगा। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि एवं मकान का अच्छा सुख मिलेगा तथा नवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रुपक्ष में शांति की नीति से विजय प्राप्त करेगा तथा झगड़ों द्वारा लाभ उठाएगा।
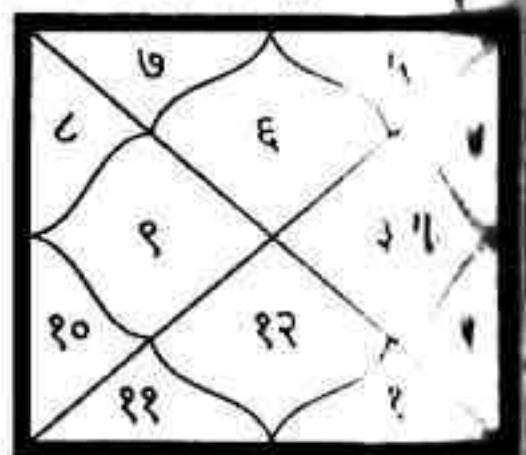
कन्या लग्नः दशमभाव
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित उच्च के गुरु के प्रभाव से जातक को आमदनी की विशेष शक्ति प्राप्त होती है तथा माता, भूमि, मकान आदि का श्रेष्ठ लाभ मिलता है। यहां से गुरु पांचवीं मित्रदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन का सुख मिलेगा तथा पराक्रम की वृद्धि होगी। सातवीं नीचदृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष से कुछ परेशानी तथा विद्या के क्षेत्र में कमी रहेगी। मस्तिष्क भी घरेलू कारणों से चिंतित रहेगा। नवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में सप्तमभाव को देखने के कारण सुंदर एवं योग्य स्त्री मिलेगी, व्यवसाय में उन्नति प्राप्त होगी तथा भोग आदि का भी श्रेष्ठ सुख मिलेगा।
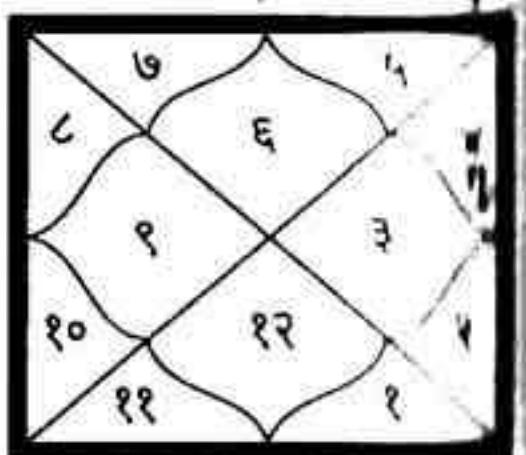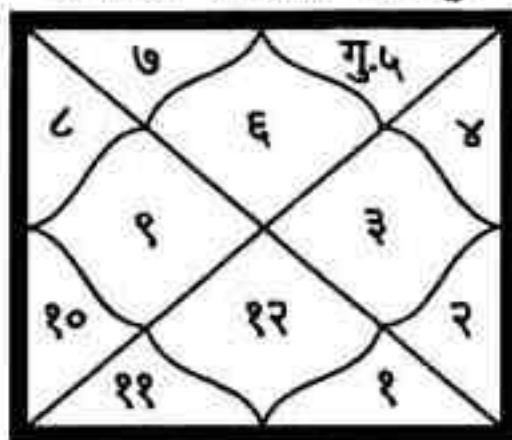
कन्या लग्नः एकादशभाव

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'गुरु' की स्थिति हो, उसे 'गुरु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वादशभावः गुरु

७१५

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र सूर्य की सिंह राशि पर स्थित गुरु के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होगा, परंतु बाहरी स्थानों के संबंध से सुख, सम्मान एवं लाभ की प्राप्ति होगी। स्त्री और घर के सुख में भी न्यूनता आएगी। पांचवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में चतुर्थभाव को देखने से माता, भूमि तथा भवन का सामान्य सुख प्राप्त होगा। सातवीं शत्रुदृष्टि से षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष में नम्रता से काम निकालना होगा तथा नवीं मित्रदृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण आयु एवं पुरातत्त्व का लाभ होगा। सामान्यतः ऐसा जातक सुखी जीवन व्यतीत करता है।

'कन्या' लग्न में 'शुक्र' का फल
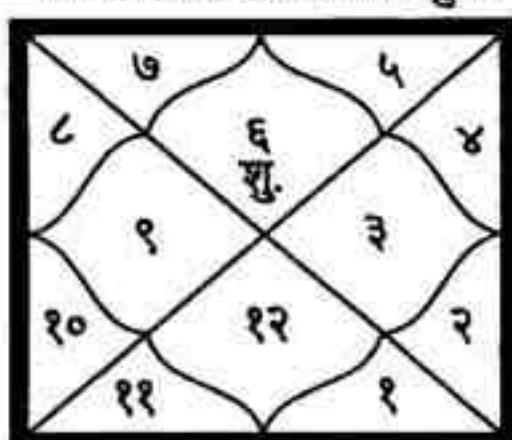
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः प्रथमभावः शुक्र

७१६

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित नीच के शुक्र के प्रभाव से जातक को धन एवं कौटुंबिक सुख के संबंध में कुछ कमी रहती है और वह धनोन्नति के लिए धर्म की चिंता नहीं करता। उसे शारीरिक सुख सामान्य रूप में प्राप्त होता है। यहां से शुक्र सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को देखता है, अतः स्त्री सुंदर एवं भाग्यवान मिलती है तथा व्यवसाय में भी उन्नति होती है। भोगादि का सुख भी खूब मिलता है।
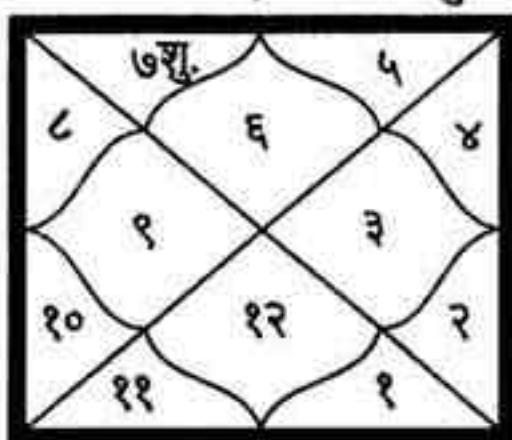
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वितीयभावः शुक्र

७१७

दूसरे धन एवं कुटुंब स्थान में अपनी ही तुला राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक के धन तथा कुटुंब में वृद्धि होती है। वह भाग्यशाली होता है तथा धन के द्वारा धर्म का पालन भी करता है और यश पाता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से मंगल की मेष राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः आयु एवं पुरातत्त्व का भी लाभ होता है। ऐसा जातक धनी तथा चतुर होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

कन्या लग्न: तृतीयभाव: शुक्र

७१८

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को भाई-बहन का सुख प्राप्त होता है तथा पराक्रम में वृद्धि होती है। पराक्रम के द्वारा वह अपने धन एवं कुटुंब की वृद्धि भी करता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपनी ही वृषभ राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य एवं धर्म की बहुत वृद्धि होती है। ऐसा जातक सुखी, धनी धार्मिक तथा भाग्यवान होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
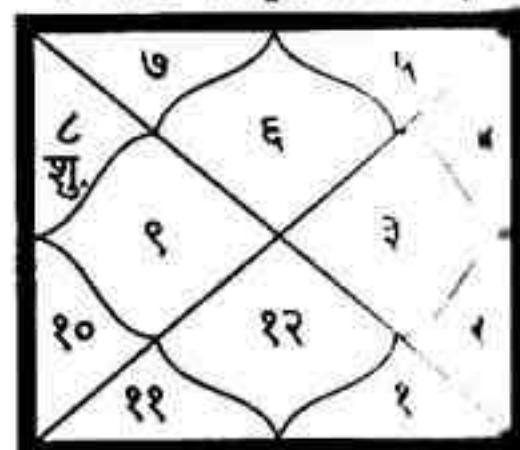
कन्या लग्न: चतुर्थभाव: शुक्र

७१९

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान का श्रेष्ठ लाभ प्राप्त होता है और धन तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। यहां से शुक्र अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को बुध की मिथुन राशि में देखता है, अत: पिता की शक्ति मिलती है, राज्य के क्षेत्र में सम्मान तथा व्यवसाय के पक्ष में लाभ होता है। वह धर्म का पालन भी करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: पंचमभाव: शुक्र

७२०

पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक को संतान द्वारा श्रेष्ठ लाभ होता है तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि के साथ ही धन, भाग्य तथा धर्म की भी उन्नति होती है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से चंद्रमा की मकर लग्न में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक की आमदनी में पर्याप्त वृद्धि होती है। ऐसा व्यक्ति बुद्धि एवं चातुर्य के बल पर निरंतर उन्नति करता चला जाता है।
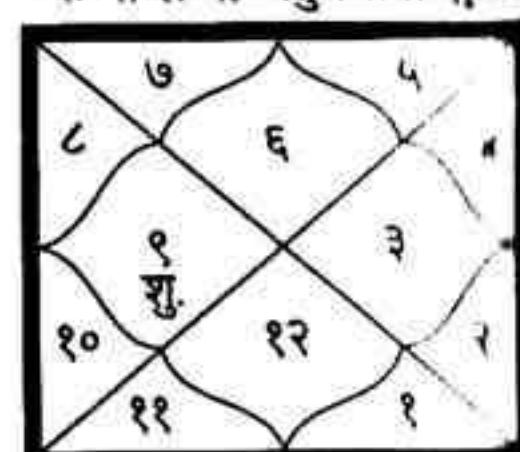
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
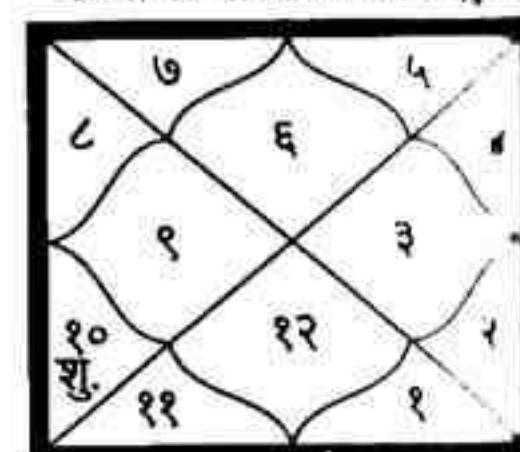
छठे शत्रु तथा स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि में स्थित भाग्येश शुक्र के प्रभाव से जातक के भाग्य में कुछ कमी आती है तथा धन एवं कुटुंब का सुख भी कम रहता है। इसी धर्म में भी अरुचि रहती है, परंतु वह अपने चातुर्य से भाग्य तथा धन की उन्नति करता है और परिश्रम द्वारा शत्रु पक्ष में सफलता पाता है तथा झगड़े, मुकदमे आदि के द्वारा लाभ उठाता है। यहां से शुक्र सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहने से मानसिक चिंताएं बनी रहती हैं, परंतु बाहरी स्थानों से अच्छा सुख एवं लाभ मिलता है।

कन्या लग्न: षष्ठभाव: शुक्र

७२१

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
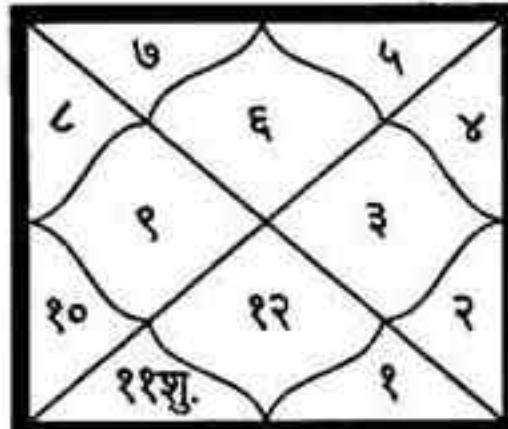
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में गुरु की मीन राशि पर स्थित उच्च के शुक्र के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री प्राप्त होती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता मिलती है। वह धर्म का पालन करने वाला, भाग्यवान, भोगी, सुखी तथा धनी होता है। यहां से शुक्र सातवीं नीच दृष्टि से अपने मित्र बुध की कन्या राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक सौंदर्य में कुछ कमी आती है तथा धन की वृद्धि के लिए वह शारीरिक सुख की चिंता नहीं करता।

कन्या लग्न: सप्तमभाव: शुक्र

७२२

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का भाग्य कमजोर रहता है। धन-संग्रह में परेशानी होती है। धर्म का यथावत् पालन नहीं होता तथा कुटुंब से भी क्लेश मिलता है, जबकि उसे आयु एवं पुरातत्त्व शक्ति का लाभ प्राप्त होता है। यहां से शुक्र सातवीं नीचदृष्टि से अपनी तुला राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक गुप्त चतुराई एवं कठोर परिश्रम से धनोपार्जन करता है।
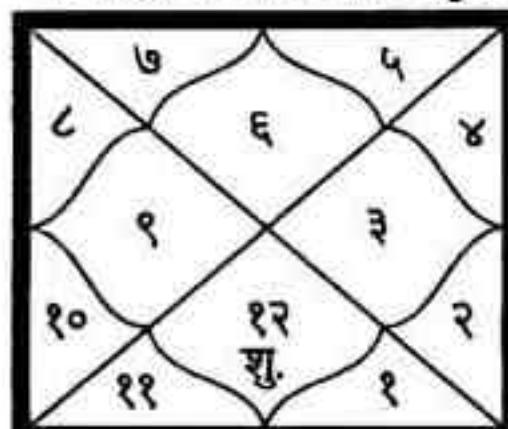
कन्या लग्न: अष्टमभाव: शुक्र

७२३

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
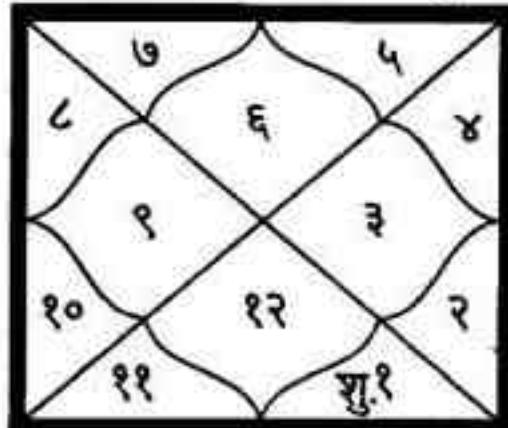
नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के भवन में अपनी ही वृषभ राशि पर स्थित स्वक्षेत्री शुक्र के प्रभाव से जातक बहुत भाग्यशाली होता है तथा धर्म का पालन भी करता है। उसे धन का पर्याप्त सुख मिलता है तथा साथ ही यश व सम्मान में वृद्धि भी होती है। यहां से शुक्र सातवीं सामान्य मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: उसे भाई-बहन की शक्ति प्राप्त होती है तथा पुरुषार्थ में वृद्धि होती है। उसे धन एवं कुटुंब का भी पूर्ण सुख मिलता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए
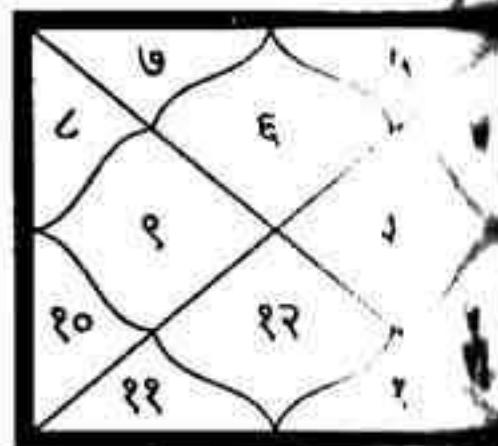
दसवें केंद्र, पिता तथा राज्य के भवन में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक पिता की विशेष शक्ति प्राप्त करता है। उसे राज्य द्वारा उन्नति एवं सम्मान तथा व्यवसाय द्वारा लाभ मिलता है। वह अपने श्रेष्ठ कर्म एवं चातुर्य के बल पर धन एवं कुटुंब की वृद्धि करता है तथा यशस्वी होता है। यहां से शुक्र सातवीं दृष्टि से अपने सामान्य शत्रु गुरु की धनु राशि में चतुर्थभाव को देखता है। उसके प्रभाव से जातक को कुछ असंतोष के साथ माता, भूमि एवं मकान आदि का सुख प्राप्त होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए
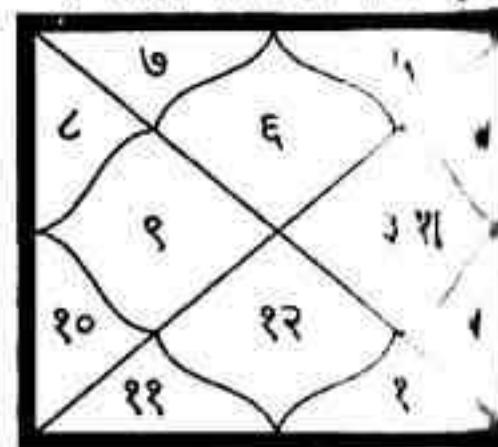
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक की आमदनी अच्छी रहती है। वह बहुत भाग्यवान, धनवान, कुटुंबवान, न्यायी तथा धर्म का पालन करने वाला होता है। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की मकर राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतान के पक्ष से सुख मिलता है तथा विद्या-बुद्धि की उन्नति होती है। ऐसा जातक चतुर, निपुण, योग्य, वाणी में प्रभाव रखने वाला, यशस्वी तथा सुखी होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शुक्र' की स्थिति हो, उसे 'शुक्र' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
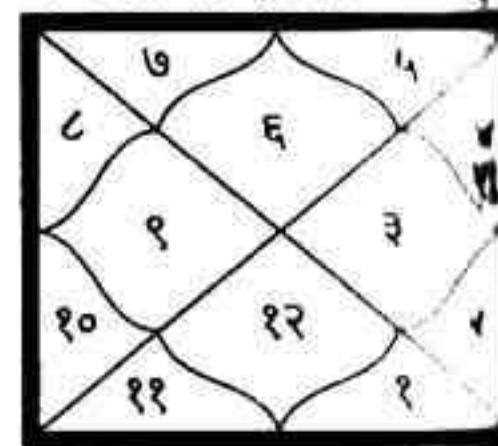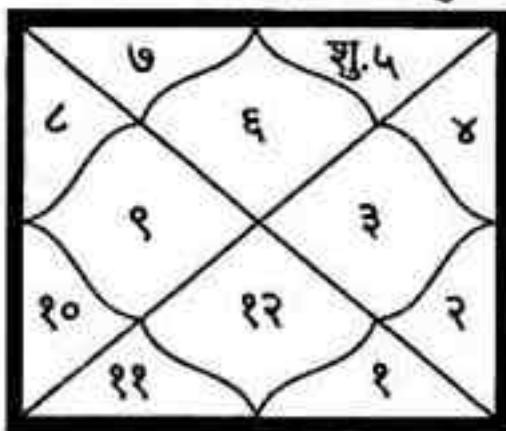
बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शुक्र के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक होता है, धनोन्नति में बाधा पड़ती है तथा धन का संचय नहीं हो पाता। उसे बाहरी स्थानों के संबंध से भी हानि होती है तथा कुटुंब का सुख भी नहीं मिलता। यहां से शुक्र सातवीं मित्रदृष्टि से शनि की कुंभ रशि में षष्ठभाव को देखता है, अतः शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है तथा झगड़े-मुकद्दमे आदि से लाभ प्राप्त होता है।

कन्या लग्नः द्वादशभावः शुक्र

७२७
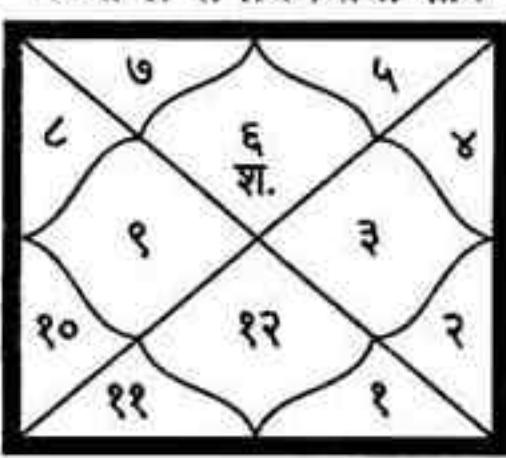
'कन्या' लग्न में 'शनि' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को शरीर में रोग तथा परेशानी-सी रहती है। विद्या-बुद्धि का सुख मिलता है। संतान का सुख होते हुए भी उससे कुछ वैमनस्य रहता है तथा शत्रु पक्ष में विजय मिलती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखता है, अतः भाई-बहन के सुख में कुछ कमी आती है तथा पराक्रम वृद्धि के लिए परिश्रम करना पड़ता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने से स्त्री के पक्ष में कुछ वैमनस्य रहेगा तथा व्यवसाय में मेहनत करनी पड़ेगी। दसवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता की ओर से सामान्य परेशानी रहेगी तथा राज्य एवं व्यापार के क्षेत्र में सफलता मिलेगी।

कन्या लग्नः प्रथमभावः शनि
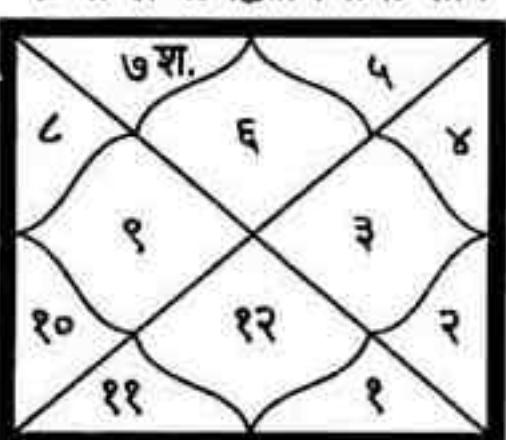
७२८

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित उच्च के शनि के प्रभाव से जातक बुद्धि तथा परिश्रम द्वारा बहुत धन कमाता है तथा कुटुंब स्थान में वृद्धि होने पर भी उससे कुछ परेशानी रहती है। विद्या की वृद्धि तथा शत्रुपक्ष से परेशानी रहती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखता है, अतः माता, भूमि एवं मकान के सुख में कुछ कमी रहेगी। सातवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने से आयु तथा पुरातत्त्व के क्षेत्र में कुछ कमी रहेगी। दसवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने से आमदनी के क्षेत्र में भी कठिनाइयां आएंगी। ऐसी ग्रह स्थिति वाला जातक प्रत्येक क्षेत्र में परेशान रहता है, परंतु शत्रु पक्ष में विजयी होता है।

कन्या लग्नः द्वितीयभावः शनि

७२९

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः तृतीयभाव शनि

तीसरे धन कुटुंब के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक के पराक्रम की वृद्धि होती है, शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है, परंतु भाई-बहनों से परेशानी बनी रहती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से संतानपक्ष में सामान्य कठिनाइयां आती हैं तथा विद्या-बुद्धि की वृद्धि होती है। सातवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने के कारण परिश्रम द्वारा भाग्य की उन्नति होती है एवं दसवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने से खर्च के संबंध में कठिनाइयों का अनुभव होता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी असंतोष बना रहता है। संक्षेप में, ऐसा जातक संघर्षपूर्ण जीवन व्यतीत करता है।
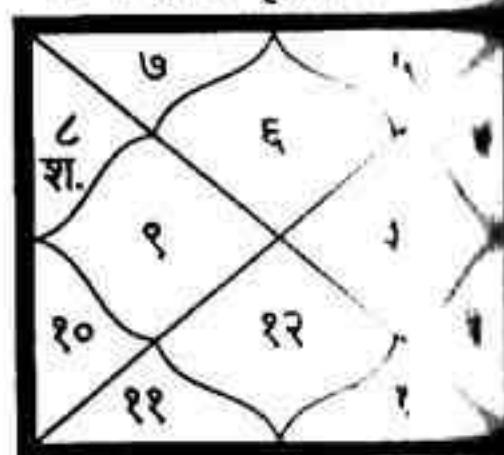
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः चतुर्थभाव शनि

चौथे केंद्र, माता, भूमि एवं सुख के स्थान में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को माता, भूमि एवं मकान के सुखों में कमी रहती है तथा संतानपक्ष से भी परेशानी होती है। तीसरी दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष पर विजय मिलती है, परंतु झगड़े-झंझटों के कारण सुख-दुःख दोनों ही प्राप्त होते रहते हैं। सातवीं मित्रदृष्टि से दशमभाव को देखने से पिता, राज्य एवं व्यवसाय के क्षेत्र में परिश्रम द्वारा सफलता, यश एवं लाभ की प्राप्ति होती है। दसवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में कुछ बीमारी रहती है, परंतु प्रभाव एवं परिश्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः पंचमभाव शनि

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के स्थान में अपनी ही मकर राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को संतान, विद्या तथा बुद्धि का कुछ कठिनाइयों के साथ लाभ होता है, साथ ही संतानपक्ष से कुछ परेशानी भी होती है। वह अपनी गुप्त युक्तियों के बल पर शत्रु पक्ष में भी सफलता प्राप्त करता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से
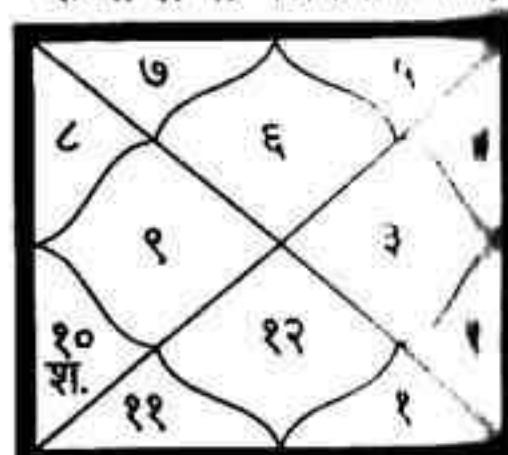
सप्तमभाव को देखता है, अत: स्त्री-पक्ष से भी कुछ परेशानी रहेगी तथा व्यवसाय में कठिनाइयां आती रहेंगी। सातवीं शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखने के कारण बुद्धि के परिश्रम द्वारा लाभ प्राप्त होगा तथा दसवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से धन तथा कुटुंब की वृद्धि होती है। ऐसा जातक संघर्षपूर्ण, परंतु सुखी जीवन व्यतीत करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: षष्ठभाव: शनि

७३३

छठे शत्रु स्थान में अपनी ही कुंभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष से अपने बुद्धि-बल पर सफलता प्राप्त करता है, परंतु उसे विद्या तथा संतान के पक्ष में सामान्य कठिनाइयां आती हैं। यहां से शनि तीसरी नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखता है, अत: आयु के क्षेत्र में अनेक बार संकटों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। सातवीं शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखने के कारण खर्च की परेशानी रहती है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी सुखद नहीं रहता। दसवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से भाई-बहनों से परेशानी रहती है, परंतु पराक्रम की वृद्धि होती है।
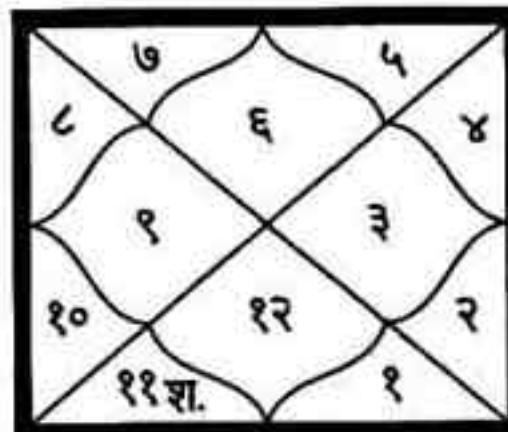
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: सप्तमभाव: शनि

७३४

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक को स्त्री तथा व्यवसाय के पक्ष में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसकी मूत्रेंद्रिय में विकार होता है और वह विद्या के उपयोग से परिवार का पालन करता है। ऐसे व्यक्ति को संतानपक्ष से भी परेशानी रहती है, परंतु शत्रु पक्ष में सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखता है, अत: बुद्धि द्वारा जातक की भाग्योन्नति होती है और वह धर्म का पालन भी करता है। सातवीं मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखने के कारण शरीर में रोग रहते हैं तथा प्रभाव की वृद्धि भी होती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता के सुख में कमी रहती है तथा भूमि एवं मकान के सुख में भी न्यूनता आती है। ऐसा जातक अपने जन्म-स्थान में रहते समय परेशानियों का अनुभव करता रहता है।
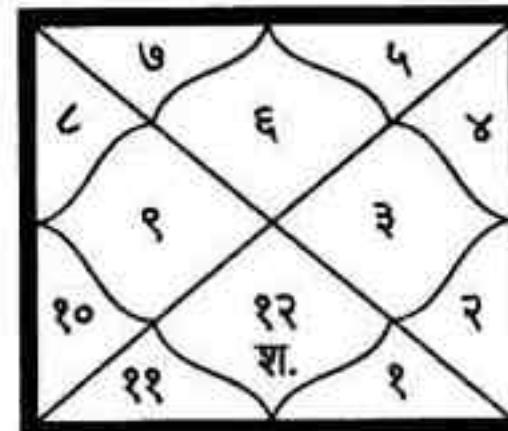
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
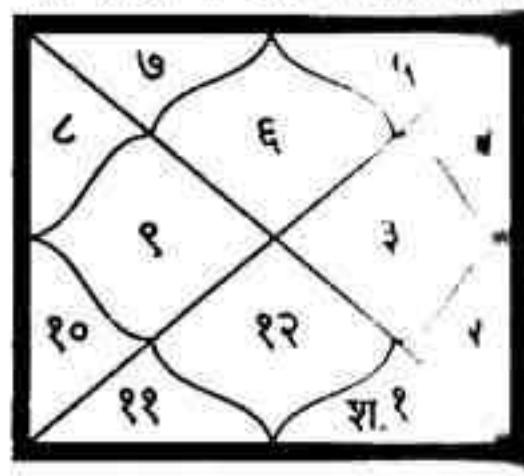
कन्या लग्नः अष्टमभावः शनि

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक को अपनी आयु के संबंध में अनेक बार खतरों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की हानि होती है। उसे संतानपक्ष से कष्ट होता है, शत्रु पक्ष से परेशानी रहती है तथा विद्या के पक्ष में कमी रहती है। यहां से शनि अपनी तीसरी दृष्टि से दशमभाव को देखता है, अतः पिता एवं राज्य के पक्ष में कुछ झंझट बना रहता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बुद्धि-बल से सामान्य सफलता मिलती है। सातवीं उच्चदृष्टि से द्वितीयभाव को देखने से जातक धन-जन का सुख पाने के लिए कठोर परिश्रम करता है। दसवीं दृष्टि से पंचमभाव को देखने से संतान, विद्या तथा बुद्धि के क्षेत्र में कमी रहती है, परंतु चतुराई अधिक होती है। ऐसे व्यक्ति का जीवन घोर अशांतिपूर्ण बना रहता है।
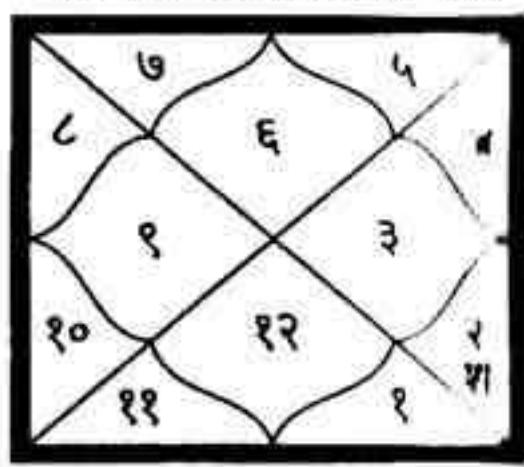
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः नवमभावः शनि

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक अपने बुद्धि के बल पर भाग्योन्नति करता है तथा धर्म का सामान्य रूप से पालन करता है। उसे संतान तथा विद्या के पक्ष में भी सफलता मिलती है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से एकादशभाव को देखता है, अतः जातक लाभ-प्राप्ति के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं शत्रुदृष्टि से तृतीयभाव को देखने से पराक्रम की वृद्धि होती है तथा भाई-बहन से कुछ वैमनस्य रहता है। दसवीं दृष्टि से अपनी ही राशि में षष्ठभाव को देखने के कारण शत्रु पक्ष में विजय प्राप्त होती है तथा अन्य झंझट, मुकद्दमे आदि से लाभ होता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा नीतिज्ञ, चतुर तथा प्रभावशाली बातचीत करने वाला होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः दशमभावः शनि

दसवें केंद्र, पिता तथा राज्य के स्थान में बुध की मिथुन राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक पिता के पक्ष से कुछ परेशानी पाता है तथा राज्य पक्ष से सम्मान एवं व्यवसाय पक्ष से लाभ उठाता है। उसे विद्या तथा संतानपक्ष से सुख मिलता है। यहां से शनि तीसरी शत्रुदृष्टि से द्वादशभाव को देखता है, अतः जातक को खर्च के मामले में असंतोष रहता है तथा बाहरी स्थानों का संबंध भी सुखद

होता। सातवीं शत्रुदृष्टि से चतुर्थभाव को देखने से माता एवं भूमि के सुख में कुछ कमी आती है। दसवीं शत्रुदृष्टि से सप्तमभाव को देखने के कारण स्त्री के सुख में कमी आती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में कठिन परिश्रम करने पर सफलता मिलती है।
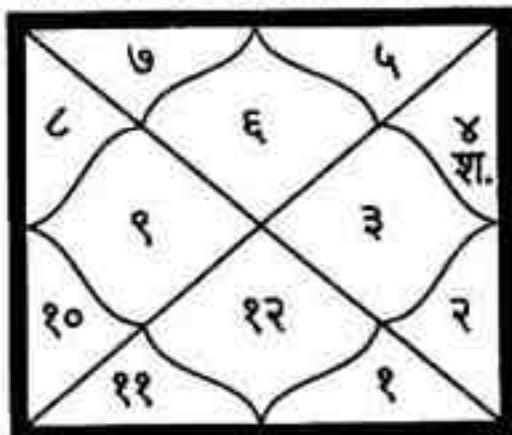
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: एकादशभाव: शनि

७३८

ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक की आमदनी में खूब वृद्धि होती है तथा शत्रु पक्ष से भी लाभ होता है। यहां से शनि तीसरी मित्रदृष्टि से प्रथमभाव को देखता है, अतः शरीर में कुछ रोग बना रहता है तथा परिश्रम की सफलता भी मिलती है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में पंचमभाव को देखने से संतान तथा विद्या की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु कुछ परेशानी भी रहती है। दसवीं नीच-दृष्टि से अष्टमभाव को देखने के कारण जातक को आयु के संबंध में कठिन संघर्ष एवं कष्टों का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्व की भी हानि होती है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'शनि' की स्थिति हो, उसे 'शनि ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: द्वादशभाव: शनि

७३९
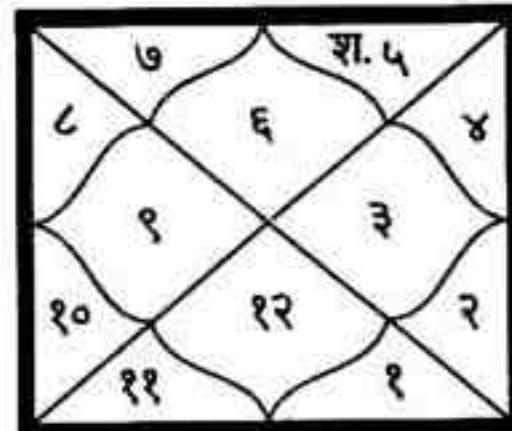
बारहवें व्यय भवन में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित शनि के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से भी परेशानी अनुभव होती है। यहां से शनि तीसरी उच्च तथा मित्रदृष्टि से द्वितीयभाव को देखता है, अतः जातक धन एवं कुटुंब की वृद्धि के लिए विशेष प्रयत्न करता है। सातवीं दृष्टि से स्वराशि में षष्ठभाव को देखने से शत्रु पक्ष पर प्रभाव रहता है तथा [illegible] पर भी कुछ परेशानियों के बाद विजय पाता है। दसवीं मित्रदृष्टि से नवमभाव को देखने से बुद्धिबल द्वारा भाग्य की उन्नति होती है तथा धर्म में भी रुचि रहती है। ऐसा व्यक्ति बहुत शान से खर्च करने वाला होता है।
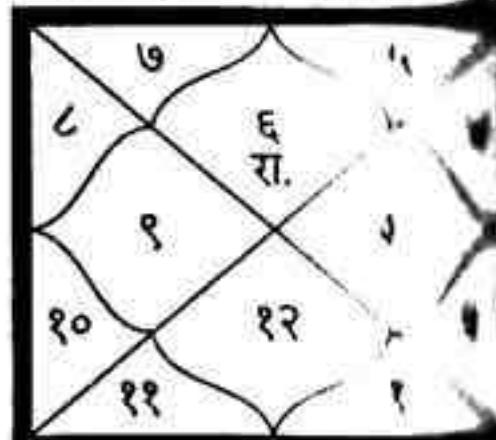
'कन्या' लग्न में 'राहु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु ' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को शारीरिक-शक्ति, स्वाभिमान तथा मनोबल की प्राप्ति होती है, परंतु कभी-कभी शारीरिक कष्टों का सामना भी करना पड़ता है। ऐसा जातक गहरी सूझ-बूझ वाला होता है। उसकी दिमागी शक्ति बढ़ी रहती है। वह अपनी उन्नति के लिए कठोर श्रम करता है। मानसिक रूप से कभी-कभी चिंतित रहते हुए भी बड़े-धैर्य से काम लेता है तथा उन्नति भी करता है।

कन्या लग्न: प्रथमभाव

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
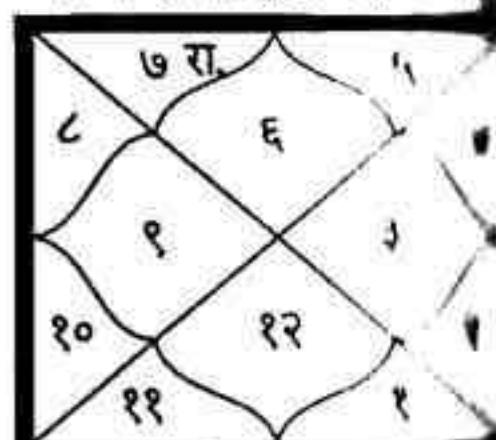
दूसरे धन एवं कुटुंब के भवन में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को धन तथा कुटुंब की ओर से परेशानी बनी रहती है। कभी-कभी उसे भारी आर्थिक घाटा भी उठाना पड़ता है। ऐसा व्यक्ति धन बढ़ाने के लिए गुप्त प्रयत्न तथा कठिन परिश्रम करता है, अत: वह कुछ धन का संचय भी कर लेता है तथा प्रकट रूप में धनवान माना जाता है। उसे कभी-कभी आकस्मिक रूप से भी धन का लाभ होता है।

कन्या लग्न: द्वितीयभाव

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
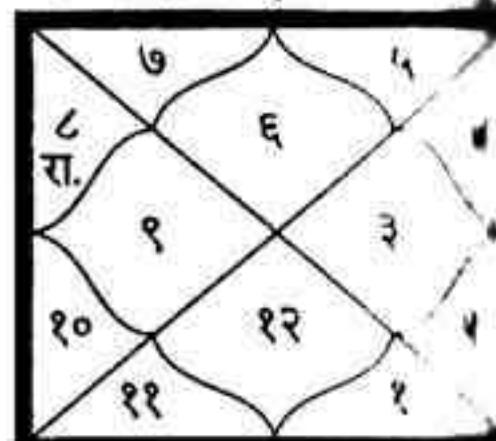
तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के पराक्रम में वृद्धि होती है, परंतु भाई-बहन के पक्ष में परेशानी, असंतोष एवं कमी बनी रहती है। कभी-कभी विशेष संकट उपस्थित होने पर भी वह धैर्य धारण किए रहता है तथा अपनी गुप्त युक्तियों एवं हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त करता है। वह भले-बुरे का विचार किए बिना अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है।

कन्या लग्न: तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता एवं भूमि के भवन में अपने शत्रु गुरु की धनु राशि पर स्थित नीच के राहु के प्रभाव से जातक को माता का सुख खूब प्राप्त होता है, परंतु भूमि, मकान एवं घरेलू सुख-शांति में कमी बनी रहती है। कभी-कभी उसे घरेलू कारणों से घोर संकटों का सामना करना पड़ता है। मातृभूमि से वियोग अर्थात् परदेश में रहने का योग भी उपस्थित होता है। उसे मातृभूमि में कष्ट मिलते हैं, परंतु दूसरी स्थानों में जाकर अपनी गुप्त योजनाओं द्वारा सुख की प्राप्ति होती है।

कन्या लग्न: चतुर्थभाव: राहु

७४३

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
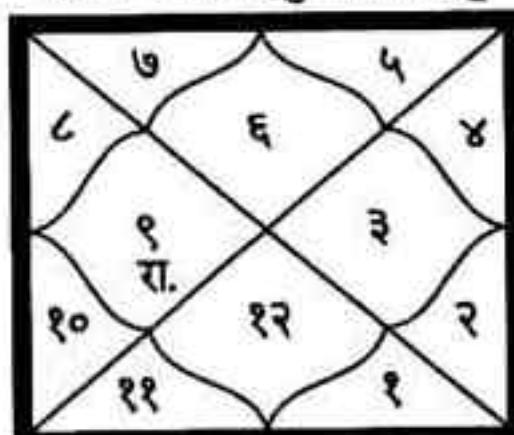
पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा विद्या के क्षेत्र में कठिनाइयां उपस्थित होती हैं। अधिक विद्वान न होने पर भी जातक बातें करने में बड़ा चतुर होता है और सत्यासत्य की चिंता किए बिना अपना स्वार्थ साधन करने में तत्पर रहता है। कभी-कभी उसका मस्तिष्क चिंताओं के कारण परेशान भी हो जाता है, परंतु वह अपनी गुप्त युक्तियों से लाभ उठाता है।

कन्या लग्न: पंचमभाव: राहु

७४४

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: षष्ठभाव: राहु

छठे शत्रु स्थान में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक शत्रु-पक्ष पर प्रभावशाली बना रहता है तथा झगड़े-झंझटों में अपने युक्ति-बल से विजय पाता है। शत्रु एवं रोगादि के कारण जब कभी उसके ऊपर कठिन संकट घिरते हैं, तक वह अपनी हिम्मत तथा धैर्य से काम लेकर अपनी कमजोरी को प्रकट नहीं होने देता तथा उन पर नियंत्रण भी प्राप्त कर लेता है।
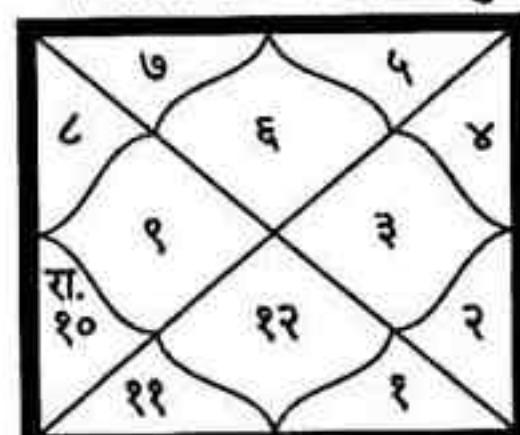
७४५

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
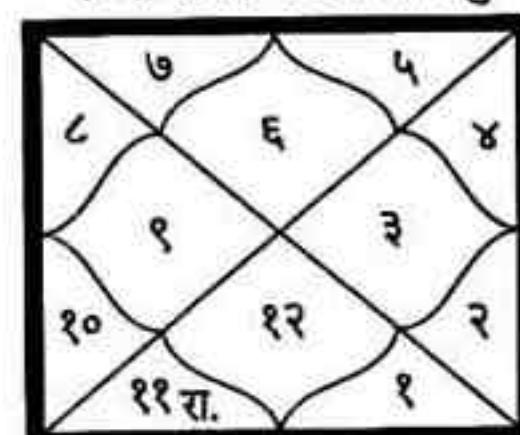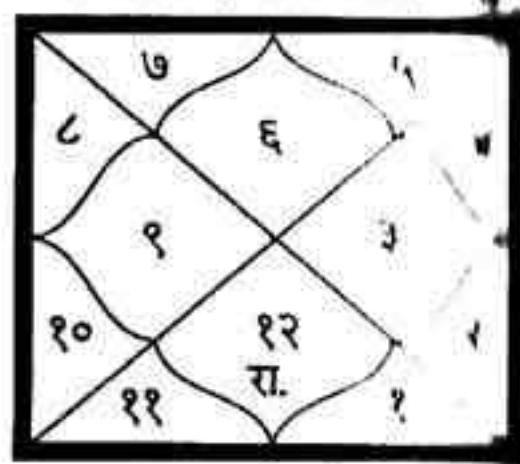
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को स्त्री-पक्ष से कष्ट प्राप्त होता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में भी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। वह अपने गुप्त-धैर्य एवं युक्तियों के बल पर किसी प्रकार अपना काम चलाता है तथा उन्नति पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है। उसकी मूत्रेंद्रिय में विकार होने की संभावना भी रहती है।

कन्या लग्न: सप्तमभाव: राहु
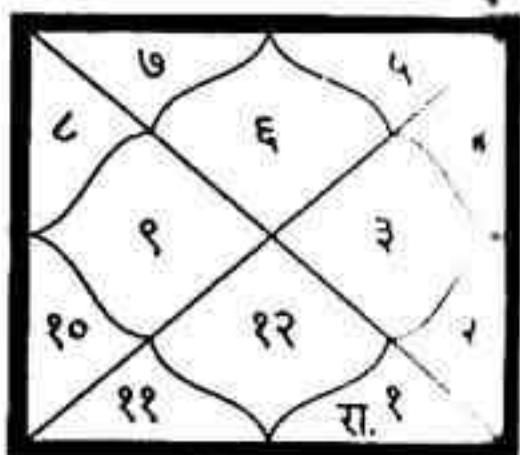
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्न: अष्टमभाव: राहु

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में कई बार खतरों का सामना करना पड़ता है और मृत्युतुल्य कष्ट भोगना पड़ता है। उसे पुरातत्त्व की भी हानि उठानी पड़ती है। ऐसे जातक के पेट में विकार होता है। चिंताएं, परेशानियां उसे घेरे रहती हैं, परंतु गुप्त युक्ति, धैर्य एवं साहस के बल पर वह किसी प्रकार आगे बढ़ता है।
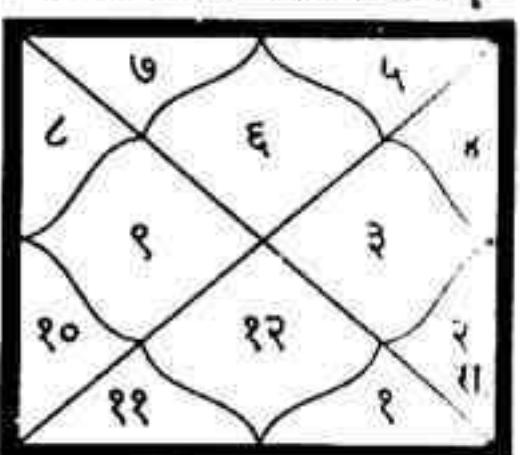
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के भवन में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक धर्म का यथाविधि पालन नहीं कर पाता तथा भाग्य की उन्नति करने के लिए भी कठोर परिश्रम करता है। कभी-कभी उसे भाग्य के क्षेत्र में कठिन संकटों का सामना करना पड़ता है, तो कभी अपने धैर्य, चातुर्य एवं गुप्त युक्तियों के बल पर थोड़ी-बहुत उन्नति भी कर लेता है। ऐसे जातक का जीवन संघर्षमय बना रहता है।

कन्या लग्न: नवमभाव: राहु
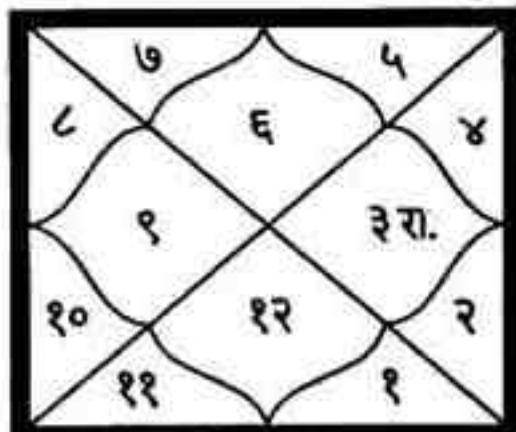
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः दशमभावः राहु

७४९

दसवें केंद्र, पिता तथा राज्य के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित उच्च के राहु के प्रभाव से जातक पिता के साथ संघर्ष करता हुआ उन्नति प्राप्त करता है। राज्य के क्षेत्र में चातुर्य एवं युक्ति बल पर उसे सम्मान एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है तथा गुप्त युक्तियों द्वारा वह व्यवसाय के क्षेत्र में भी पर्याप्त सफलता प्राप्त करता है। कभी-कभी उसे विशेष संकटों का सामना भी करना पड़ता है, परंतु बाद में स्थिति ठीक हो जाती है।
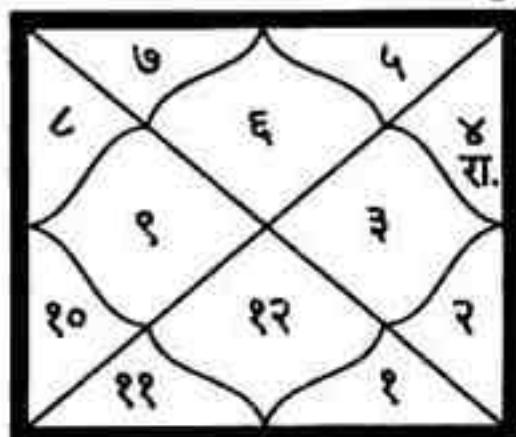
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः एकादशभावः राहु

७५०

ग्यारहवें लाभ-भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक की आमदनी में वृद्धि होती है, परंतु कठिनाइयों का सामना भी बहुत करना पड़ता है। कभी-कभी उसे विशेष लाभ हो जाता है, तो कभी बहुत घाटा भी चला जाता है। अत्यधिक परिश्रम, धैर्य, साहस एवं गुप्त युक्तियों के बल पर वह लाभ उठाने का विशेष प्रयत्न करता है, परंतु कभी-कभी वह धोखा भी खा जाता है।
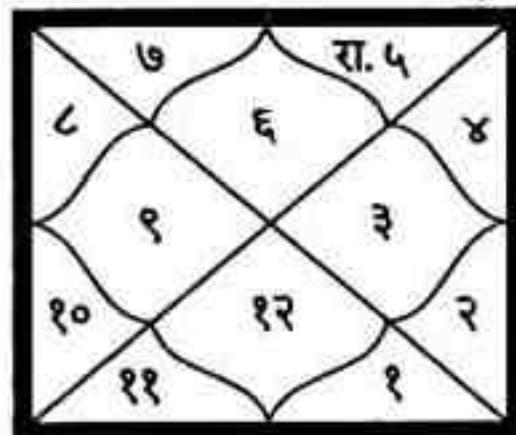
जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'राहु' की स्थिति हो, उसे 'राहु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वादशभावः राहु

७५१

बारहवें व्यय स्थान में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक को खर्च के संबंध में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संपर्क से दुःख का अनुभव होता है। वह अपना खर्च चलाने के लिए विशेष परिश्रम करता है तथा गुप्त युक्तियों, धैर्य एवं हिम्मत से भी काम लेता है। साथ ही कभी-कभी उसे आकस्मिक धन की प्राप्ति भी हो जाती है।

'कन्या' लग्न में 'केतु' का फल

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को शारीरिक कष्ट एवं चिंताओं का सामना करना पड़ता है तथा शरीर में कभी गहरी चोट लगने अथवा होने का योग भी बनता है। उसके शारीरिक सौंदर्य में भी कमी रहती है। ऐसे जातक में गुप्त हिम्मत, गुप्त युक्ति तथा गुप्त धैर्य बहुत पाया जाता है, अत: शरीर से कमजोर होते हुए भी वह अकड़ स्वभाव का होता है। वह कभी तेजी और कभी नरमाई से काम लेता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
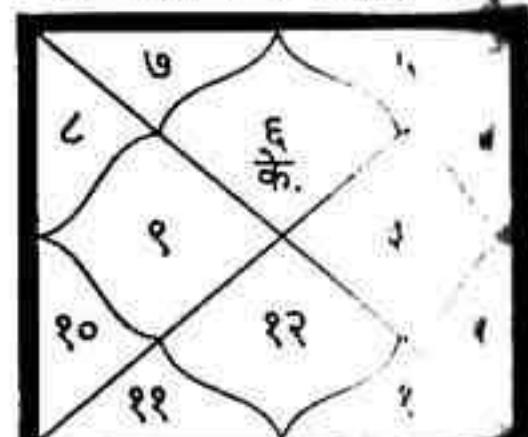
दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र शुक्र की राशि पर स्थित राहु के प्रभाव से जातक के धन में कमी आती है तथा कुटुंब से भी कष्ट प्राप्त होता है। कभी-कभी अचानक ही अधिक धन की हानि हो जाने के कारण चिंता रहती है तथा कभी-कभी अचानक ही धन का लाभ भी हो जाता है। वह धन की वृद्धि के लिए अथक परिश्रम तथा चातुर्य का प्रदर्शन करता है, परंतु हर समय परेशान बना रहता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई एवं पराक्रम के स्थान में अपने शत्रु मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाई-बहन के कारण परेशानी प्राप्त होती है, परंतु पराक्रम की अत्यधिक वृद्धि होती है, अत: वह अपने प्रभाव की वृद्धि के लिए कठिन परिश्रम करता है। ऐसा व्यक्ति किसी संकट के समय हिम्मत नहीं हारता तथा बाहुबल की शक्ति भी रखता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता, भूमि तथा सुख के स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर उच्च के केतु के प्रभाव से जातक को माता तथा भूमि, मकान आदि का सुख प्राप्त होता है। ऐसा व्यक्ति अपना घरेलू जीवन शान, बुजुर्गी तथा ठसक के साथ व्यतीत करता है और इनकी प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम भी करता है। कभी-कभी उसके घरेलू सुख में कुछ संकट आ जाता है, तो कभी वृद्धि भी हो जाती है।

कन्या लग्नः चतुर्थभावः केतु

७५५

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
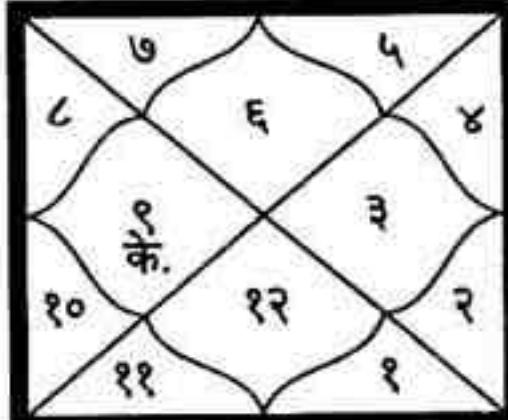
पांचवें त्रिकोण, विद्या एवं संतान के भवन में अपने मित्र शनि की मकर राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को संतानपक्ष से चिंता बनी रहती है तथा विद्या प्राप्ति के क्षेत्र में भी विशेष परिश्रम करना पड़ता है तथा कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। ऐसा व्यक्ति बातचीत में बहुत उग्र होता है। वह अपनी विद्या-बुद्धि की कमी को स्वयं अनुभव भी करता है, परंतु प्रकट में स्वयं को बड़ा समझदार तथा योग्य प्रदर्शित करता है।

कन्या लग्नः पंचमभावः केतु

७५६

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

छठे शत्रु तथा रोग भवन में अपने मित्र शनि की कुंभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक शत्रु पक्ष पर अपना बहुत प्रभाव रखता है तथा झगड़े-झंझट के मामलों में गुप्त चाल, धैर्य, युक्ति, अकड़ तथा निर्भयता से काम लेकर लाभ उठाता एवं सफलता प्राप्त करता है। उसे ननिहाल पक्ष से परेशानी उठानी पड़ती है। ऐसा व्यक्ति कभी-कभी बड़ी बहादुरी का प्रदर्शन भी कर बैठता है।
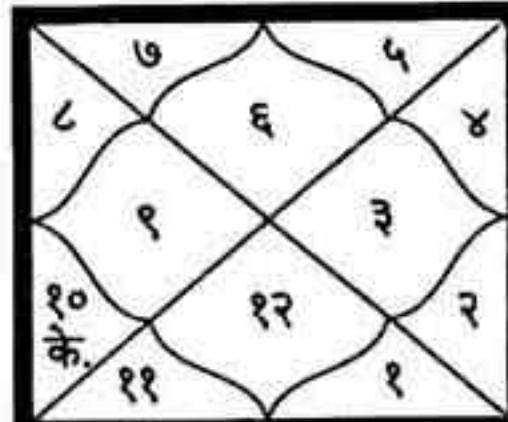
कन्या लग्नः षष्ठभावः केतु

७५७

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
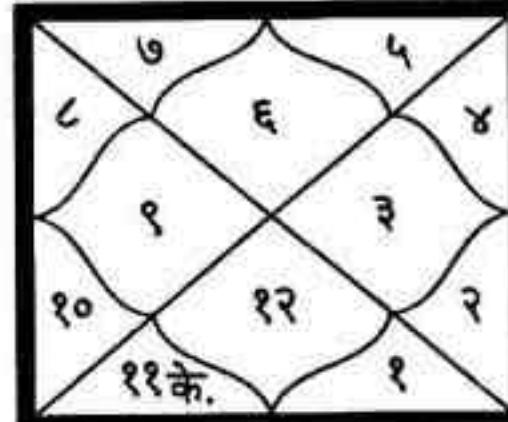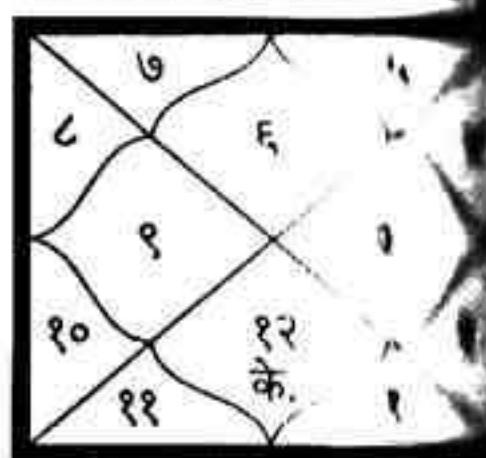
सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के स्थान में अपने शत्रु गुरु की मीन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को स्त्री पक्ष से कष्ट मिलता है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है, परंतु वह गुप्त युक्तियों, धैर्य, साहस तथा बुद्धि के बल पर उन कठिनाइयों के निवारण का प्रयत्न करता है तथा सफलता भी पा लेता है। ऐसे व्यक्ति की मूत्रेंद्रिय में विकार होता है और गृहस्थ जीवन बड़ी कठिनाइयों से सफल हो पाता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के भवन में अपने शत्रु मंगल की मेष राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को अपने जीवन में अनेक बार प्राणों के संकट का सामना करना पड़ता है तथा पुरातत्त्व की भी हानि होती है। पेट में कोई विकार रहता है। ऐसा व्यक्ति बड़ा परिश्रमी होता है, परंतु कभी-कभी अत्यधिक चिंतित भी हो जाता है। वह क्रोधी, धैर्यवान, हिम्मती, तेजी से काम करने वाला तथा संघर्षशील होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य एवं धर्म के स्थान में अपने मित्र शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को भाग्य के क्षेत्र में बड़े संकटों का सामना करना पड़ता है तथा धर्म के क्षेत्र में भी कुछ कमी बनी रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने भाग्य की वृद्धि के लिए कठोर परिश्रम करता है। वह गुप्त युक्तियों, चातुर्य, बुद्धि तथा साहस के बल पर संकटों से अपनी रक्षा करता रहता है तथा कभी-कभी चिंता के विशेष योग प्राप्त करता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए

दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को पिता के क्षेत्र में हानि एवं कष्ट का सामना करना पड़ता है। राज्य के क्षेत्र में प्रभाव तथा सम्मान अधिक नहीं रहता तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। उसे कभी कभी मान-हानि का शिकार भी बनना पड़ता है तथा कभी किसी संकट झगड़े अथवा परेशानी में फंस जाना होता है।

कन्या लग्नः दशमभावः केतु

७ ५ ८ ६ ४ ९ ३ के. १० १२ २ ११ १

७६१

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः एकादशभावः केतु

७६२
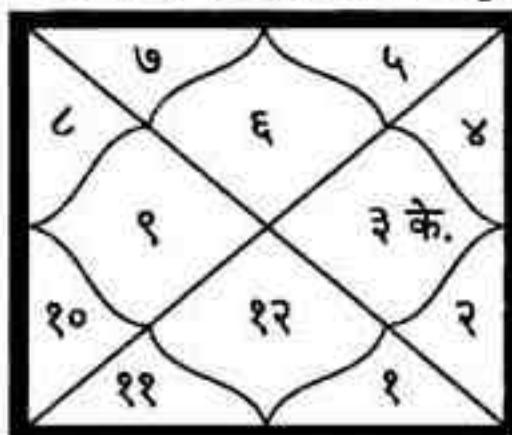
ग्यारहवें लाभ भवन में अपने शत्रु चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक की आय के साधनों में उन्नति तो होती है परंतु मानसिक परेशानियों अथवा किसी अवसर पर किसी विशेष प्रकार के संकट एवं हानि का सामना भी करना पड़ता है। आमदनी की वृद्धि के लिए चिंतित जातक अपने मन में दु:खी भी रहता है और कभी-कभी उसे आकस्मिक लाभ भी हो जाता है। वह परिश्रमी तथा धैर्यवान होता है।

जिस जातक का जन्म 'कन्या' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'केतु' की स्थिति हो, उसे 'केतु' का फलादेश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

कन्या लग्नः द्वादशभावः केतु

७६३

बारहवें व्ययभाव में अपने शत्रु सूर्य की सिंह राशि पर स्थित केतु के प्रभाव से जातक को खर्च के कारण चिंताओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ता है तथा बाहरी स्थानों के संबंधों से भी कष्ट एवं असंतोष की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति खर्च के क्षेत्र में कभी-कभी संकटों का शिकार भी बन जाता है, परंतु अपनी गुप्त हिम्मत एवं धैर्य के बल पर काम चलाता रहता है।

'कन्या' लग्न का फलादेश समाप्त

७६४

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५१ से ८६२ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६२ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्न

७६५

तुला लग्न वाली कुंडलियों के विभिन्न भावों में स्थित विभिन्न ग्रहों का अलग-अलग फलादेश

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्न: प्रथमभाव

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता तथा सौंदर्य में कमी आती है। उसको परतंत्रता के मार्ग से हानि होती है तथा पराक्रम की भी कमी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अतः स्त्री के पक्ष में लाभ होता है। स्त्री सुंदर मिलती है, भोगादि की शक्ति बढ़ती है तथा व्यावसायिक उन्नति भी होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: द्वितीयभाव

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। वह धन का संचय भी करता है तथा प्रभावशाली बना रहता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अतः जातक की आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी असंतोष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यतः धनी होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई और पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह अपने बाहुबल पर भरोसा रखने वाला होता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अतः जातक के भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है। अच्छी आमदनी होने के कारण जातक भाग्यवान समझा जाता है।

तुला लग्न: तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

'तुला' लग्न का संक्षिप्त फलादेश

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातक गुणी, व्यवसाय-निपुण, धनी, यशस्वी, कुलभूषण, प्रकृतिवाला, सत्यवादी, पर-स्त्रियों से प्रेम रखने वाला, राज्य द्वारा सम्मानित, देवपूजन में परोपकारी, सतोगुणी, तीर्थ-प्रेमी, प्रियवादी, ज्योतिषी, भ्रमणशील, निर्लोभ तथा वीर्य- से युक्त होता है। वह गौर वर्ण, शिथिल गात्र तथा मोटी नाक वाला होता है। उसे प्रारंभिक में दुःख उठाना पड़ता है, मध्यमावस्था में वह सुखी रहता है तथा अंतिम अवस्था सामान्य से व्यतीत होती है। ३१ अथवा ३२ वर्ष की आयु में उसका भाग्योदय होता है।

'तुला' लग्न

७६६

यह बात पहले बताई जा चुकी है कि प्रत्येक व्यक्ति के जीवन पर नवग्रहों का प्रभाव दो प्रकार से पड़ता है—

(१) ग्रहों की जन्मकालीन स्थिति के अनुसार।

(२) ग्रहों की दैनिक गोचर गति के अनुसार।

जातक की जन्मकालीन ग्रह-स्थिति जन्म-कुंडली में दी गई होती है। उसमें जो ग्रह जिस में और जिस राशि पर बैठा होता है, वह जातक के जीवन पर अपना निश्चित प्रभाव निरंतर स्थायी रूप से डालता रहता है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रहों की जो स्थिति होती है, उसकी जानकारी पंचांग की जा सकती है। ग्रहों की दैनिक गोचर-गति के संबंध में या तो किसी ज्योतिषी से पूछ चाहिए अथवा स्वयं ही उसे मालूम करने का तरीका सीख लेना चाहिए। इस संबंध में पुस्तक पहले प्रकरण में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है।

दैनिक गोचर गति के अनुसार विभिन्न ग्रह जातक के जीवन पर अस्थायी रूप से अपना डालते हैं।

उदाहरण के लिए यदि किसी जातक की जन्म-कुंडली में सूर्य 'तुला' राशि पर 'प्रथमभाव' बैठा है, तो उसका स्थायी प्रभाव जातक के जीवन पर आगे दी गई उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार पड़ता रहेगा, परंतु यदि दैनिक ग्रह-गोचर में कुंडली देखते समय सूर्य 'वृश्चिक' राशि के 'द्वितीयभाव' में बैठा होगा, तो उस स्थिति में वह उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार उतनी अवधि तक जातक के जीवन पर अपना अस्थायी प्रभाव अवश्य डालेगा,

जब तक कि वह 'वृश्चिक' राशि से हटकर 'धनु' राशि में नहीं चला जाता। ...
में पहुंच कर वह 'धनु' राशि के अनुरूप अपना प्रभाव डालना आरंभ कर देगा। ...
जातक की जन्म-कुंडली मे 'सूर्य' 'तुला' राशि के प्रथमभाव में बैठा हो, ...
कुंडली संख्या ७६७ में वर्णित फलादेश देखने के पश्चात् यदि उन दिनों ग्रह ...
'वृश्चिक' राशि के द्वितीयभाव में बैठा हो, तो उदाहरण-कुंडली संख्या ७६८ ...
भी देखना चाहिए तथा इन दोनों फलादेशों के समन्वय स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता ...
को अपने वर्तमान समय पर प्रभावकारी समझना चाहिए। इसी प्रकार प्रत्येक ग्रह ...
में जान लेना चाहिए।

'तुला' लग्न में जन्म लेने वाले जातकों की जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों ...
विभिन्न ग्रहों के फलादेश का वर्णन उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ से ७७४ तक ...
है। पंचांग की दैनिक ग्रह-गति के अनुसार 'तुला' लग्न मे जन्म लेने वाले जातकों ...
किन उदाहरण-कुंडलियों द्वारा विभिन्न ग्रहों के तात्कालिक प्रभाव को देखना चाहिए ...
विस्तृत वर्णन अगले पृष्ठों में किया गया है, अत: उनके अनुसार ग्रहों की तात्कालिक ...
के सामयिक प्रभाव की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए। तदुपरांत दोनों फलादेश ...
स्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो, उसी को सही फलादेश समझना चाहिए।

इस विधि से प्रत्येक, व्यक्ति प्रत्येक जन्म-कुंडली का ठीक-ठाक फलादेश ...
ज्ञात कर सकता है।

टिप्पणी—(१) पहले बताया जा चुका है कि जिस समय जो ग्रह २७ अंश से ...
३ अंश के भीतर होता है, वह प्रभावकारी नहीं रहता। इसी प्रकार जो ग्रह सूर्य से ...
वह भी जातक के ऊपर अपना प्रभाव या तो बहुत कम डालता है या पूर्णत: प्रभावहीन ...

(२) स्थायी जन्म-कुंडली स्थित विभिन्न ग्रहों के अंश किसी ज्योतिषी द्वारा ...
में लिखवा लेने चाहिए, ताकि उनके अंशों के विषय में बार-बार जानकारी प्राप्त करने ...
से बचा जा सके। तात्कालिक गोचर के ग्रहों के अंशों की जानकारी पंचांग द्वारा ...
ज्योतिषी से पूछकर प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(३) स्थायी जन्म-कुंडली अथवा तात्कालिक ग्रह-गति कुंडली में यदि किसी ...
से अधिक ग्रह एक साथ बैठे होते हैं अथवा जिन-जिन स्थानों पर उनकी दृष्टियां ...
जातक का जीवन उनके द्वारा भी प्रभावित होता है। इस पुस्तक के तीसरे प्रकरण में '...
युति का प्रभाव' शीर्षक के अंतर्गत विभिन्न ग्रहों की युति के फलादेश का वर्णन किया ...
अत: इस विषय की जानकारी वहां से प्राप्त कर लेनी चाहिए।

(४) विंशोत्तरी दशा के सिद्धांतानुसार प्रत्येक जातक की पूर्णायु १२० वर्ष की ...
है। इस आयु-अवधि में जातक नवग्रहों की दशाओं का भोग कर लेता है। विभिन्न ग्रहों ...
काल भिन्न-भिन्न होता है। परंतु अधिकांश व्यक्ति इतनी लंबी आयु तक जीवित नहीं ...
अत: वे अपने जीवन-काल में कुछ ही ग्रहों की दशाओं का भोग कर पाते हैं। जातक ...
के जिस काल में जिस ग्रह की दशा, जिसे 'महादशा' कहा जाता है—चल रही होती है, ...
कालीन ग्रह-स्थिति के अनुसार उसके जीवन-काल की उतनी अवधि उस ग्रह-विशेष ...

से विशेष रूप से प्रभावित रहती है। जातक का जन्म किस ग्रह की महादशा में हुआ है और उसके जीवन में किस अवधि तक किस ग्रह की महादशा चलेगी और वह महादशा जातक के ऊपर अपना क्या विशेष प्रभाव डालेगी—इन सब बातों का उल्लेख भी तीसरे प्रकरण में किया गया है।

इस प्रकार (१) जन्म-कुंडली, (२) तात्कालिक ग्रह-गोचर-कुंडली एवं (३) ग्रहों की महादशा—इन तीनों विधियों से फलादेश प्राप्त करने की सरल विधि का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है, अत: इन तीनों के समन्वय स्वरूप फलादेश का ठीक-ठाक निर्णय करके अपने भूत, वर्तमान तथा भविष्यकालीन जीवन के विषय में सम्यक् जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'सूर्य' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का **स्थायी** फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ से ७७८ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'सूर्य' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'सूर्य' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'सूर्य' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७६९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'सूर्य' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'सूर्य' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'सूर्य' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'सूर्य' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'सूर्य' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'सूर्य' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'सूर्य' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७७६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'सूर्य' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७७७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'सूर्य' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७७८ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'चंद्रमा' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७७९ से ७९० तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'चंद्रमा' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'तुला' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७७९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'धनु' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मकर' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कुंभ' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मीन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मेष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'वृष' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'मिथुन' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कर्क' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ७८८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'सिंह' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७८९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस दिन में 'चंद्रमा' 'कन्या' राशि पर हो, उस दिन का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९० के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'मंगल' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९१ से ८०२ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'मंगल' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'मंगल' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'मंगल' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'मंगल' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'मंगल' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'मंगल' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'मंगल' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'मंगल' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'मंगल' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'मंगल' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ७९९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'मंगल' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८०० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'मंगल' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८०१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'मंगल' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८०२ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'बुध' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८०३ से ८१४ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार चाहिए—

(१) जिस महीने में 'बुध' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०३ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'बुध' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'बुध' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०५ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'बुध' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'बुध' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०७ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'बुध' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०८ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'बुध' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८०९ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'बुध' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८१० के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'बुध' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८११ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'बुध' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८१२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'बुध' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८१३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'बुध' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८१४ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'गुरु' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१५ से ८२६ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' का आगामी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'गुरु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१५ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१६ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'गुरु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१७ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१८ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८१९ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२० के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२१ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'गुरु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२२ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'गुरु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२४ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'गुरु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'गुरु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२६ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शुक्र' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शुक्र' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२७ से ८३८ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'बुध' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस महीने में 'शुक्र' 'तुला' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२७ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२८ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस महीने में 'शुक्र' 'मकर' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८२९ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस महीने में 'शुक्र' 'धनु' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३० के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस महीने में 'शुक्र' 'कुंभ' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३१ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस महीने में 'शुक्र' 'मीन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३२ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस महीने में 'शुक्र' 'मेष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३३ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस महीने में 'शुक्र' 'वृष' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३४ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस महीने में 'शुक्र' 'मिथुन' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८३५ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस महीने में 'शुक्र' 'कर्क' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८३६ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस महीने में 'शुक्र' 'सिंह' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८३७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस महीने में 'शुक्र' 'कन्या' राशि पर हो, उस महीने का फलादेश उदाहरण कुंडली संख्या ८३८ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'शनि' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'शनि' सम्बन्धी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३९ से ८५० तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'गुरु' सम्बन्धी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'शनि' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८३९ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४० के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'शनि' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४१ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'शनि' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४२ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'शनि' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४३ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'शनि' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४४ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'शनि' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४५ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'शनि' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४६ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'शनि' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४७ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'शनि' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४८ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'शनि' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८४९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'शनि' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५० के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'राहु' का फलादेश

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का स्थायी फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५१ से ८६२ तक में देखना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'राहु' का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना चाहिए—

(१) जिस वर्ष में 'राहु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५१ के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५२ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'राहु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५३ के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'राहु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५४ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'राहु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५५ के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'राहु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५६ के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'राहु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५७ के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'राहु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५८ के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'राहु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८५९ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'राहु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६० के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'राहु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'राहु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६२ के अनुसार समझना चाहिए।

तुला (७) जन्म-लग्न वालों के लिए

जन्म-कुंडली तथा ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित

'केतु' का फलादेश

(७) जन्म-लग्न वालों को अपनी जन्म-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित 'केतु' फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या ८६३ से ८७४ तक में देखना चाहिए।

(७) जन्म-लग्न वालों को दैनिक ग्रह-गोचर-कुंडली के विभिन्न भावों में स्थित का अस्थायी फलादेश विभिन्न उदाहरण-कुंडलियों में नीचे लिखे अनुसार देखना —

(१) जिस वर्ष में 'केतु' 'तुला' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(२) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृश्चिक' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८६४ के अनुसार समझना चाहिए।

(३) जिस वर्ष में 'केतु' 'धनु' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(४) जिस वर्ष में 'केतु' 'मकर' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८६६ के अनुसार समझना चाहिए।

(५) जिस वर्ष में 'केतु' 'कुंभ' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(६) जिस वर्ष में 'केतु' 'मीन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(७) जिस वर्ष में 'केतु' 'मेष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(८) जिस वर्ष में 'केतु' 'वृष' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली संख्या के अनुसार समझना चाहिए।

(९) जिस वर्ष में 'केतु' 'मिथुन' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८७१ के अनुसार समझना चाहिए।

(१०) जिस वर्ष में 'केतु' 'कर्क' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८७२ के अनुसार समझना चाहिए।

(११) जिस वर्ष में 'केतु' 'सिंह' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८७३ के अनुसार समझना चाहिए।

(१२) जिस वर्ष में 'केतु' 'कन्या' राशि पर हो, उस वर्ष का फलादेश उदाहरण-कुंडली ८७४ के अनुसार समझना चाहिए।

'तुला' लग्न में 'सूर्य' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए-

पहले केंद्र एवं शरीर स्थान में अपने शत्रु शुक्र की तुला राशि पर स्थित नीच के शनि के प्रभाव से जातक के शरीर में दुर्बलता तथा सौंदर्य में कमी आती है। उसको परतंत्रता के मार्ग से हानि होती है तथा पराक्रम की भी कमी बनी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं उच्चदृष्टि से सप्तमभाव को अपने मित्र मंगल की मेष राशि में देखता है, अत: स्त्री के पक्ष में लाभ होता है। स्त्री सुंदर मिलती है, भोगादि की शक्ति बढ़ती हैं तथा व्यावसायिक उन्नति भी होती है।

तुला लग्नः प्रथमभाव

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र मंगल की वृश्चिक राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को धन का विशेष लाभ होता है तथा कुटुंब का सुख भी मिलता है। वह धन का संचय भी करता है तथा प्रभावशाली बना रहता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक को आयु के पक्ष में कुछ कमी रहती है तथा पुरातत्त्व के लाभ में भी असंतोष बना रहता है। ऐसा व्यक्ति सामान्यत: धनी होता है।

तुला लग्नः द्वितीयभाव

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तीसरे भाई और पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की विशेष वृद्धि होती है। वह अपने बाहुबल पर भरोसा रखने वाला होता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य तथा धर्म में वृद्धि होती है। अच्छी आमदनी होने के कारण जातक भाग्यवान समझा जाता है।

तुला लग्नः तृतीयभाव

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'चतुर्थभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चौथे केंद्र, माता तथा भूमि के भवन में अपने शत्रु शनि की मकर राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को माता, भूमि तथा मकान का अपूर्ण सुख प्राप्त होता है तथा ...णी के पक्ष में भी कुछ कठिनाइयां आती रहती हैं। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से चंद्रमा की कर्क राशि में दशमभाव को देखता है, अत: जातक को अपने पिता, राज्य एवं व्यवसाय द्वारा सुख, सफलता एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

तुला लग्नः चतुर्थभावः सूर्य
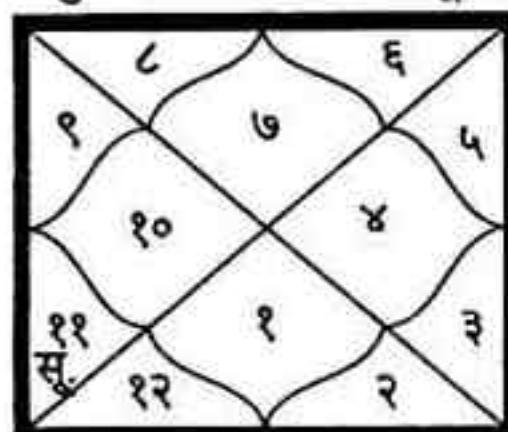
७७०

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'पंचमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पांचवें त्रिकोण, विद्या तथा संतान के स्थान में अपने शत्रु शनि की कुंभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को संतान के पक्ष से असंतोष के साथ सामान्य लाभ होता है तथा विद्याध्ययन में भी बड़ी कठिनाइयों के बाद सफलता मिलती है। यहां से सूर्य सातवीं दृष्टि से अपनी ही सिंह राशि में एकादशभाव को देखता है, अत: जातक को कठिन परिश्रम एंव बुद्धि-योग से आमदनी की अच्छी शक्ति मिलती है, परंतु मस्तिष्क में कुछ परेशानियां भी रहती हैं।

तुला लग्नः पंचमभावः सूर्य
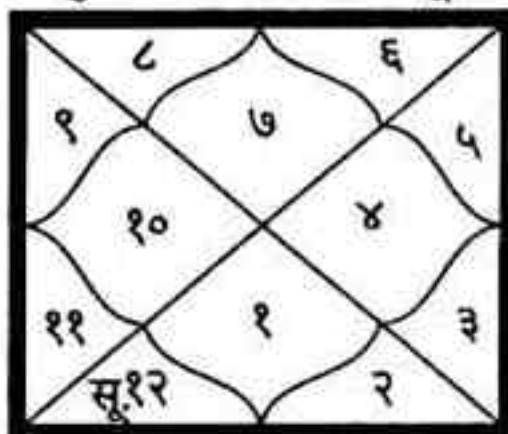
७७१

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'षष्ठभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
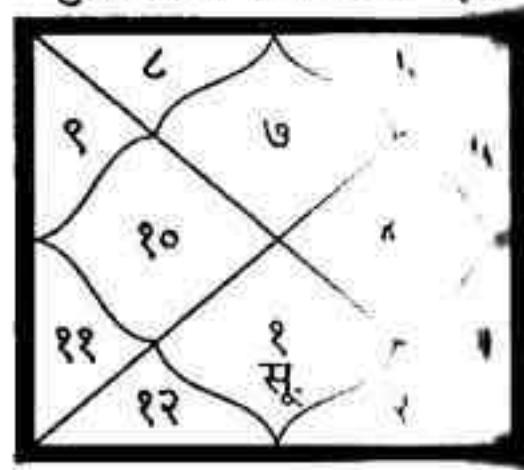
छठे रोग तथा शत्रु स्थान में अपने मित्र गुरु की मीन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को झगड़े-झंझट एवं शत्रु-पक्ष से लाभ होता है तथा शत्रुओं पर विजय मिलती है। कठिन परिश्रम के द्वारा उसकी आमदनी भी अच्छी रहती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की कन्या राशि में द्वादशभाव को देखता है, अत: खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ रहता है। ऐसा जातक बड़ा हिम्मती तथा बहादुर होता है।

तुला लग्नः षष्ठभावः सूर्य

७७२

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'सप्तमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

सातवें केंद्र, स्त्री तथा व्यवसाय के भवन में अपने मित्र मंगल की मेष राशि पर स्थित उच्च के सूर्य के प्रभाव से जातक को सुंदर स्त्री मिलती है, तथा स्त्री पक्ष एवं व्यवसाय के पक्ष से लाभ भी खूब होता है। वह अपने घर के भीतर सुख प्राप्त करता है तथा कभी-कभी उसे अत्यधिक लाभ भी होता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं नीचदृष्टि से शत्रु शुक्र की तुला राशि में प्रथमभाव को देखता है, अत: जातक के शारीरिक-सौंदर्य एवं स्वास्थ्य में दुर्बलता रहती है तथा मन में चिंताएं रहती हैं।
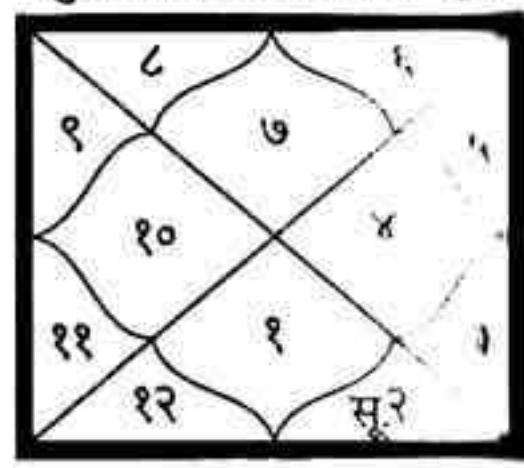
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'अष्टमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

आठवें आयु एवं पुरातत्त्व के स्थान में अपने शत्रु शुक्र की वृषभ राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक की आयु में वृद्धि होती है, परंतु पुरातत्त्व के लाभ में कमी आ जाती है। वह कठिन परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से लाभ उठाता है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की वृश्चिक राशि में द्वितीयभाव को देखता है, अत: जातक धन की वृद्धि के लिए प्रयत्नशील बना रहता है और उसे कौटुंबिक सुख की प्राप्ति होती रहती है।
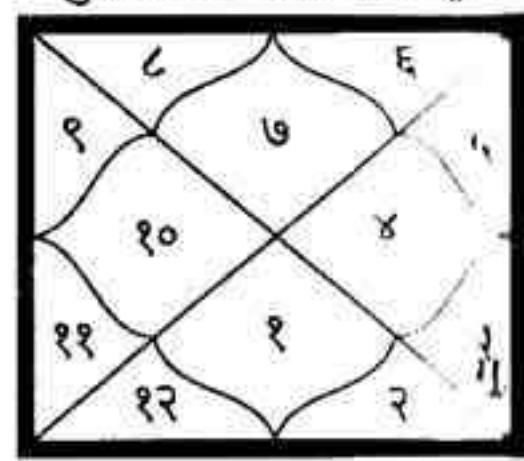
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'नवमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

नवें त्रिकोण, भाग्य तथा धर्म के स्थान में अपने मित्र बुध की मिथुन राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक के भाग्य में वृद्धि होती है और वह धर्म का भी यथाविधि पालन करता है। ऐसा व्यक्ति ईश्वर-भक्त, न्यायी तथा सौभाग्यवान होता है। उसे स्वयमेव धन, सुख तथा लाभ की प्राप्ति होती रहती है। यहां से सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की धनु राशि में तृतीयभाव को देखता है, अत: जातक को भाई-बहन का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'दशमभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: दशमभाव: सूर्य

७७६
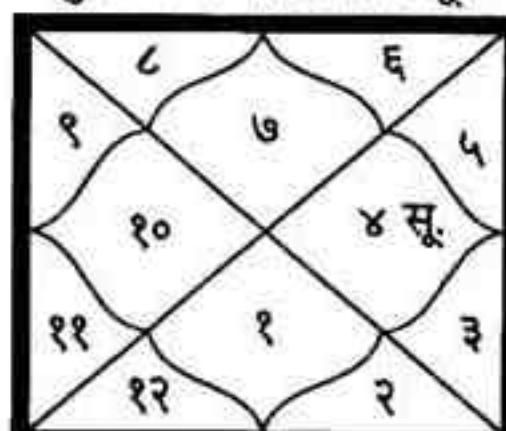
दसवें केंद्र, राज्य तथा पिता के स्थान में अपने मित्र चंद्रमा की कर्क राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक को पिता, राज्य एवं व्यवसाय के द्वारा सुख, सम्मान, सफलता, यश, शक्ति तथा लाभ की प्राप्ति होती है। वह प्रभावशाली कर्म करता है तथा अपनी आमदनी को बढ़ाता रहता है। यहां से सूर्य अपनी सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की मकर राशि में चतुर्थभाव को देखता है, फलत: जातक की माता, भूमि एवं मकान आदि के सुख में कुछ कमी बनी रहती है।
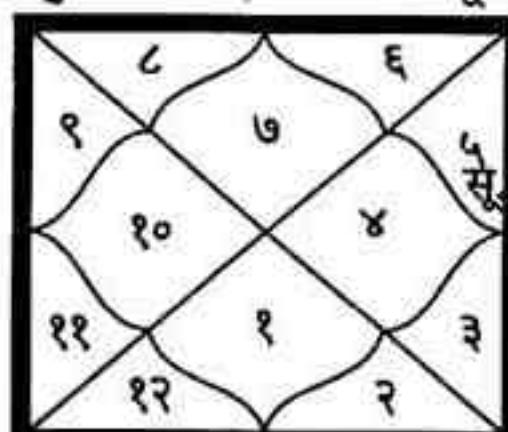
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'एकादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: एकादशभाव: सूर्य

७७७

ग्यारहवें लाभ स्थान में अपनी ही सिंह राशि पर स्थित स्वक्षेत्री सूर्य के प्रभाव से जातक की आमदनी में विशेष वृद्धि होती रहती है और उसका प्रभाव बढ़ता चला जाता है। यहां से सूर्य सातवीं शत्रुदृष्टि से शनि की कुंभ राशि में पंचमभाव को देखता है, अत: जातक को संतानपक्ष में कुछ असंतोष रहता है तथा विद्या-बुद्धि में भी कुछ कमी रहती है। ऐसे जातक की बोली में तेजी पाई जाती है।
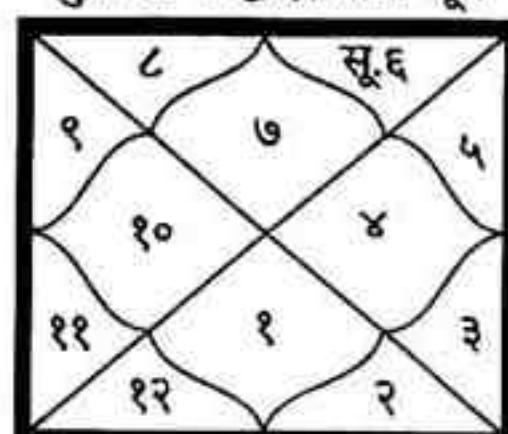
जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वादशभाव' में 'सूर्य' की स्थिति हो, उसे 'सूर्य' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तुला लग्न: द्वादशभाव: सूर्य

७७८

बारहवें व्यय स्थान में अपने मित्र बुध की कन्या राशि पर स्थित सूर्य के प्रभाव से जातक का खर्च अधिक रहता है तथा बाहरी स्थानों के संबंध से सुख, सफलता एवं लाभ की शक्ति प्राप्त होती है, परंतु लाभ चाहे जितना कर लिया जाय, वह सब खर्च हो जाता है। यहां सूर्य सातवीं मित्रदृष्टि से गुरु की मीन राशि में षष्ठभाव को देखता है, अत: जातक के शत्रु पक्ष से मैत्रीपूर्ण संबंध रहते हैं तथा झगड़ों के मार्ग से लाभ होता है एवं प्रभाव की वृद्धि होती है।

'तुला' लग्न में 'चंद्रमा' का फल

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'प्रथमभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः प्रथमभावः चंद्र

पहले केंद्र तथा शरीर स्थान में अपने मित्र शुक्र की तुला राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को शारीरिक-सौंदर्य, स्वास्थ्य एवं प्रभाव की प्राप्ति होती है। ऐसा व्यक्ति राजनीति के क्षेत्र में सम्मानित होता है तथा पितृपक्ष के सम्मान की वृद्धि करता है। यहां से चंद्रमा सातवीं मित्रदृष्टि से मंगल की मेष राशि में सप्तमभाव को देखता है, अत: जातक को सुंदर स्त्री मिलती है, व्यवसाय के क्षेत्र में लाभ होता है, भोगों की प्राप्ति होती है तथा सर्वत्र प्रभाव स्थापित होता है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'द्वितीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

तुला लग्नः द्वितीयभावः चंद्र

दूसरे धन-कुटुंब के स्थान में अपने मित्र मंगल की राशि पर स्थित नीच के चंद्रमा के प्रभाव से जातक की धन-संचय शक्ति में कमी आती है तथा कुटुंब का सुख भी प्राप्त नहीं होता। व्यवसाय एवं सुख के मार्ग में बाधाएं पड़ती हैं तथा धन-वृद्धि के लिए गुप्त युक्तियों का आश्रय लेना पड़ता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं उच्च तथा मित्रदृष्टि से शुक्र की वृषभ राशि में अष्टमभाव को देखता है, अत: जातक की आयु एवं पुरातत्त्व के लाभ की वृद्धि होती है।

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और जन्म-कुंडली के 'तृतीयभाव' में 'चंद्रमा' की स्थिति हो, उसे 'चंद्रमा' का फलादेश आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
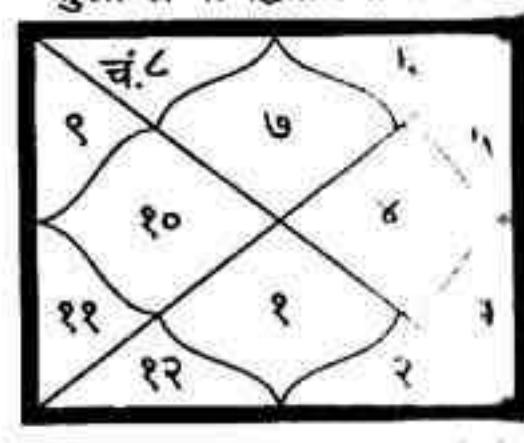
तीसरे भाई तथा पराक्रम के स्थान में अपने मित्र गुरु की धनु राशि पर स्थित चंद्रमा के प्रभाव से जातक को भाई-बहनों का सुख मिलता है तथा पराक्रम की वृद्धि होती है। उसे पिता एवं राज्य के क्षेत्र में भी सम्मान एवं सफलता प्राप्त होती है तथा पुरातत्त्व का लाभ भी होता है। यहां से चंद्रमा अपनी सातवीं मित्रदृष्टि से बुध की मिथुन राशि में नवमभाव को देखता है, अत: जातक के भाग्य की वृद्धि होती है तथा धर्म का पक्ष भी प्रबल होता है। ऐसा व्यक्ति बहुत हिम्मती होता है।

तुला लग्नः तृतीयभावः चंद्र

जिस जातक का जन्म 'तुला' लग्न में हुआ हो और